❀ ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) ❀

जन्मस्थान—यहाँ गोलोकबिहारी भगवान् श्रीकृष्ण का देवकी के गर्भ से चतुर्भुज स्वरूप में प्रादुर्भाव हुआ था तथा वसुदेव-देवकीजी दोनों कंस के द्वारा कारागृह में रुद्ध हुए थे। यह कारागार मथुरा की पश्चिमदिशा में डीगवाला अड्डा के पास पोतनाकुंड से उत्तर सीमा पर है, स्थान नबीन बना हुआ है, मन्दिर में देवकी-वसुदेव की मूर्त्ति मौजूद है। पण्डागण इसी स्थान को जन्मस्थान करके यात्रियों को दिखाते हैं। वर्त्तमान में जन्मस्थान का कोई चिन्ह नहीं है। श्रीकृष्ण का वास्तविक जन्मस्थान औरंगजेब बादशाह के द्वारा विध्वंसित कर दिया गया और उसके स्थान पर आज मस्जिद खड़ी है। यह लाल पत्थर की विशाल मस्जिद राजा वीरसिंह के बनाये जन्मस्थान के मन्दिर को नष्टभ्रष्ट करके बनाई गई है, मस्जिद के नीचे के भाग मन्दिर आकृति के हैं और ऊपर के गुम्मज मस्जिद के रूप में परिणत कर दिये गये हैं। मस्जिद के चारों ओर खुदाई करने से पता लगा है कि वहाँ प्राचीन समय में विशाल मन्दिर की खुदाई में निकली अनेक प्राचीन वस्तुयें मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित हैं। अब मस्जिद के ठीक पीछे जहाँ पुराने मन्दिर के खंड ही है—एक विशाल कृष्णमन्दिर बनने की योजना बिड़लाजी द्वारा स्थापित श्रीकृष्णजन्मभूमि ट्रष्ट के द्वारा चल रही है। जन्मभूमि का यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि के बहुत ही महत्वपूर्ण है, शास्त्रों में तो इस स्थान की महिमा और भी अधिक बताई गई है, यहाँ जप-उपवासादि की विधि है। स्कंदपुराण में कहा है—

"जपोपवासनियतो मथुरायां षडानन !।
जन्मस्थानं समासाद्य सर्व्वपापैः प्रमुच्यते ॥"

केशवदेवजी का मन्दिर—यहाँ केशवदेवजी का प्राचीन मन्दिर मौजूद है जिसमें भगवान् केशवदेवजी की मूर्त्ति विराजमान है। जन्मस्थान के पास ठीक पश्चिम दिशा में मल्लपुरा मुहल्ला में यह मन्दिर है। ब्रज में चार देवता हैं—मथुरा में केशवदेव, वृन्दावन में गोविन्ददेव, गोवर्द्धन में हरिदेव, दाऊजी में बलदेव हैं। ये चार देव वज्रनाभ के द्वारा संस्थापित हैं। केशवदेवजी की परिक्रमा की शास्त्र में विधि है, आदिवाराह में कहा है—

"प्रदक्षिणा कृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
प्रदक्षिण कृता येन मथुरायान्तु केशवे॥"

प्रेमावतार भगवान् गौराङ्ग महाप्रभु का यहाँ आगमन हुआ था तथा आप केशवदेवजी के समक्ष भावाविष्ट होकर विविध नृत्य-विनोद किये थे। जहाँगीर बादशाह के समय १६१० साल में ओड़छा के राजा वीरसिंहदेव ने ३३ लाख रुपया लगाकर आदि-केशव का मन्दिर बनाया था जोकि १६६९ साल में औरङ्गजेब के द्वारा ध्वंस होकर मस्जिद रूप में बन गया। वर्त्तमान जिस मन्दिर में आदिकेशव विराजमान हैं वह मन्दिर १८५० साल मे गबालियर कामदार के द्वारा निर्म्मित हुआ है। प्राचीन विग्रह अद्यापि राजधान ग्राम (जिला कानपुर में औरैय्या, इटावा से १७ मील) पर स्थित है। वहीं पास में २ मील पर बुधौली ग्राम में श्रीहरिदेव जी विराजते हैं। प्राचीन केशव-मन्दिर के स्थान को "केशव-कटरा" कहते हैं। जहाँ देवकी-वसुदेवजी की मूर्त्तियाँ हैं उस स्थान का नाम मल्लपुरा है।

"चतुरशीतिक्रोशत्वं मर्य्यादं रक्ष सर्वदा।
नमस्ते केशवायैव नमस्ते केशीनाशक ! ॥"

इस मन्त्र का ४ वार पाठ कर आदिकेशवजी का नमस्कार

करें। दीर्घविष्णु, पद्मनाभ, स्वयंभुवजी मथुरा में ये तीन देवता प्रसिद्ध हैं तथा दर्शनीय हैं। आदिवाराह में कहा है—

दीर्घविष्णुं समालोक्य पद्मनाभं स्वयम्भुवम् ।
मथुरायां सकृद्देवि ! सर्व्वाभीष्टमवाप्नुयात् ॥

ब्र०भ०वि०—अखण्डब्रजरक्षार्थे दीर्घमूर्त्तिधरो हरिः ।
सर्वदा वरदो नाथ नमस्ते दीर्घविष्णवे ॥

इस मन्त्र का १४ वार पाठ करके १४ नमस्कार करें ।

नमस्ते कमलाकान्त ! पद्मनाभ नमोऽस्तु ते ।
मथुरामण्डलं रक्ष प्रदक्षिणावरप्रद ! ॥

इस मन्त्र का ५ वार पाठ कर ५ नमस्कार करें ।

गोकर्णजी—सौरपुराण में कहा है—

ततो गोकर्णतीर्थाख्यं तीर्थं त्रिभुवनं श्रुतम् ।
विद्यते विश्वनाथस्य विष्णोरत्यन्तवल्लभम् ॥

कृष्णगङ्गा—आदिवाराह में कहा है—

पञ्च तीर्थाभिषेकाच्च यत्फलं लभते नरः ।
कृष्णगङ्गा दशगुणां दिशते तु दिने दिने ॥

वैकुण्ठतीर्थ—वैकुण्ठतीर्थे यः स्नाति मुच्यते सर्वपातकैः ।
सर्वपापविनिर्म्मुक्तो ब्रह्मलोकं स गच्छति ॥

असिकुण्ड—एका वराहसंज्ञा च तथा नारायणी परा ।
वामना च तृतीया वै चतुर्थी लाङ्गली शुभा ॥
एताश्चतस्रो यः पश्येत् स्नात्वा कुण्डेऽसिसंज्ञके ।
चतुः सागरपर्य्यन्ता क्रान्ता तेन धरा ध्रुवम् ॥
तीर्थानां माथुरानाञ्च सर्वेषां फलमश्नुते ॥

चतुः सामुद्रिकरूप—

चतुः सामुद्रिकं नाम कूपं लोकेषु विश्रुतम् ।
तत्र स्नातो नरो भद्रे ! विष्णुना सह मोदते ॥

विश्रान्तितीर्थ व विश्रान्तघाट—यह स्थान प्रसिद्ध है। इसका दर्शनादि से प्रचुर पुण्य मिलता है। श्रीकृष्णने कंस को मारकर यहाँ विश्राम किया था। आदिबाराह में कहा है कि सूर्य्योदय के समय विश्रान्तितीर्थ में, मध्याह्न के समय दीर्घविष्णु में तथा अपरान्ह के समय केशव भगवान् में विष्णुतेज मौजूद रहता है। आदिवाराह में कहा है—

विश्रान्तिसंज्ञकं दृष्ट्वा दीर्घविष्णुं च केशवम्।
सर्वेषां दर्शनं पुण्यमेभिर्दृष्टैः फलं लभेत् ॥
उदये मामकं तेजः सदा विश्रान्तिसंज्ञके।
मध्याह्ने मामकं तेजो दीर्घविष्णौ व्यवस्थितम्।
केशवे मामकं तेजो दिवाभागे चतुर्थके ॥

ब्र०भ० विलास में कहा है—

"तीर्थराज नमस्तुभ्यं देवानां हितकारिणे।
परस्परसुराधिष्ठविश्राम्त्यै वरदे नमः ॥"

इस मन्त्र का १०० बार पाठ करके भजन-नमस्कार के द्वारा स्नान करें।

गतश्रमदेव—विश्रान्तघाट पर यह स्वरूप विराजमान है। यहाँ विश्राम के पश्चात् श्रीकृष्ण का श्रम दूर हुआ था इसलिये इस स्थान का नाम गतश्रम है। आदिवाराह में इसका माहात्म्य इस प्रकार कहा है—

सर्व्वतीर्थेषु यत्स्नानं सर्व्वतीर्थेषु यत्फलम्।
तत्फलं लभते देवि! दृष्ट्वा देवं गतश्रमम् ॥
कालत्रयन्तु वसुधे! यः पश्यति गतश्रमम्।
कृत्वा प्रदक्षिणां भीरु विष्णुलोके महीयते ॥

अर्थात्—हे देवि! मनुष्य गतश्रमदेव का दर्शन कर समस्त तीर्थों का स्नान फल प्राप्त होता है। त्रिसन्ध्या दर्शन से तथा परि-

क्रमा से वह अवश्य विष्णुलोक में गमन कर पूजित होता है।

"वरदोऽसि महारम्यः नानाक्लेशनिवारकः।
गतश्रम महास्थान नमस्ते नारदार्चित ! ॥

इस मन्त्र का पाठ कर १० वार प्रणाम करें, और वहाँ आधा घड़ी ठहरे ।

एकानंशादेवी—यशोदा, देवकी तथा महाविद्येश्वरी, ये सब श्रीकृष्ण के परिवार हैं। इनके दर्शन से ब्रह्महत्यादिक समस्त पाप ध्वंस हो जाते हैं। आदिवाराह में कहा है—

एकानंशां ततो देवीं यशोदां देवकीं तथा।
महाविद्येश्वरीं दृष्ट्वा मुच्यते ब्रह्महत्यायाः ॥

महाविद्या-प्रार्थनामन्त्र—

महाविद्ये महाकालि ! देवानां हितकारिणि।
नमस्ते गोपरक्षायै गोपिकाकुलरक्षिणि ॥

इस मन्त्र का ८ वार पाठ करके ८ वार नमस्कार करें।

भूतेश्वरमहादेवजी—आप मथुराक्षेत्र के क्षेत्रपाल (रक्षक) रूप में विराजमान हैं। इनके दर्शन से मथुरादर्शन फल मिलता है। भगवान् ने आदिवाराह में कहा है—

मथुरायां च देव त्वं क्षेत्रपालो भविष्यसि।
त्वयि दृष्टे महादेव ! मम क्षेत्रफलं लभेत् ॥
दृष्ट्वा भूतपति देवं वरदं पापनाशनम्।
तेन दृष्टेन वसुधे ! माथुरं फलमाप्नुयात् ॥ इत्यादि

ब्र० भ० विलास में कहा है—

"भूतानां रक्षणार्थाय स्थापितो हरिणा स्वयम्।
सर्वदा वरदो नाथ भूतेशाय नमोऽस्तु ते ॥"

इस मन्त्र का ११ वार पाठ करके ११ नमस्कार करें।

मथुराजी में श्रीयमुना अर्द्धचन्द्राकार में बह रही हैं । बीच में विश्रान्तघाट मौजूद है । उसके दक्षिणभाग में क्रम से अविमुक्ततीर्थ, गुह्यतीथ, प्रयागतीर्थ, कनखल, तिन्दुक, सूर्य्यतीर्थ, वटस्वामीतीर्थ, ध्रुवतीर्थ, ऋषितीर्थ, मोक्षतीर्थ, कोटितीर्थ, बोधितीर्थ ये बारह घाट तथा उत्तरभाग में नवतीथ, संयमनतीर्थ, धारापतनतीर्थ, नागतीर्थ, घण्टाभरणकतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, सोमतीर्थ, सरस्वतिपातनतीर्थ, चक्रतीर्थ, दशाश्वमेधतीर्थ, विघ्नराजतीर्थ, कोटितीर्थ ये बारहघाट मौजूद हैं । उनका वर्णन करते हैं—

(१) **अविमुक्ततीर्थ**—आदिवाराह में कहा है कि—यहाँ स्नान करने पर अवश्य मुक्ति होती है तथा प्राणत्याग करने से मेरे लोक को प्राप्त हो जाता है ।

अविमुक्तेः नरः स्नातो मुक्तिं प्राप्नोत्यसंशयम् ।
तत्राथ मुञ्चीत प्राणान् मम लोकं स गच्छति ॥

(२) **गुह्यतीर्थ**—यहाँ स्नान करने पर संसार से मोक्ष तथा मेरा लोक का प्राप्त करता है । आदिवाराह में कहा है—

अस्ति चान्यतरं गुह्यं सर्व्वसंसारमोक्षणम् ।
तस्मिन्स्नातो नरो देवि ! मम लोके महीयते ॥

ब्र० भ० विलास में कहा है—

"पुण्यलक्षगुणंतीर्थं गुह्यतीर्थं नमोऽस्तु ते ।
सर्वार्थवरद श्रेष्ठ देवानां च फलप्रद" ॥

इस मन्त्र का यथा शक्ति पाठ कर नमस्कार करें ।

(३) **प्रयागतीर्थ**—यहाँ स्नान करने पर अग्निष्टोम फल मिलता है । आदिपुराण में कहा है—

प्रयागनामतीर्थं तु देवानामपि दुर्ल्लभम् ।
तस्मिन् स्नातो नरो देवि ! अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥

(४) कनखल—यह अति गुह्यतीर्थ है। यहाँ स्नान मात्र से मनुष्य स्वर्ग में रमण करता है। आदिवाराह में कहा है—

तथा कनखलं तीर्थं गुह्यं तीर्थं परं मम।
स्नानमात्रेण तत्रापि नाकपृष्ठे स मोदते॥

(५) तिन्दुक—यह भी गुह्यतीर्थ है। यहाँ स्नान करने पर भगवद्धाम को गमन करता है। आदिवाराह में कहा है—

अस्ति क्षेत्रं परं गुह्यं तिन्दुकं नाम कमतः।
तस्मिन् स्नातो नरो देवि! मम लोके महीयते॥

(६) सूर्य्यतीर्थ—यहाँ विरोचन बालने पहले सूर्य्य की आराधना की थी तथा रविवार, संक्रान्ति, चन्द्र किम्बा सूर्य्य का ग्रहण योग में स्नान करने पर राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। आदिवाराह में कहा है—

ततः परं सूर्य्यतीर्थं सर्व्वपापविमोचनम्।
विरोचनेन बलिना सूर्य्यस्त्वाराधितः पुरा॥
आदित्येऽहनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्य्ययोः।
तस्मिन् स्नातो नरो देवि! राजसूयफलं लभेत्॥

(७) वटस्वामीतीर्थ—यहाँ सूर्यनारायण विराजमान हैं। रविवार के दिवस स्नान करने पर मनुष्य आरोग्यवान् होकर परम ऐश्वर्य्य का लाभ करता है और अन्तकाल मे उसे परमा गती भी मिलती है। सौरपुराण में कहा है—

ततः परं वटस्वामी तीर्थानां तीर्थमुत्तमम्।
वटस्वामीति विख्यातो यत्र देवो दिवाकरः॥
तत्तीर्थं चैव यो भक्त्या रविवारे निषेवते।
प्राप्नोत्यारोग्यमैश्वर्य्यमन्ते च गतिमुत्तमाम्॥

(८) ध्रुवतीर्थ—यहाँ ध्रुवजी ने तपस्या की थी। यहाँ

स्नान करने पर मनुष्य ध्रुवलोक में पूजित होता है। यहाँ श्राद्धादि देने पर पितृगण प्रसन्न होते हैं। विशेष करके पितृपक्ष में यहाँ श्राद्धादि देने की विधि है। आदिवाराह में कहा है—

यत्र ध्रुवेन सन्तप्तमिच्छया परमं तपः।
तत्रैव स्नानमात्रेण ध्रुवलोके महीयते॥
ध्रुवतीर्थे च वसुधे! यः श्राद्धं कुरुते नरः।
पितॄन् सन्तारयेत् सर्व्वान् पितृपक्षे विशेषतः॥

स्कान्दे मथुराखण्डे—

गयायां पिण्डदानेन यत्फलं हि नृणां भवेत्।
तस्माच्छतगुणं तीर्थे पिण्डदानात् ध्रुवस्य च॥

(९) **ऋषितीर्थ**—यह ध्रुवतीर्थ के दक्षिण में है। यहाँ स्नान करने पर मनुष्य भगवान् के लोक को प्राप्त करता है। आदिवाराह में कहा है—

दक्षिणे ध्रुवतीर्थस्य ऋषितीर्थं प्रकीर्त्तितम्।
तत्र स्नातो नरो देवि! मम लोके महीयते॥

(१०) **मोक्षतीर्थ**—ऋषितीर्थ के दक्षिण में यह तीर्थ है। यहाँ स्नान करने पर मोक्ष होता है। स्कन्दपुराण के मथुराखण्ड में कहा है—

दक्षिणे ऋषितीर्थस्य मोक्षतीर्थं वसुन्धरे!।
स्नानमात्रेण वसुधे! मोक्षं प्राप्नोति मानवः॥

(११) **कोटितीर्थ**—यहाँ स्नान-दान करने पर मनुष्य भगवान् के लोक में पूजित होता है। यह देवताओं के भी दुर्लभ है। आदिवाराह में कहा है—

तत्रैव कोटितीर्थं तु देवानामपि दुर्ल्लभम्।
तत्र स्नानेन दानेन मम लोके महीयते॥

(१२) **बोधितीर्थ**—यहाँ पितृगणों को पिण्ड देने की विधि है। आदिवाराह में कहा है—

तत्रैव बोधितीर्थन्तु पितृणामपि दुर्ल्लभम् ।
पिण्डं दत्वा तु वसुधे ! पितृलोकं स गच्छति ॥

यहाँ रावण ने तपस्या की थी। इसका नामान्तर बुद्धतीर्थ है।

(१३) **नवतीर्थ**—असिकुण्ड के उत्तर में नवतीर्थ है। इससे बढ़ कर तीर्थ हुआ न होगा। आदिवाराह में कहा है—

उत्तरे त्वसिकुण्डाच्च तीर्थन्तु नवसंज्ञकम् ।
नवतीर्थात् परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति ॥

(१४) **संयमनतीर्थ**—यह तीर्थ त्रिलोक में प्रसिद्ध है। यहाँ स्नान करने पर मनुष्य भगवद्लोक को गमन करता है। आदिवाराह में कहा है—

ततः संयमनं नाम तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम् ।
तत्र स्नातो नरो देवि ! मम लोकं स गच्छति ॥

वर्त्तमान इसका नाम स्वामीघाट है। वसुदेव ने कारागार से मुक्त होकर यहाँ स्नान किया था।

(१५) **धारापतनतीर्थ**—यहाँ स्नान करने पर मनुष्य स्वर्ग में रमण करता है तथा प्राणत्याग करने पर भगवान् के लोक को गमन करता है। आदिवाराह में कहा है—

धारासम्पातने स्नात्वा नाकपृष्ठे स मोदते ।
अथात्र मुञ्चते प्राणान् मम लोकं स गच्छति ॥

(१६) **नागतीर्थ**—यह भी उत्तम से उत्तम तीर्थ है यहाँ स्नान करने पर मनुष्य स्वर्ग के लिये गमन करता है तथा मृत्यु से उसका पुनरागमन नहीं होता है। आदिवाराह में कहा है—

अतः परं नागतीर्थं तीर्थानामुत्तमोत्तमम् ।
यत्र स्नात्वा दिवं यान्ति ये मृतास्तेऽपुनर्भवाः ॥

(१७) **घण्टाभरणक**—यहाँ स्नान करने पर मनुष्य पापों से मुक्त होकर सूर्यलोक में गमन करता है। आदिवाराह में कहा है—

घण्टाभरणकं तीर्थं सर्व्वपापप्रमोचनम् ।
यस्मिन् स्नातो नरो देवि ! सूर्य्यलोके महीयते ॥

(१८) **ब्रह्मतीर्थ**—यहाँ स्नान करने पर मनुष्य ब्रह्माजी के द्वारा विष्णुलोक को प्राप्त करता है। आदिवाराह में कहा है—

तीर्थानामुत्तमं तीर्थं ब्रह्मलोकेऽतिविश्रुतम् ।
तत्र स्नात्वा च पीत्वा च नियतो नियतासनः ।
ब्रह्मणा समनुज्ञातो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

(१९) **सोमतीर्थ**—(गोघाट) यह अति पवित्र तीर्थ है। यहाँ अभिषेक करने पर समस्त कर्म्म सिद्ध प्राप्त होता है। आदिवाराह में कहा है—

सोमतीर्थं तु वसुधे ! पवित्रे यमुनाम्भसि ।
तत्राभिषेकं कुर्व्वीत सर्व्वकर्म्मप्रतिष्ठितः ॥
मोदते सोमलोके तु इदमेव न संशयः ॥

(२०) **सरस्वतिपतनतीर्थ**—यहाँ स्नान करने पर मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। यहाँ के संसर्ग में अवर्ण भी अर्थात् हीन जाति भी यति हो जाता है। आदिवाराह में कहा है—

सरस्वत्याश्च पतनं सर्व्वपापहरं शुभम् ।
तत्र स्नात्वा नरो देवि ! अवर्णोऽपि यतिर्भवेत् ॥

(२१) **चक्रतीर्थ**—यहाँ स्नानादि करने से मनुष्य ब्रह्महत्या से मुक्त होता है। आदिवाराह में कहा है—

चक्रतीर्थं तु विख्यातं माथुरे मम मण्डले ।

यस्तत्र कुरुते स्नानं त्रिरात्रोपोषितो नरः ।
स्नानमात्रेण मनुजो मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥

(२२) **दशाश्वमेधतीर्थ**—यहाँ ऋषियों ने प्रभु की पूजा की । यहाँ स्नानादि करने पर स्वर्ग मिलता है । आदिवाराह में कहा है—

दशाश्वमेधमृषिभिः पूजितं सर्व्वदा पुरा ।
तत्र ये स्नान्ति मनुजास्तेषां स्वर्गो न दुर्ल्लभः ॥

(२३) **विघ्नराजतीर्थ**—यह पापनाशक परम पवित्र तीर्थ है । यहाँ स्नान करने पर मनुष्य विघ्नराज से पीड़ित नहीं होता है ।

तीर्थं तु विघ्नराजस्य पुण्य पापहरं शुभम् ।
तत्र स्नातं तु मनुजं विघ्नराजो न पीडयेत् ॥

(२४) **कोटितीर्थ**—यहाँ स्नानादि करने पर मनुष्य कोटि गौदान का फल लाभ करता है । आदिवाराह में कहा है—

ततः परं कोटितीर्थं तीर्थानां परमं शुभम् ।
तत्रैव स्नानमात्रेण गवां कोटिफलं लभेत् ॥

इनके उपरान्त और भी असिकुण्डतीर्थ, श्रीवाराह भगवान्, नारायणी, लाङ्गली, वामना, चतुःसामुद्रिककूप, सुदाममालाकारगृह, रजकवधस्थान, ब्रज से श्रीकृष्ण के आगमन का पथ, धेनुकभंगस्थान, कुवलयापीड़वधस्थान, रङ्गस्थान, मल्लस्थल, कंसखालि, कुब्जामन्दिर, कुब्जाकूप, बलदेवकुंड, कृष्णकूप, प्राचीन वृक्ष ये सब तीर्थ दर्शनीय हैं ऐसा भक्तिरत्नाकर का कथन है । ब्रजभक्तिविलास नामक महान् ग्रन्थ में श्रीपाद नारायणभट्टजीने शास्त्रों का प्रमाण के द्वारा इस प्रकार मथुरा तीर्थों का क्रमबद्ध निर्णय दिया है—हनुमानजी, दीर्घकेशव, भूतेश्वर, पद्मनाभ, दीर्घविष्णु, वसुमती सरोवर की पाँच देवता, दुर्गसेनी नदी, सुवर्णचर्च्चिका, आयूवस्थान, अपराजितादेवी, कंस – वासन्तिकास्थान,

वास्तूकसरोवर, वधूटीगृहदेवी, दक्षिणकोटीश महादेव, उच्छवास-वत्सपुत्र, सूर्यस्थल, कार्त्तवीर्य्यनामक वीरस्थल, कुशस्थल, पुष्पस्थल, महत्स्थल, सिद्धिमुख नामक महादेव, शिवकुंड, हयमुक्तस्थान, वाजिशाला, सिन्दूरी तथा सिन्दूरा नामक लवणासुर की दोनों रानी, लवणगुहा, शत्रुघ्नस्वरूप, गुह्यतीर्थ, मरीचिकास्थान, मल्लिकावन, कदम्बखंड, मल्लादेवी, अस्पृशा सस्पृशा ये दो सरोवर, उल्लोलकुंड, चक्रिकेश्वरी, कसखात, भूतेश्वर, सेतुबन्ध, गानस्थल, वल्लभीमूर्त्ति, कुक्कुटस्थान, साम्भोच्छायमण्डल, बसुदेव तथा देवकी शयनस्थल, नारायणस्थान, सिद्धिविनायकगणेश, कुब्जा-स्थान, गर्त्तेश्वररुद्र, लोहजंघ ऋषि तपस्यास्थल, प्रभावल्ली, महा-विद्या, संकेतेश्वरी, महातीर्थसरोवर, गोकर्णऋषि, सरस्वतीजी, विघ्नराजगणेश, गार्गी तथा सार्गी नामक गोकर्ण ऋषि की दोनों पत्नी, महालयरुद्र, उत्तरकोटिगणेश, द्यूतस्थान, गार्गीनदी, रुद्रमहालय, विघ्नराजकुंड, चक्रतीर्थ, भद्रेश्वरशिव, सोमकुण्ड, सोमेश्वरमहादेव, सरस्वती-संगमस्थान, घण्टाभरणक, गण्ड-केशव, वैकुण्ठधाममन्दिर, खण्डवृषमूर्त्ति, मंडिकन्या-सरोवर, विमु-क्तेश्वर महादेव, क्षेत्रपालशिव, विश्रान्तिस्थान, गतश्रम, सुमगला-देवी, पिप्पलादेश्वरविष्णुस्वरूप, कर्कोटस्थल, सुखवासस्थल, पूतनापतनस्थान, अगोचरवन, वज्राननहनुमानजी, सम्बरणशिव, सूर्य, बालखिल्यऋषि, रामघाट, चीरघाट, गोपीघाट, सूर्यकुंड, ध्रुवतीर्थ, वृन्दावन के लिये जाने आने का मार्ग, गोपियों के द्वारा आनीत अन्न का स्थान, कुवलयापीड़स्थान, चाणूरमुष्टिकवध-स्थान, कंसशयनस्थल, उग्रसेनीकारागृह तथा उग्रसेनिराज्याभिषेक स्थल हैं।

मथुरा-परिक्रमा में वर्त्तमान के दर्शनीयस्थान—विश्रामघाट, पिप्पलेश्वर महादेव, वटुकभैरव, वेणीमाधव, रामेश्वर, बलभद्र,

मदनमोहन, तिन्दुकतीर्थ, सूर्यघाट, सूर्यदर्शन, ध्रुवघाट टीला के ऊपर ध्रुवजी, अटलगोपाल, ऋषितीर्थ तथा टीला के ऊपर सप्तर्षि, बलिटीला, बलिमहाराज. वामनदेव, कलियुगी टीला में महावीर, रंगभूमि में चाणूर-मुष्टिक-कुवलयापीड़ वध की मूर्त्तियाँ, रंगेश्वर महादेवजी हैं । उत्तर में कंसटीला, कस का अखाड़ा, कंसवध स्थल, उग्रसेन महाराज, शिवताल, कङ्कालीदेवी, उद्धवजी, गोपीका-स्थल, बलभद्रकुंड, बलदेव, नृसिंहदेव, बद्रीनाथ, भूतेश्वर-महादेवजी, पातालदेवी, पूतराकुंड, श्रीकेशवजी, जन्मभूमि, महाविद्यादेवी, (अम्बिकादेवी, मथुरा के उत्तरांश में अम्बिकाबन) सरस्वतीकुण्ड, सरस्वतीदेवी, चामुण्डादेवी, रजकवधटीला, गोकर्णमहादेव, गार्गी-शार्गी उनकी दोनों पत्नी, अम्बरीष टीला, चक्रतीर्थ, कृष्णगंगा, सोमतीर्थ, घण्टाभरण, धारापतन, वैकुण्ठघाट, बसुदेवघाट, वराहक्षेत्र, कर्कटिक नाग, महावीर, गणेश, नृसिंह, मणिकर्णिका, अविमुक्ततीर्थ तथा विश्रामघाट हैं।

मथुरा के चारों ओर चार शिव मन्दिर हैं । पश्चिम में भूतेश्वर, पूर्व्व में पिप्पलेश्वर, दक्षिण में रंगेश्वर तथा उत्तर में गोकर्णमहादेवजी हैं । गोवर्द्धन - दरवाजे अर्थात् डीग के अड्डा के पास आगे गोवर्द्धन के रास्ता में भूतेश्वर महादेवजी का दर्शन है। मन्दिरके वामपार्श्व गुफा में पातालदेवी विराजमान है। दोनोंका दर्शन-पूजन के उपरान्त वहाँ से ही वनयात्रा का प्रारम्भ करने की विधि है। यहाँ यात्रियों का पहला डेरा पड़ता है। भूतेश्वरमहादेवजी के पास कङ्काली टीले में कङ्कालीदेवी (कंसकाली) का मंदिर है। कङ्काली वह कही जाती है कि जिसे देवकी की कन्या समझ कर कंस ने मारने चाहा था परन्तु वह उसके हाथ से छूट कर आकाश में चली गई थी। इससे आगे बलभद्रकुण्ड है । बलभद्रकुण्ड मथुरा गोवर्द्धन का रास्ता में दक्षिण दिशा पर है । वहाँ

बलभद्रजी का तथा जगन्नाथजी का मन्दिर है। भूतेश्वर-महादेवजी के उत्तर में तथा केशवदेव व जन्मभूमि स्थान के दक्षिण की ओर पोतराकुण्ड है। यह बहुत विशाल तथा सुन्दर है। इसके भीतर बड़े बड़े दालान हैं जिनमें हजारों मनुष्य बैठ सकते हैं। इसके पास वर्त्तमान कृष्ण जन्मभूमि का मन्दिर है, जिसमें वर्त्तमान केशवदेवजी विराजमान हैं। प्राचीन कृष्ण-जन्मभूमि के स्थान पर औरंगजेब के द्वारा बनाया हुआ मस्जिद है। पास में एक मन्दिर में देवकी वसुदेव की मूर्त्तियाँ हैं। जिसे कारागृह भी कहते हैं। यहाँ एक पुराना गंगाजी का मन्दिर है। आगे यहाँ पर ज्ञानवापी अर्थात् ज्ञानवावड़ी है। इससे आगे मथुरा के पश्चिम में महाविद्यादेवी का मन्दिर है जो कि बहुत ऊँचे टीले पर है। वहाँ नीचे एक सुन्दरकुण्ड है जोकि इस समय जीर्ण अवस्था में है। वहाँ पशुपति महादेव का मन्दिर है। उसके नीचे सरस्वतीनाला है। उससे आगे चलकर सरस्वतीकुण्ड है वहाँ सरस्वती का मन्दिर है। मथुरा दिल्ली का रास्ता पर दक्षिण दिशा में मथुरा से कुछ दूर चलकर उससे आगे बढ़कर चामुण्डा का स्थान है, वहाँ चामुण्डादेवी का दर्शन है। महाविद्या के सामने पूर्व्व दिशा में मसानी तथा डीग दरवाजे का रास्ता पर कुब्जाकूप है। मसानी स्टेशन से रेल पटली होकर कुछ दूर चलने पर वाम भाग में अर्थात् पश्चिम दिशा में चामुण्डा का स्थान है। गणेशटीला के आगे चलकर यमुना के घाट उत्तरकोटितीर्थ है। यहाँ यमुना के चब्बीस घाटों से उत्तरमार्गीय द्वादश घाटान्तर्गत प्रथमतीर्थ है। यहाँ से उत्तरभागीय घाटों का प्रारम्भ है। इस समय यहाँ कुछ घाट तो लुप्त प्राय हैं और कुछ तो अन्य नाम से प्रसिद्ध हैं। गणेशटीला में गणेशतीर्थ है। यह जयसिंहपुरा ग्राम के पूर्व्व यमुना किनारे में हैं। माघकृष्णा चतुर्थी में यहाँ मेला होता है।

यहाँ गणेशजी का दर्शन है । गोकर्ण महादेवजी मथुरा-वृन्दावन की सड़क के पूर्व्व उत्तर कोने में यमुना किनारे में है । गोकर्ण-महादेवजी के मन्दिर में दीवाल के आरे में गोकर्ण ऋषि की गार्गी और शार्गी नामक दो पत्नियाँ हैं । पास में गोकर्ण ऋषि की समाधि है । गोकर्णमहादेवजी के सामने यमुना के घाट का नाम सेनापति घाट है । नीलकंठ महादेवजी तथा वामनदेवजी की बगीची के आगे सरस्वती-संगम है । कल्लूजी की धर्मशाला के पीछे यमुना के घाट दशाश्वमेध घाट है । वृन्दावन अड्डे से आगे चलकर सड़क के वामभाग में अम्बरीष टीला है । वृन्दावन-अड्डे के पास यमुना किनारे में चक्रतीर्थ है । कृष्णगंगा में कालिंजर महादेवजी, गङ्गाजी, दाऊजी महाराज का दर्शन है । गोघाट और कंसकिला के बीच घण्टाकर्ण तथा मुक्तितीर्थ है । कंसकिला और बसुदेवघाट (स्वामीघाट) के बीच में ब्रह्मघाट, बैकुंठघाट तथा धारापतन हैं । असिकुंड का नाम वर्त्तमान असकुंडा है । वहाँ असिकुंड है । द्वारकाधीश मन्दिर के पीछे माणिकचौक में वाराहजी का मन्दिर है । उसमें वाराहदेव का दर्शन है । जिन्होंने पृथ्वी का उद्धार किया था । असकुंडा घाट पर हनुमानजी, नृसिंहजी, गणेशजी तथा वाराहजी हैं । असकुंडा घाट तथा विश्रान्तघाट के बीच में मणिकर्णिकाघाट है । उसमें श्रीवल्लभाचार्य्यजी का बैठक है । विश्रामघाट के पास विश्रामबाजार के दक्षिण में गत-श्रमनारायण का मन्दिर है । विश्रामघाट में यमुनाजी और यम धर्म्मराज तथा कृष्ण-बलदेवजी का दर्शन है । कंसखार में वर्त्तमान शाग की मण्डी है और वहाँ सुखसंचारक घड़ी है । विश्राम-घाट से आगे चलकर यमुना किनारे में सती बुर्ज है । उसके पास दाहिने हाथ की गली में चच्चिकादेवी का दर्शन है । सतीबुर्ज से आगे चलकर पिप्पलेश्वर महादेवजी है । आगे भैरवनाथजी

का मन्दिर है। उसमें योगमाया और भैरवनाथजी का दर्शन है। प्रयागघाट में वेणीमाधवजी का मन्दिर है। श्यामघाट में श्यामजी का मन्दिर, दाऊजी, दोनों मदनमोहनजी, गोकुलनाथजी के मंदिर हैं। कनखलतीर्थ और तिन्दुकतीर्थ ये दोनों पुल के नीचे बङ्गाली-घाट में हैं। अवागढ़ महाराजा की धर्म्मशाला के पास यमुना-किनारे में सूर्यघाट है। वहाँ सूर्यनारायण का दर्शन है। आगे ध्रुवघाट है, उसमें ध्रुवटोला पर ध्रुवजी का दर्शन है। आगे ऋषिटोला है जिसमें सप्त ऋषियों का दर्शन है। रङ्गभूमि में रंगेश्वरमहादेव, कुवलयापोड़स्थान, धनुष-भंग-स्थान, चाणूरमुष्टिक-वधस्थान हैं। वहाँ कंसटीला है, जिसमें कंसवधस्थान है। रङ्ग-भूमि से पूर्व्व रेल के पुल के पास सप्त सामुद्रिक कूप है। जंकसन-वाली सड़क में रेल लाइन के नीचे शिवताल है वहाँ शिवजी का दर्शन है। वहाँ से मधुवन का रास्ता है।

नवीनमन्दिर—द्वारकाधीशजी का मन्दिर, ग्वालियर राज्य के खजांची सेठ गोकुलदास पारखजी का सं० १८७० बनवाया हुआ है तथा तृतीय पीठाधिपति कांकरोली के गोस्वामियों के सुपुर्द में है।

गोविन्ददेवजी का मन्दिर—यह रामगढ़निवासी सेठ गुरुसहाय-मलजी पोद्दार का बनवाया हुआ है। इसमें गोविन्दजी की मूर्त्ति बड़ी सुन्दर है।

किशोरीरमणजी—किशोरीलालजी डूमर का बनवाया हुआ यह मन्दिर है। इसमें सोने चाँदी का बना हुआ हिंडोला बहुत सुन्दर है।

गोवर्द्धननाथजी का मन्दिर—इसमें पत्थर का काम बहुत सुन्दर है। इसके अतिरिक्त उदयपुर वाली रानी का मदनमोहजी का मन्दिर, विहारीजी का मन्दिर, रामगढ़ के रहने वाले अनन्तराम

सेठ का बनवाया हुआ मदनमोहनजी का मन्दिर, उलाववाली रानी श्यामकुंवरि का बनवाया हुआ राधेश्यामजी का मन्दिर, पालीवाल बौहरों के बनवाये हुए मथुरानाथ, राधाकृष्ण, दाऊजी, विजय-गोविन्द, गोवर्द्धननाथ आदि के मन्दिर, रामजीद्वार में श्रीरामजी का मन्दिर, श्रीगोपालजी का अष्टभुजी मूर्ति, कोलमठ की गला में स्वामी कीलजी महाराज की गुफा, तुलसी चौतरा में तुलसीजी का थामला, श्रीनाथजी की बैठक, चौबच्चा में वीरभद्रेश्वरजी का मन्दिर, शत्रुघ्नजी का मन्दिर, गोपालजी का मन्दिर, होली दरवाजे पास कंसनिकन्दन का मन्दिर, आगे चलकर दाऊजी का मन्दिर, डोरी बाजार में गोपीनाथजी का मन्दिर, घीयामण्डी में सीतारामजी तथा जानकीजीवनजी का मन्दिर, सीतलापाइसा में मथुरादेवी और गजापाइसे में दाऊजी के चरण-चिन्ह, रामदास की मण्डी में मथुरानाथ भगवान् तथा मथुरानाथ महादेव के मन्दिर, बङ्गालीघाट पर श्रीवल्लभाचार्य-कुल के गोस्वामियों के बड़े मदनमोहनजी, छोटे मदनमोहनजी, दाऊजी, गोकुलेशजी, गऊघाट पर विष्णुस्वामि सम्प्रदाय की श्रीराधाविहारीजी का मन्दिर, वैरागपुरा में नारायणदासजी का अस्थान ये सब दर्शनीय हैं।

मधुवन—यह मथुरा के नैऋतकोण में अढ़ाई कोस दूर पर मौजूद है। इसका वर्त्तमान नाम महोली है। मधु नामक असुर को भगवान् ने यहाँ मारा था इसलिये इसका नाम मधुवन है।

मधोर्वनं प्रथमतो यत्र वै मथुरापुरी।
मधुदैत्यो हतो यत्र हरिणा विश्वमूर्त्तिना॥

यहाँ स्नान करने पर समस्त तीर्थों का फल मिलता है तथा भक्ति के साथ तपस्या-व्रतादि का आचरण विधि है। सब के हितार्थ श्रीकृष्ण-बलदेव ने यहाँ विविध प्रकार विलास किये हैं।

इस वन के अधिप श्रीमाधव हैं तथा "ओं ह्रां ह्रीं मधुवनाधिपतये माधवाय नमः स्वाहा" यह उनका मन्त्र है। ग्राम के पूर्व्व में ध्रुवटीला है जिसमें ध्रुवजी की मूर्त्ति मौजूद है। मधुवन में कृष्णकुंड, चतुर्भुजजी, कुमारकल्याण तथा ध्रुवजी का मन्दिर, लवणासुर की गुफा, श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक मौजूद हैं। यहाँ पर भाद्रबदी एकादशी को मेला होता है। मधुवन में श्रीबलदेव जी ने मधुपान करके मत्तता से नृत्य किया था तथा दोनों के गोचारण करने का स्थान है। ग्राम के नैऋतकोण में मधुकुंड है जिसके वर्त्तमान नाम कृष्णकुण्ड है। भाद्रमास कृष्णा एकादशी में वनपरिक्रमा प्रसंग में मधुवन की परिक्रमा है। डेढ़ कोस परिमाण से परिक्रमा विधि है॥

तालवन—यहाँ श्रीबलराम ने इस वन के रक्षक धेनुकासुर को मारा था तथा कृष्ण-बलदेव की सखाओं के साथ पौगण्ड वयस में ताल भक्षण लीला का स्थान है। इस वन के अधीश्वर दामोदरजी हैं तथा "ओं ह्रीं तालवनाधिपतये दामोदराय फट्" यह उनका मन्त्र है। यहाँ तालकुण्ड मौजूद है जो नीलकमलों से परिपूर्ण है। ब्रजभक्तिविलास में इसका नाम संकर्षणकुण्ड करके कहा गया है। "संकर्षणकृतार्थाय तीर्थराज नमोऽस्तु ते। क्षीरपूर्णाय रम्याय कलाकान्तसुखाय ते" इस मन्त्र का पाठ करके छै बार मज्जन-आचमन प्रणाम करने की विधि है। भाद्रमास कृष्णपक्ष एकादशी में यहाँ परिक्रमा होती है तथा पौने कोश परिमाण उसकी प्रदक्षिणा है। अब इस वन का नाम तारसी गाँव हो पड़ा है। यहाँ बलभद्रकुण्ड तथा बलदेवजी का मन्दिर है। वृन्दावन से दक्षिण छै कोस में तथा मथुरा से तीन कोस दक्षिण में और मधुवन से दो मील नैऋत कोण में यह तालवन है। ग्राम के पश्चिम में ही तालवनकुण्ड किसी-किसी के मत में बलभद्रकुण्ड

है। कुण्ड के पूर्व्वतीर में बलदेवजी का दर्शन है॥

कुमुदवन—यह भी सखाओं के साथ श्रीकृष्ण के विहार स्थान है, अब इसका आधुनिक नाम कुमुदवन व कुदर वन है। इस वन के अधीश्वर केशव भगवान् हैं तथा "ओं क्लैं कुमुदवनाधिपतये केशवाय फट्" यह उनका मन्त्र है। यहाँ कुमुदकुण्ड है जिसमें असंख्य कुमुद (कुमुदिनी) मौजूद हैं। ब्रजभक्तिविलास में इस कुंड का नाम पद्मकुण्ड करके कहा गया है। "इन्द्रादिदेवगन्धर्व्वै-रार्कीर्ण विमलार्थिने। पद्मकुण्डाय ते तुभ्यं नानासौख्यप्रदायिने" इस मन्त्र का पाठ कर सत्रह वार स्नान-आचमन-नमस्कार करने की विधि है। भाद्रमास कृष्णपक्ष एकादशी में यहाँ आधा कोस परिमाण से परिक्रमा है। तालवन के दो मील पश्चिम में यह कुमुदवन है। यहाँ कपिलदेवजी विराजमान हैं। अब इस वन के कुण्ड का नाम विहारकुण्ड हो गया है। लालकदम्ब के नीचे ठाकुरजी की बैठक, श्रीवल्लभाचार्य्यजी की बैठक, गुसाईंजी की बैठक हैं। वृन्दावन से दश कोस दूर पर नैऋतकोण में कुमुदवन है ऐसा वृन्दावनयात्रा परिक्रमा नामक ग्रन्थ में श्रीकृष्णदासजी ने कहा है। यहाँ से साँतोया (शान्तनुकुण्ड) होकर श्रीबहुलावन में यात्रा जाती है। कुमुदवन तथा शान्तनुकुण्ड के बीच में ओम्पार, मानाकोनग्रा तथा लगायो ये तीन ग्राम हैं। मथुरा के आस-पास वनयात्रा से अतिरिक्त दर्शनीय स्थान-अम्बिकावन, गणेशरा, दतिहा, आयोरे, गौराई, छटीकरा, गरुड़गोविन्द हैं।

अम्बिकावन—मथुरा के निकट पश्चिम दिशा में सरस्वतीनदी के तट पर यह स्थान मौजूद है। वहाँ अम्बिकादेवी तथा गोकर्ण-महादेवजी विराजमान हैं। प्रसंग—एक समय शिवरात्रि के दिवस देवयात्रा पर्व्व पड़ा था। ब्रज के समस्तजनों ने वहाँ आकर गोवर्द्धन-

पूजा की तरह बड़ा भारी उत्सव मनाया। सरस्वतीनदी में स्नान कर पशुपति महादेव की तथा अम्बिकादेवी का पूजनान्ते समस्त ब्रजवासी वहाँ रात्रिवास करने लगे। बड़ा भारी सर्प ने वहाँ आकर नंदमहाराज को ग्रास किया था। श्रीकृष्ण के चरणों का स्पर्श पाकर वह सर्प निज पूर्व्वरूप सुदर्शन विद्याधर स्वरूप का धारण कर विविध प्रकार से श्रीकृष्ण की स्तुति के द्वारा प्रसन्न कराकर परमगति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार ब्रजराज को मुक्त कराकर श्रीकृष्ण ब्रजजनों के साथ ब्रज में आये। यह वृत्तान्त भागवत में मौजूद है॥

दतिहा—(दतिया) यह मथुरा की पश्चिम दिशा में लगभग छै मील, शान्तनुकुण्ड से २ मील दूर पर है। यहाँ श्रीकृष्ण ने दन्तवक्र को मारा था। इसका प्रसंग पद्मपुराण में इस प्रकार है—जब नन्दादिक समस्त ब्रजवासी श्रीकृष्ण के साथ मिलने के लिये कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय पधारे तब श्रीकृष्ण ने "मैं शीघ्र ब्रज में आऊँगा" ऐसा वार-वार कहकर सबको बिदाय दिया। ब्रजवासीगण श्रीकृष्ण के आगमन की प्रतीक्षा में यहाँ ही यमुना के पास निवास करने लगे। उधर श्रीकृष्ण शिशुपाल को मारकर द्वारका से यहाँ आये तथा दन्तवक्र को मारकर यमुना का पार होकर सब से मिले। इसलिये बज्रनाभ ने इस स्थान का नाम दतिहा करके धरा। पद्मपुराण में दति उपवन करके इसकी प्रसिद्धि है। यहाँ से आगे गडु व खेड़िया गाँव आते हैं। दन्तवक्र का स्मारक चिन्ह दतिहा में रहा नहीं। परन्तु चारि भुजा वाले महादेव का वहाँ दर्शन है॥

आयोरे—श्रीकृष्ण को देखकर ब्रजवासियों ने प्रसन्नता के साथ "आयोरे"-"आयोरे" इस प्रकार वार-वार कहा था इसलिये इस

स्थान का नाम आयोर ऐसा रखा गया है। वर्त्तमान नाम आलीपुर है। इस ग्राम के एक मील पूर्व्व कृष्णपुर व गोपालपुर है ॥

गौरवाई—आधुनिक नाम गौराई है। जब कुरुक्षेत्रयात्रा से नंदादिक फिर कर आये तब यहाँ टाना नामक ग्राम के जमीदार ने इस बात को सुनकर बड़ा आदर के साथ उनसे मिला तथा अति गोरव के साथ उन्हें निवास कराया। इसलिये इस स्थान का नाम गौराई रखा गया। यह गोकुल के ईशान कोण में तीन मील दूर पर मौजूद है तथा खेड़ि कर के परिचित है। इसका प्रचलित नाम गरु है। लोहवन से इसका दूरत्व पाँच मील है तथा लोहवन के अग्निकोण में है॥

शट्टीकरा—वर्त्तमान नाम छटीकरा है तथा मथुरा के पश्चिम वायु कोण में दो कोस दूर पर मौजूद है। यहाँ नन्द महाराज ने ब्रजवासियों के साथ महावन छोड़कर सकटों (बैलगाड़ियों) से अर्द्धचन्द्राकार घिरकर निवास किया था। यह शकटारोहण स्थान है। श्रीकृष्ण ने सखायों के साथ शकटों में आरोहण कर विविध बाल्यलीलाएँ की थीं। वहाँ एक रात्रि वास तथा अभिषेक कराने की विधि है।

तत्राभिषेकं कुर्व्वीत एकरात्रोषितः नरः।
स तु विद्याधरं लोकं गतोऽन्तरमते सुखम्।

पास में गरुड़गोविन्द है जो कि परम मनोहर स्थान है। उसमें एक कुण्ड (गोविन्दकुंड) भी मौजूद है। यात्रीगण मथुरा में रह कर इस स्थान को देख जाते हैं। यहाँ श्रावण शुक्ला अष्टमी एवं चैत्र शु० ६ष्टमी दिवस मेला भी होता है। मथुरा के श्रीमन्तजन एकत्रित होकर कभी-कभी यहाँ ठाकुरजी का भोग धरते हैं। जिसको हंडा कहा करते हैं॥

गरुड़गोविन्द—एक दिवस श्रीकृष्ण रहस्य करते हुए श्रीदाम को गरुड़ बनाकर चतुर्भुज नारायण स्वरूप में उसके कन्धे पर चढ़े थे। "श्रीदाम्नि तार्क्षत्वं प्राप्ते सोऽपि तत्र चतुर्भुजः" ऐसा शास्त्र में कथन है। यहाँ गरुड़ और गोविन्द दोनों का विग्रह मौजूद है। अन्यप्रसंग– जब रामावतार में मेघनाद के द्वारा श्रीरामचन्द्र नागपाशबन्धन में आय गये थे तब उस समय गरुड़ ने आकर उनका मोचन किया था। अतः तब से गरुड़जी का रामचन्द्रजी की भगवत्ता में कुछ सन्देह रहा। पश्चात् ब्रज में श्रीकृष्ण के वैभव का दर्शन कर "यह प्रभु की माया थी, मेरा गौरव बढ़ाने के लिये ही मुझे स्मरण किया। नाग-पाश बन्धन तो एक छल था" ऐसा जानने लगा। उसने श्रीकृष्ण की स्तुति की तथा श्रीकृष्ण ने उसे आस्वासन देकर उसके कंधे पर आरोहण किया एव आज से हमारे नाम के पहले तुम्हारा नाम रहेगा ऐसा वर दिये। अतः गरुड़-गोविन्द करके दोनों प्रसिद्ध हुए।

गन्धेश्वरीतीर्थ—यहाँ श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ गन्धद्रव्यों का धारण किया था, यह बात दशम में प्रसिद्ध है। निकट में शान्तनु-कुण्ड है। गन्धेश्वरीतीर्थ का नाम गन्धर्वेश्वर भी है। वर्त्तमान इस स्थान का नाम गणेशरागाँव है। यहाँ गन्धर्व्वकुण्ड है। पास में पूतना का स्थान खेचरी गाँव है। उसमें भी एक कुण्ड है। यह स्थान मथुरा के पश्चिम एक कोस दूर पर तथा शान्तनुकुण्ड के एक मील ईशान कोणे में है। गन्धर्व्वकुण्ड का नामान्तर गन्धेश्वराकुण्ड है। गणेशरा में ब्रजविहारी का मन्दिर व दर्शन है।

शान्तनुकुण्ड—वर्त्तमान नाम सतोहा है तथा मथुरा से प्रायः डेढ़ कोस दूर पर मथुरा-गोवर्द्धन के सड़क में मौजूद है। यहाँ महा-

राज शान्तनु ने पुत्रकामना से सूर्य की आराधना की थी । इस स्थान में शान्तनुकुण्ड, गिरिधारीजी, बलदेवजी, तथा शान्तनु के मन्दिर हैं । गोसाईंजी की बैठक भी है । सन्तान कामना वाली स्त्रियाँ इस कुण्ड में स्नान करती हैं तथा बलदेवजी और शान्तनु महाराज के मन्दिर पीछे गोबर के सतिये (स्वस्तिक) रखते हैं । भादों सुदी छट्ठ को यहाँ बड़ा मेला होता है । मधुवन तथा सतोहा के मार्ग में गिरिधरपुर गाँव पड़ता है । उसमें चामुण्डादेवी का दर्शन है । शान्तनुकुण्ड के बीच में ऊँचे टीले पर शान्तनुविहारीजी का मन्दिर है ॥

बहुलावन—बहुलावन नामक श्रीहरि-पत्नि का विराजमान स्थान है । यह पद्मवन करके प्रसिद्ध है । यहाँ परममोहन कृष्णकुण्ड है जो कि सूर्य-किरणों से झलमल होता रहता है । कुण्ड के दक्षिण में जल के निकट बहुला गाभी मौजूद है ।

"बहुला श्रीहरेः पत्नी तत्र तिष्ठति सर्वदा ।"

इस वन के अधीश्वर पद्मनाभजी हैं । "ओं ह्रौं बहुलावनाधिपतये पद्मनाभाय स्वाहा" यह मन्त्र है ।

भाद्र कृष्णा द्वादशी में परिक्रमा विधि है । दो कोस परिमाण से परिक्रमा है । ग्राम के पूर्व्व में बलरामकुण्ड, दक्षिण में मानसरोवर (खाड़िया) मध्य भाग में लक्ष्मीनारायण का दर्शन है । यह ग्राम मथुरा से पश्चिम साढ़े तीन कोस और वृन्दावन से पश्चिम साढ़े तीन कोस दूर पर राधाकुंड-वृन्दाबन के मध्य में है । पास में संकर्षणकुण्ड तथा मानसरोवर है । मानसरोवर की कथा यह है कि—जो जैसा मन में करता हुआ उसमें स्नान करे ठीक उसी स्वरूप का धारण करता है । निजाभीष्ट स्वरूप का धारण कर मन के अनुसार श्रीकृष्णभजन में समर्थ होता है । चैत्रमास में

स्नान करने पर श्रीलक्ष्मी के साथ विष्णु की प्राप्ति होती है। श्रीगौरांगसुन्दर का यहाँ पर आगमन हुआ था। इस ग्राम का वर्त्तमान नाम बाटी है, यहाँ श्रीबल्लभाचार्य्यजी की बैठक भी है। इससे आगे सकना गाँव है, उसमें बलभद्रकुंड तथा गोरेदाऊजी का मन्दिर है। इससे आगे तोषगाँव है। उससे आगे विहारवन है. जिसमें विहारस्थान, कदम्बखंडी और चरणचिह्न हैं। पास में जखिन (यक्षहनूगाँव) गाँव है। जिसमें रोहिणीकुंड तथा बलदेवजी का मन्दिर है। पास में रार गाँव है। जिसमें बलभद्रकुंड, वलभद्रमन्दिर और कुछ हटकर कदम्बखण्डी है। रार के आगे जसोंदीगाँव है उसमें सूर्यकुंड है। दतिहा से पाँच मील पश्चिम तथा गोवर्द्धन से चार मील पूर्व्व में मथुरा गोवर्द्धन के रास्ता पर अड़ींग ग्राम है। यह बलदेवजी का स्थान है। ग्राम के उत्तर पश्चिम में किलोलकुंड है। कुंड के पूर्व्व तथा ग्राम के उत्तर में बलदेवजी का दर्शन है। बल्लभाचार्यजो के मत में यहाँ श्रीकृष्णने अड़कर गोपियों से दान लिया है। अड़ींग से दो मील अग्निकोण में माधुरीकुंड है। वाणीकार माधुरीदासजो का भजनस्थान तथा राधा की प्रियसखी माधुरीजी का स्थान है॥

मयूरग्राम—श्रीकृष्ण यहाँ प्रियागण के साथ मयूरों का नृत्य देख कर आनन्दित हुए तथा उनके बीच स्वयं नाचने लगे। यह बहुलावन से दो मील नैऋतकोण में है। बहुलावन तथा मयूरग्राम के बीच छाकनाग्राम है। मयूरगाँव का वर्त्तमान नाम मोरा है, यहाँ मयूरकुण्ड तथा छोटे महावीर का दर्शन है।

दछिनग्राम—यहाँ श्रीकृष्ण ने मनोहर विलास किया था। राधा की दक्षिणनायिका का भाव व्यक्त हुआ था इसलिये इस ग्राम का नाम दछिनग्राम पड़ गया है। यहाँ रोहिणीकुंड और बलदेवजी का

मन्दिर है। वर्त्तमान नाम जखिन है, यहाँ बल्लभद्रकुंड तथा रेणुक-कुंड भी दर्शनीय है। अड़ींग से अढ़ाई मील उत्तर कुछ पूर्व्व में है, यहाँ से तोष दो मील है।

बसति—गोकुल से आने का समय यहाँ वृषभानुराजा ने कुछ दिवस डेरा डार कर वास किया था इसलिये इस स्थान का नाम बसति है। छटीकरा से लेकर रावल पर्यन्त नन्दमहाराज का डेरा था। रावल नाम से अब उस स्थान का नाम राल है। अब इसका नाम बसोंती है। इसमें वसन्तकुण्ड, ललिताकुण्ड, राजकदम्बवृक्ष में मुकुट का चिह्न, बड़ का वृक्ष है। राधाकुण्ड के पूर्व्व २ मील दूर पर वृन्दावन जाने का कच्चे रास्ता में है॥

तोष—यहाँ राम-कृष्ण ने महान् तोष के साथ सखाओं को लेकर विलास किया था। अतएव इस स्थान का नाम तोष करके प्रसिद्ध हुआ है। यहाँ तोषकुण्ड भी है। यह ग्राम जखिन ग्राम के दो मील ईशानकोणे में है। यहाँ राधारमणजो का मन्दिर तथा गोपालजी का मन्दिर है॥

राधाकुण्ड, श्यामकुण्ड—यहाँ अरिष्टासुर को श्रीकृष्ण ने मारा इसलिये इस स्थान का नाम आरिट्ग्राम है। प्रसंग—वृषरूपधारी अरिष्टासुर का वध के दिवस रात्रिकाल में श्रीकृष्ण के साथ प्रियागण का मिलन हुआ। श्रीकृष्ण जब श्रीराधिका को आलिङ्गित करने के लिये भुजा पसारने लगे तब श्रीराधिका हास्य-परिहास्य छल से श्रीकृष्ण को रोकती हुई कहने लगीं। हे श्यामसुन्दर! तुमने आज साक्षात् एक वृष की हत्या की इससे तुम्हारा यह अङ्ग अपवित्र हो रहा है। अतः तुम मेरे पवित्र अङ्गों का स्वर्श मत करो। जब श्रीकृष्ण उस पातक के प्रायश्चित्त पूछने लगे तब श्रीराधिका ने कहा—यदि तुम पृथ्वी के समस्त तीर्थों में स्नान कर

सकते हो तब उसका प्रायश्चित्त हो सकता है तथा तुम परम निर्दोष होकर हमारे अङ्गों का स्पर्श में समर्थ हो सकते हो । उस समय "मैं अभी समस्त तीर्थों का यहाँ हो आह्वान कराकर उनमें स्नान करता हूँ" ऐसा कहकर श्रीकृष्ण ने अपने पदाघात से एक मनोहर कुण्ड निर्माण कर उसमें तीर्थों का आह्वान किया तथा उनके आदेशानुसार अनन्तकोटितीर्थ मूर्त्तिमान होकर प्रकट होने लगे। जिससे श्रीकृष्ण स्नान कर अपने को महान् धार्म्मिक रूप से परिचय दे गर्वायमान हुए । श्रीकृष्ण के गर्व्वप्रगल्भमय वाक्यों को सुनकर श्रीराधिकाजी ने सखियों के साथ अपने कंकण के द्वारा एक मनोहर कुण्ड का प्राकट्य किया । परन्तु उसमें एक बूँद भी जल नहीं उठा। अब श्रीराधिका सखियों के साथ गागर में भरभर कर मानसीगंगा से जल लाईं तथा निजकुण्ड में डारने लगीं। इतने पर भी आप असमर्था हुईं । आपको लज्जिता देखकर श्रीकृष्ण पहले की भाँति इशारा करने लगे। जिससे राधिका के कुण्ड में भी पूर्व्व की तरह तीर्थगण प्रकट होकर श्रीराधिका की स्तुति-वन्दना करने लगे। अर्द्धरात्र के समय दोनों कुण्ड का प्राकट्य हुआ था । कार्त्तिक बहुलाष्टमी के अर्द्धरात्र पर यह पर्व्वयोग माना जाता है। उसी दिवस यहाँ अर्द्धरात्र में स्नान की महान् विधि बतलाई गई है । पद्मपुराण के कार्त्तिकमाहात्म्य पातालखण्ड में कहा है—

"गोवर्द्धनगिरौ रम्ये राधाकुण्डं प्रियं हरेः ।
कार्त्तिके बहुलाष्टम्यां तत्र स्नात्वा हरेः प्रियः ॥
नरो भक्तो भवेद्विप्रास्तद्धि तस्य प्रतोषणम् ॥"

पद्मपुराण के मथुराखण्ड में कहा है—

दीपोत्सवे कार्त्तिके च राधाकुण्डे युधिष्ठिर ! ।
दृश्यते सकलं विश्वं भूत्यैर्विष्णुपरायणैः ॥

"हे युधिष्ठिर ! कार्तिक में अथ च दीपावली के दिवस राधाकुण्ड में विष्णुपरायण वैष्णवों के द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड दीखे जाते हैं।" फिर समय पाकर दोनों कुंड लुप्त हो गये थे । जब प्रेमावतार महाप्रभु गौरांगदेव का ब्रज में आगमन हुआ था तब आप ब्रज के अनेक स्थानों का भ्रमण करते हुए आरिट्ग्राम में आये । आपने लोगों से राधाकुंड-श्यामकुण्ड की वार्त्ता पूछी । उस समय राधाकुंड-श्यामकुंड धान्यक्षेत्र में परिणत हो गये थे अतः कोई कुछ नहीं कह सका । सर्व्वज्ञ प्रभु ने दोनों धान्यक्षेत्र से जल लेकर स्नान किया, वहाँ की मृत्तिका संग में ले ली तथा दोनों कुण्ड की स्तुति-वन्दना की । श्रीदास गोस्वामीजी के समय वहाँ छोटे-छोटे दो कुंड बन गये थे । श्रीदासगोस्वामीजी वहाँ एक पर्णकुटीर में रह कर भजन करते थे । पीछे उनकी इच्छा से बद्रिकाश्रम के तरफ किसी धनी के द्वारा दोनों कुंड वृहदाकार में बनाये दिये गये । महाप्रभुजी जहाँ बैठे थे वह स्थान तमालतला करके प्रसिद्ध है । आपने जिन दोनों धान्यक्षेत्र में स्नान किया था वे दोनों उस समय से "काली-गोरी" करके प्रसिद्ध हुए । अब ये दोनों श्यामकुंड-राधाकुंड नाम से जगप्रसिद्ध हैं । गोवर्द्धन पर्व्वत के ईशानकोण में मयूराकार उनके दो नेत्र की भाँति दोनों कुंड मौजूद हैं । राधाकुण्ड की उत्तरदिशा में चन्द्रकान्तमणि से विरचित षोडशदल कमलाकार अनङ्गमडप है । यह अनङ्गमञ्जरी का स्थान है, उसमें चन्द्रकान्तमणि के सेतु मौजूद है । कुंड के उत्तर सुवर्णमय अष्टदल कमलाकार ललितानन्दद नामक ललिता के कुञ्ज है । उसके वायुकोण में वसन्तसुखद कुञ्ज है । कुंड के ईशानकोण में मणिमय षोडशदल कमलाकार विशाखानन्दद नामक विशाखा के कुञ्ज है । कुण्ड की पूर्व्वदिशा में नाना चित्र विचित्र चित्रानन्दद नामक चित्रा के कुञ्ज है । अग्निकोण में हीरामय अष्टदलाकार

इन्दुलेखासुखदनामक इन्दुलेखा सखी का कुञ्ज है। दक्षिण में सुवर्ण-कमलाकार चम्पकलतासुखद नामक चम्पकलता का कुञ्ज है। नैऋत-कोण में नीलमणि कमलाकार रंगदेवीसुखद नामक रंगदेवी का कुञ्ज है। पश्चिमदिशा में लालमय मणि विरचित कमलाकार तुङ्गविद्या-सुखद नामक तुङ्गविद्यासखी का कुञ्ज है। वायुकोण में मरकत-मणि विरचित कमलाकार सुदेवीसुखद नामक सुदेवीजी का कुञ्ज है। श्यामकुंड के वायुकोण में मणिबद्ध घाट है जहाँ श्री-राधिका नित्य स्नान करती हैं। उसके उत्तर में सुबल आनन्दद कुञ्ज है। वहाँ राधाकृष्ण दोनों शयन करते हैं। कृष्णकुंड के उत्तर मे श्वेतमणिमय मधुमङ्गल-आनन्दद कुञ्ज है। वहाँ दोनों विविध हास्य परिहास्य करते हैं। ईशानकोण में अरुणमणिमय उज्ज्वल-आनन्दद नामक कुञ्ज है। पूर्व्वदिशा में नीलमणिमय अर्जुन आनन्दद नामक कुञ्ज है। अग्निकोण में चित्रविचित्रमणिमय गन्धर्व्वानन्दद नामक कुञ्ज है। दक्षिणदिशा में हरितमणिमय विदग्ध-आनन्दद नामक कुञ्ज है वहाँ दोनों चौपड़ खेलते हैं। नैऋतकोण में भृङ्ग-कोकिल आनन्दद कुञ्ज है। पश्चिम में विचित्र मणिमय दक्ष-सनन्द आनन्दद कुञ्ज है।

ब्रजभक्तिविलास में राधाकुण्ड का चिह्न इस प्रकार निर्देश किया गया है। आदिवाराह में—गोपिकाकुण्ड, अरिष्टवन, उसमें धेनुकासुरवधस्थान, उसके पास ललितामोहन नामक दो कुण्ड, अनन्तर दक्षिणपार्श्व में राधाकुण्ड-श्यामकुण्ड, उनके संगम पार्श्व में सखीमण्डल, ललिता के द्वारा ग्रन्थिबन्धन स्थल, कलाकेलिसखी-विवाहस्थल, उसके समीप राधावल्लभमूर्त्ति, वहाँ श्रीमदनगोपाल-मूर्त्ति हैं। वृषभानुनंदिनी के अधिकार में यह स्थान है। वाराह में दोनों कुण्ड का स्नान-प्रार्थनमन्त्र इस प्रकार है—"सर्व्वपापहर तीर्थ नमस्ते हरिमुक्तिद। नमः कैवल्यनाथाय राधाकृष्णाभिधा-

यिने"। इस मन्त्र का पाठ कर ६८ वार स्नान-मज्जन-नमस्कार की विधि है। वहाँ राधावल्लभ तथा मदनमोहनजी का दर्शन है-"राधावल्लभरूपाय पुत्रपौत्रप्रदाय च। नमस्ते केशवायैव सर्व्वपापप्रणाशिने" यह राधावल्लभ प्रार्थनमन्त्र है। इसका दशवार पाठ कर प्रणाम करने की विधि है। यहाँ श्रीहरि ने दशवर्ष स्वरूप में कलाकेलि के साथ विवाह किया था। 'देवाय वासुदेवाय धर्म्मकामार्थदायिने। नमस्ते मोहनायैव श्रीमद्गोपालरूपिणे" यह मदनगोपालप्रार्थनमंत्र है। इस मन्त्र का पाठ कर ग्यारह बार नमस्कार करने की विधि है। वर्त्तमान राधाकुण्ड के दर्शनीयस्थान-राधाकुंड के पश्चिम में झुलनतला, प्राचीनवटवृक्ष हैं। वटवृक्ष के पश्चिम नैऋतकोणे में राधाकृष्ण का प्राचीन मन्दिर में राधाकृष्ण विग्रह है। ऐसा प्रसिद्ध है कि श्रीदासगोस्वामीजी कुंड से प्राकट्य करा कर ब्रजबासियों को सेवा के लिये दिया था।

पश्चात् परिक्रमा की रास्ता में युवराजकुञ्ज, राधाकान्तजी, श्यामानन्द प्रभु के श्यामसुन्दर, श्रीजीवगोस्वामी प्रभु के राधादामोदर, जाह्नवाघाट हैं। जाह्नवाघाट में श्रीनित्यानन्दप्रभु की पत्नी श्रीजाह्नवामाता-ठाकुराणी का स्थान है। पास में रघुनाथदास गोस्वामीजी का वासस्थान व फुलसमाधी है। आगे श्रीगोविन्ददेवजी का मन्दिर है वहाँ गिरिराज की जिह्वारूपी सिला मौजूद है। आगे सरकारठाकुर का कुञ्ज, जगन्नाथमन्दिर, राधावल्लभजी, राधाविनोदजी, श्रीजीवगोस्वामी की बैठक, ललिताकुंड, ललितविहारी, मणिपुर का बड़ाकुञ्ज, गोपकूँआ, माधवेन्द्रपुरी के बैठने का स्थान, गयाघाट, अष्टसखीमंदिर, उसके ईशान में व्यासघेरा, सीतानाथमन्दिर के पश्चिम राधामाधवमन्दिर, उसके दक्षिण में बनखंडीमहादेव, श्रीसीतानाथ, तमालतला (यहाँ महाप्रभु ने बैठकर तिलक किया तथा राधाकुण्ड-श्यामकुण्ड का निर्द्देश दिया)

महाप्रभु का मन्दिर, श्रीवल्लभाचार्य्यजी की बैठक, मदनमोहनजी, गोपीनाथजी, रासवाडी, रासमंडल, नारायणभट्ट के द्वारा बनाया हुआ गुरु श्रीकृष्णदासब्रह्मचारीजी की समाधि, हनुमानजी, महादेवजी हैं। राधाकुण्ड के ईशानकोण में श्रीगोपालभट्टगोस्वामीजी का भजनकुटीर है, उसके पूर्व्व में श्रीभूगर्भगोस्वामी, रघुनाथदासगोस्वामी तथा कृष्णदासकविराजगोस्वामी इन तीनों की चिता-समाधि है। उसके पूर्व्वश्रीदासगोस्वामीजी का मनोहर भजनकुटीर; कविराजगोस्वामीजी का भजनकुटीर है। पास में गदाधरचैतन्य का मन्दिर है। श्यामकुण्ड के तट पर पञ्चपाण्डव तथा मानसपावनघाट है। उसके पश्चिम में विहारीजी का मन्दिर है। इनसे अतिरिक्त राधाकुण्ड में आचार्यप्रभु का कुञ्ज, श्रीराधादामोदरजी का मन्दिर भी है। श्रीकुण्ड के पूर्व्व में विराजमान प्रसिद्ध कदम्बखण्ड है, उसमें लगमोहनकुण्ड है। ग्राम के बाहिर परिक्रमा के मार्ग पर श्रीराजेन्द्रगोस्वामीजी की समाधि है। आपने कृष्णविरह में यहाँ प्राणत्याग किया था। दोनों कुंड के घाटों का नाम—श्रीजाह्नवाघाट, श्रीगोविन्दघाट, मानसपावनघाट, पञ्चपाण्डवघाट, मधुमङ्गलघाट, श्रीजीवगोस्वामीघाट, गयाघाट, तमालघाट, पाशाखेलाघाट, संगमघाट, झूलनवटघाट हैं। जाह्नवाघाट में—श्रीगोपीनाथजी, राधारानी तथा जाह्नवामाता का विग्रह है। गोविन्दघाट—गोपालभट्ट गोस्वामीपाद का भजनकुटीर तथा विहारीजी मन्दिर के बीच में है। मानसपावनघाट-यह श्रीराधा का अति प्रियघाट है। पञ्चपाण्डवघाट— यहाँ पांच वृक्ष पञ्चपाण्डवरूप में दासगोस्वामीजी को परिचय दिये थे। कविराजगोस्वामीजी का भजनकुटीर के पास एक छोहरा वृक्ष है जिसने अपने को काशीवासी ब्राह्मण करके विश्वनाथचक्रवर्त्तीजी को परिचय दिया था। मधुमङ्गलघाट में हरिवंशगोस्वामीजी का उपवेशन स्थान है। श्रीजीव-

गोस्वामीजी का घाट के पास श्रीजीवगोस्वामीजी की भजनकुटीर है। गयाघाट—इसके ऊपर श्रीहरिरामव्यासजी का घेरा तथा श्रीमाधवेन्द्रपुरी के बैठने का स्थान है। तमालतला में महाप्रभु के बैठने का स्थान है। पाशाखेलाघाट में वल्लभाचार्यजी की बैठक है। संगमघाट में दोनों कुण्ड में स्नान की विधि है। घाट के ऊपर तमालवृक्ष है जो कि अगस्त्य मुनि करके प्रसिद्ध है। झूलनवटघाट में गोपियों का महासमारोह के साथ झूला बना कर झूलने का स्थान है। यहाँ एक झूला पड़ा हुआ है जिसे मनिपुर राजा ने गौड़ीय महन्त तत्वावधान में बनवाया था तथा महन्त नरहरिदासजी ने चबूतरा का संस्कार किया और महन्त गोविन्ददासजी के समय में भी झूलनतला व वटतला का चबूतरा मरम्मत हुआ था। सिद्धबाबा की गुटिका में कहा गया—

"पूर्वे कदम्बवृक्ष द्वयेर मध्ये पश्चिमे बकुलद्वय, दक्षिणे चम्पकद्वय ओ उत्तरे आम्रद्वयेर मध्ये शाखा द्वये रत्नजड़ित हिन्दोला झुलितेछे" इत्यादि॥

राधाकुंड के एक मील पूर्व्व में लगमोहनकुंड है। उस कानन के बीच एक मृत्तिकास्तूप है, जिसमें तृणादि नहीं उत्पन्न होता है। ऐसा कहा जाता है कि श्रीराधिका उस स्तूप के ऊपर बैठी हुई थीं, उस समय शङ्खचूड़ दैत्य आकर उनको ले गया था। पश्चात् श्रीकृष्ण उस दैत्य को मारकर राधिका को छुड़ाय लाये। श्रीदासगोस्वामीजी पहले यहाँ ही वास करते थे। पश्चात् सनातनगोस्वामीजी के आदेश से राधाकुंड के तट पर जाकर वास करने लगे। ग्राम के पश्चिम भाग में शिवखोर नामक स्थान है। एक शृगाली ने यहाँ मरकर श्रीराधिका के सखीत्व प्राप्त की थी। अतएव अभी भी ग्रामवासीगण इस स्थान में दाहकार्य का सम्पन्न करते हैं। राधाकुंड में वर्ष में दो प्रधान उत्सव होते हैं। एक तो वैशाख शुक्ला नवमी-

तिथि में श्रीजाह्नवामाता का उत्सव दूसरा कार्त्तिक कृष्णा बहुलाष्टमी में राधाकुंडस्नान है। यह स्नान अर्द्धरात्रि में होता है। कुंड के तत्वावधान गौड़ीयसंप्रदाय के वैष्णवों के द्वारा होता है। दासगोस्वामी जी के समय से लेकर अब तक परम्परारूप में गौड़ीयविरक्तमहंत गद्दी पर नियुक्त होते हैं। वर्त्तमान * महन्तजो का नाम श्रीयुक्त गौराङ्गदासजी हैं। इनके पहले श्रीयुक्त नवद्वीपदासजी महन्त गद्दी पर विराजमान थे। राधाकुण्ड तथा ग्राम के उत्तर में भानुखोर, उसके उत्तर में बलरामकुंड, उसके दक्षिण में ललिताकुण्ड है। रासमण्डलः—

(१) राधाकुंड के दक्षिण में अतिप्राचीनबेदी रूप रासमंडल, (२) राधाकुण्ड के ईशान तथा गोविन्दमन्दिर के पीछे रासमंडल, (३) ग्राम के उत्तर तथा भानुखोर के दक्षिण में रासमंडल, (४) श्यामकुंड के उत्तर में तथा राधावल्लभघाट के उत्तर रासमण्डल, (५) नन्दिनीघेरा में रासमण्डल, (६) ललितविहारीजी मन्दिर में रासमण्डल है। महादेवः—(१) राधाकुण्डके नैऋतमें कुण्डेश्वरमहादेव, (२) ग्राम के पश्चिम तथा शिवखोर के उत्तर में महादेव, (३) राधारमणजी मन्दिर में एक महादेव, (४) श्यामकुण्ड के उत्तर तथा राधाविनोदघाट के ऊपर चतुर्थमलकेदेवजी,(५)श्यामकुण्ड के अग्निकोण तथा सीतानाथ के दक्षिण में बनखण्डी महादेव, (६) मलिहारकुंड में महिमेश्वर महादेवजी हैं। (७) वल्लभाचार्यजी की बैठक के पश्चिम भाग में एक महादेवजी भी हैं॥

माल्यहारिकुण्ड—यह राधाकुंड के पश्चिम में है। यहाँ माधवीकुञ्ज में बैठकर राधिकाजी ने मुक्तामाला का ग्रन्थन किया है। दासगोस्वामीजी ने मुक्ताचरित ग्रन्थ में इस लीला का सुन्दर चित्रण

---

* नोट—पुस्तक के प्रथम संस्करण समय सं० २०१५ में

किया । प्रसङ्ग—एक समय कार्त्तिक मास के दिवस गोवर्द्धन में दीपावली-महोत्सव पर ब्रजवासीगण विविध वेषभूषाओं का संस्कार में परम उत्सुक थे । गोपीगण भी अपने अपने घर से विविध वेष-भूषा लाकर गौओं का भूषणार्थ चेष्टिता रहीं । श्रीराधिका सखियों के साथ माल्यहारिकुंड के निकट माधवी चबूतरा में बैठ कर उत्तम मुक्ताओं को लाकर नाना प्रकार भूषण रचना में प्रवृत्ता हुईं । श्रीकृष्ण ने विचक्षण नामक कीर मुख से इस वृत्तान्त सुनकर वहाँ जाकर उनसे मुक्ताओं की प्रार्थना की । गोपियों ने गर्व्वायमान चित्त से देने का निषेध किया । श्रीकृष्ण कहने लगे यदि अधिक मुक्ता देने का निषेध करती हों, तब मेरी हंसिनाहरिणी नामक अति प्रिय धेनु युगल के भूषणार्थ कुछ मुक्ता का दान दीजिये । परन्तु गोपियों ने उसका भी निषेध कर दिया । ललिता मुक्ताओं को चलाकर कहने लगी हे कृष्ण ! तुम्हारी गौभूषणार्थ एक ही देने योग्य मुक्ता नहीं है । श्रीकृष्ण निराश होकर अपनी माता के निकट हठ करते हुए मुक्ताओं को अपने घर से लेकर यमुना के निकट जहाँ गोपियों का जलाहरण स्थान है वही घाट के पास सखाओं के द्वारा गर्त्त बनाकर रोपण करने लगे । चार ओर सुदृढ़ आड़ लगाकर "पीछे गोपियाँ नहीं देख सकेंगी" उस हेतु क्षेत्र को ढक दिये तथा समस्त ब्रज की गौओं का दुग्ध लाकर उसका सरस सिंचन करने लगे । दो चार दिवस के पश्चात् उसमें अंकुरावली उत्पन्न हुई । देखते देखते कुछ दिवस में क्रम से लता-पुष्प-मुक्ताफल पैदा होने लगे । सब कोई आश्चर्य हुए । श्रीकृष्ण ने सखाओं के द्वारा सींचनार्थ गोपियों से दूध माँगा था, परन्तु उन्होंने तिरस्कार के साथ उसका भी निषेध कर दिया । जब अत्यन्त अधिक से मुक्ता फलने लगी तब श्रीकृष्ण ने प्रसन्नता के साथ माता को लाकर दिखाया तथा माता के अंचले में बहुत से

मुक्ता बीनकर बाँध दिये । अब गौओं के भूषणार्थ हजारों माला बनने लगीं तथा गौएं मुक्तामाला से भूषित होकर इधर उधर डोलने लगीं। परन्तु यह बात गोपियो के लिये असह्य हुई । वे सब भी नाना प्रकार मन्त्रणा करती हुई अपने अपने घर से छिपाकर समस्त मुक्ताओं का निष्कासन कर उस प्रकार रोपने लगीं परन्तु दैव-इच्छा से मुक्तालता के स्थान पर हींसलता पैदा होने लगी । अब गोपियाँ घबड़ाय कर श्रीकृष्ण के पास गईं तथा कुछ मुक्ताओं की प्रार्थना करने लगीं। श्रीकृष्ण ने पहले तो अवहेला के साथ निषेध कर दिया परन्तु पश्चात् मुक्ता का बदल में उनसे अङ्ग-प्रत्यङ्ग का स्पर्श, आलिगन, चुम्बनादि रूप करार माँगा । इस प्रकार यह लीला हुई थी । अधिक रूप से जानने की इच्छा हो तो मुक्ता-चरित ग्रन्थ का अवलोकन करें। दासगोस्वामीजी ने अत्यंत सरसता के साथ इस लीला का उसमें वर्णन किया है ॥

मुखराई---राधाकुंड के दक्षिण में यह आधा कोस दूर पर है जो राधिका की मातामही बृद्धा मुखरा का वासस्थान है। यहाँ मुखरा-देवी कौतुकवश राधाकृष्ण दोनों को अलक्षित रूप से मिलाकर प्रसन्न होती थी। आप वृषभानुराजा की श्वाशुडी एवं कीर्तिका की माता हैं। सब कोई बड़ाई करके उनको कहते थे। पुत्रों के नाम कीर्तिचन्द्र आदि हैं। यहाँ मुखरादेवी का दर्शन, कृष्णकुंड, तथा वाद्यशोला हैं ॥

रत्नसिंहासन---गोवर्द्धन के ईशान कोणे में आधा कोस दूर पर कुसुमसरोवर के दक्षिण में है। यहाँ रत्नसिंहासन पर राधिकाजी बैठी थी। शिव-चतुर्दशी के उपरान्त होरी की पूर्णिमा के दिवस यहाँ सखियों के साथ दोनों होरी-रासादि विलास किये थे। कंस प्रेरित शङ्खचूड़ दैत्य ने आकर यहाँ राधिकाजी का हरण किया—

श्रीकृष्ण उसको मारकर राधिकाजी को छोड़वाये। यह लीला दशमस्कन्ध में वर्णन है । यह श्यामकुटी के समक्ष तथा गोवालपुखर के पास में है। यहाँ रासस्थली है। श्रीमहाप्रभु चैतन्यदेव गोवर्द्धन आकर यहाँ बैठे थे । गोवालपुखर में मधुमङ्गल आदि गोपबालकने गोपियों के सूर्यपूजार्थ नैवेद्य का लूट किया था । गोवालपुखरा के अग्निकोण में राधागोविन्द विलासस्थान युगलकुंड है। युगलकुंड के दक्षिण में कुछ पूर्व्व में किल्लोलकुंड है। कुंड के पार्श्ववर्ती स्थान को खेलनवन कहते हैं॥

कुसुमसरोवर—यह पुष्पवन व कुसुमवन करके प्रसिद्ध है । यहाँ कुसुमसरोवर है। गोवर्द्धन तथा राधाकुंड के मध्यभाग में यह मौजूद है। श्रीराधिका सखियों के साथ प्रियतम श्रीकृष्ण के लिये नित्य यहाँ पुष्प बीनने को आती थीं और श्रीकृष्ण भी सखाओं के साथ गोचारण करते हुए यहाँ नित्य आते थे तथा दोनों का दर्शन-मिलन होता था। पुष्पचयन लीला का यह स्थान है। गोविन्दलीलामृतादि ग्रन्थ में इस लीला का अद्भुत वर्णन है। कुसुमसरोवर चार ओर से वनशोभा में मण्डित तथा आनन्द उपभोग का स्थान है । वर्त्तमान प्राय जंगल सब कट गये हैं। भरतपुर के राजा जवाहरसिंह ने १७६७ साल में दिल्ली लूट कर उस धन से बड़े बड़े प्रस्थरों के द्वारा कुसुमखोर के सोपान (सीड़ियाँ) बनवाई थी। सरोवर के पश्चिम पार में सूरजमल की छत्री, दोनों पार्श्व में उनकी दोनों रानियों की छत्री, दोनों छत्री के दोनों पार्श्व में दाऊजी का मन्दिर है । उत्तर-पश्चिम कोणे में उद्धवकुंड, दक्षिण-पश्चिम कोणे में उद्धवजी की बैठक, पूर्व्व-दक्षिण कोणे में नारदकुंड, उत्तर में सड़क के पास गवालियरमंदिर है। सरोवर के दक्षिणपूर्व्व कोणे में एक प्रस्तर फलक गढ़ा हुआ है । उसमें १८६६ साल के अंग्रेज सरकार का हुकुम लिखा गया है कि ब्रज में तथा गोव-

र्द्धन के चार ओर जीवहिंसा करना निषेध है । कोई जीवहिंसा नहीं कर सकता है। यदि कोई करेगा तो दण्डनीय होगा । अकबर ने गोस्वामियों के भजन प्रभाव से प्रभावित होकर १०१८ हिजरी में एक फारमान के द्वारा ब्रज में जीवहिंसा करने का निषेध किया था। अँग्रेज सरकार ने उसकी रक्षा भी की थी ॥

नारदकुण्ड—यहाँ मुनीश्वर नारदजी ने तपस्या के द्वारा अपनी मनोकामना की पूर्त्ति की । पद्मपुराण में वृन्दावनमाहात्म्य पर वर्णन है कि—एक समय नारदजी वृन्दा के निकट आकर राधा-गोविन्द की अष्टकाल-दैनन्दिनी लीला का श्रवण के लिये प्रार्थना करने लगे। परन्तु "इसमें तुम्हारा अधिकार नहीं है क्यों कि बिना गोपीभाव से इनका श्रवण में अनधिकार चर्च्चा होता है । तुम गोपीभाव प्राप्ति के लिये कुसुमसरोवर में स्नान करके आ जाओ पश्चात् में लीला का श्रवण कराऊँगी" ऐसा वृन्दा ने कहा । नारदजी उसी समय कुसुमसरोवर में स्नान करके गोपीरूप होगये तथा उन्हें वृन्दा ने अष्टकाललीला सुनाई । पद्मपुराण के पातालखड वृन्दावनमाहात्म्य पर एक अध्यायरूप से यह लीला वर्णित है। इसीके आधार लेकर श्रीरूपगोस्वामीजी ने स्मरणमङ्गलस्तोत्र लिखा तथा कृष्णभावनामृत, गोविन्दलीलामृत, कृष्णाह्निककौमुदी आदि बड़े बड़े ग्रन्थ रचे गये । वृन्दावनलीलामृत ग्रन्थ का कथन है कि—रागमार्ग से गोपीभाव प्राप्ति के लिये श्रीनारदजी ने सदाशिव के निकट युगलमन्त्र का प्राप्त कर उनके आदेशानुसार यहाँ उस मन्त्र का अनुष्ठान किया था पश्चात् वृन्दादेवी के निकट लीला सुनने के लिये सौभाग्य मिला । यहाँ भगवान् नारदजी की मूर्त्ति की सेवा होती है ॥

पालेई— पालिता नामक यूथेश्वरी का वास स्थान है । नारदकुंड

के पूर्व्व आधा कोस दूर पर है ॥

यमुनावत—यहाँ श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ विलास किया था तथा यहाँ यमुनाजी का निकुञ्ज है। कुम्भनदासजी यहाँ पर निवास करते थे और उनके नाम से ही यहाँ पोखरा तथा खिड़क प्रसिद्ध है। गोवर्द्धन से लगभग डेढ़ मील पूर्व्व मथुरा रास्ता के पास में यह गाँव है। पहले यमुनाजी यहाँ बहती थी ऐसा कहावत है। अभी भी धरती खोदने पर यमुना की रेत निकलती है॥

इन्द्रध्वजवेदी—गोवर्द्धन की पूर्व्वदिशा में अवस्थित है। यहाँ नन्दराय ने इन्द्र की पूजा की थी। भाद्रमास इन्द्रद्वादशी में यह पूजा होती थी। पश्चात् श्रीकृष्ण ने इस पूजा के स्थान पर गोवर्द्धनपूजा का प्रवर्त्तन कराया। भागवत में यह पूजा प्रसिद्ध है। इन्द्रध्वजवेदी के वायुकोणे में ऋणमोचन तथा नैऋत में पापमोचन कुण्ड है॥

ऋणमोचन, पापमोचन—गोवर्द्धन के पूर्व्व-दक्षिणकोण मथुरामें जाने का अड्डे पर सड़क के बगल में ये दोनों मौजूद हैं। यहाँ स्नान करने पर मनुष्य ऋणरूप पाप से मुक्त हो जाता है। वर्त्तमान इन कुण्ड की अवस्था शोचनीय रूप में है। गोवर्द्धन से पूर्व्वदक्षिण कोणे में लगभग एक कोस दूर पर भवनपुरा है। यह गाँव भवानी (माया) जी का है। गोवर्द्धन से ठीक पूर्व्व डेढ़ कोस दूर पर मथुरारास्ता में अड़ींग है। नामान्तर अरिट्टगाँव है। वहाँ बलदेवजी का मन्दिर और बलभद्रकुण्ड है। यहाँ से लगभग डेढ़ कोस दूर पर पूर्व्व-दक्षिण कोणे में माधुरीकुण्ड है। वहाँ माधुरीमोहन का मन्दिर है। रूपगोस्वामीजी के शिष्य वाणीकार श्रीमाधुरीजी का भजनस्थान है, जिनकी वाणियाँ ब्रज में प्रसिद्ध हैं॥

पारासौली—गोवर्द्धनग्राम से देढ़ मील अग्निकोण में यह स्थान है। यहाँ बसन्त समय में रासक्रीड़ा होती थी। वहाँ एक मनोहर वटवृक्ष है। उसकी सुशीतल छाया में मणिबद्ध वेदी के ऊपर बैठकर श्रीराधिका के साथ श्रीकृष्ण मनोहर लीला-रहस्य करते हैं। यह परमरासस्थली है। यहाँ बैठकर साधन करने पर अवश्य राधाकृष्ण का दर्शन होता है। यहाँ रासचौतरा, चन्द्रविहारी का मन्दिर, श्रीवल्लभाचार्यजी--गोसाईं तथा गोकुलनाथजी की बैठक है। यहाँ दुबेलाकुण्ड और मोहकुण्ड है। श्रीनाथजी का जलघड़ा तथा इन्द्र के औंधे नगाड़े पड़े हैं। बहुत बड़े और भारी दुन्दुभी के आकार के दो पत्थर हैं जिनमें बजाने से नगाड़ों की सी आवाज निकलती है॥

चन्द्रसरोवर—यहाँ रासावेश में श्रीकृष्ण ने विश्राम किया था। रासलीला का दर्शन करके चन्द्रमा भी स्थगित हो गया था। पारसौली का वर्त्तमान नाम महम्मदपुरा है। ग्राम के नैऋतकोण में चन्द्रसरोवर है। सरोवर के नैऋतकोण में शिंगारमन्दिर तथा अग्निकोण में श्रीरासमण्डल है। पास में बलदेवमन्दिर, संकर्षणकुण्ड है॥

पैंठ—परासौली के दो मील दक्षिण में यह ग्राम है। बसन्तरास के समय जब श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान हो गये तब गोपियों ने राधिका को पश्चात् कर उन्हें ढूँढ़ा। ढूँढ़ते-ढूँड़ते श्रीकृष्ण अकस्मात् प्रत्यक्ष में आ गये। तब उनको उस समय चतुर्भुज स्वरूप का धारण करने पड़ा। जब श्रीराधिकाजी उनके आगे आने लगीं तब उनके समक्ष चतुर्भुज स्वरूप में रहने का समर्थवान् नहीं हुए अतः उनके आगे के दो हाथ संकुचित होकर शरीर में पैंठ अर्थात् प्रवेश करने लगे। इससे इस स्थान का नाम पैंठ हो गया। यहाँ चतुर्भुज स्वरूप का

दर्शन है। श्रीकृष्ण के पैंठने की गुफा है। नारायणसर, लक्ष्मीकूप, ऐंठाकदंब, क्षीरसागर तथा बलभद्रकुण्ड है। पास में बछड़ों के चराने का स्थान बछगाँव है। वहाँ कनकसागर, सहस्रकुण्ड, रामकुण्ड, अडवारोकुण्ड, रावरीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, माखनचोर-ठाकुर, वत्सविहारीठाकुर हैं। परासोली के नैऋतकोण में बलदेव-स्थान है। उसके अग्निकोण में बलदेवकुण्ड है जिसे संकर्षणकुंड भी कहा जाता है। उसके निकट चन्द्रसरोवर है। पहले इसका वर्णन हो गया है। उसके पास गन्धर्वकुण्ड है। यहाँ गन्धर्वगण ने श्रीकृष्ण का गुणगान में विह्वल होकर विविध स्तुति की थी। पैंठ के तीन मील दक्षिण में वत्सवन (वचगाम) है।

गौरीतीर्थ—यहाँ नीपवृक्ष तथा नीपकुण्ड मौजूद है। दोनों का अद्भुत विहारस्थान है। विदग्धमाधव-नाटक के प्रकरण में वर्णन है कि—चन्द्रावलीजी गौरीपूजा के छल से सखियों के साथ यहाँ श्रीकृष्ण से मिलती थीं। नामान्तर गौरीकुण्ड है आनोर के पूर्व अल्पव्यवधान में यह तीर्थ है॥

आन्यौर—जब नन्दादिक गोपों ने इन्द्र-पूजा की तब श्रीकृष्णने उस पूजा को रोककर गोवर्द्धनपूजा का प्रवर्त्तन कराया। ब्रज-वासियों ने श्रीकृष्ण का उपदेशानुशार इन्द्रपूजा के लिये संगृहीत उन द्रव्यों से गिरिराज की पूजा की। उस समय श्रीकृष्ण अन्य एक स्वरूप में प्रकट होकर समस्त भोग-सामग्री का भोजन कर "आनो और २" ऐसा बार-बार कहने लगे थे। इसलिये उसका नाम आन्यौर चल पड़ा है। यहाँ पास में गौरीकुण्ड है और दही-कटोरा, टोपी, मोजा आदिक विलक्षण चिह्न गिरिराज के ऊपर देखने में आते हैं। यहाँ संकर्षणकुण्ड तथा बलदेवजी का मन्दिर है। वाजनी शिला भी है जिसमें छड़ी या अंगुली लगाने से आवाज

होती है। आनोर गोवर्द्धनग्राम से दो मील दक्षिण परिक्रमा की रास्ता में है । ग्राम के पश्चिम गिरिराज के उस पार यतीपुरा व गोपालपुरा ग्राम है । गोविन्दकुण्ड के पश्चिम में श्रीगोवर्द्धन शीला के ऊपर श्रीकृष्ण के हस्ताक्षर तथा लठिया का चिन्ह है । पास में गोविन्द का शृङ्गारस्थान है, जहाँ इन्द्र ने उन्हें शृङ्गारित किया है। नैऋतकोण में आकाशगङ्गा नामक एक खाल (खात) है । उसके दक्षिण में स्वर्गटीला है। यतीपुरा से डेढ़ मील दूर पर विलछुकुण्ड है यहाँ से हरिदेवजी प्रगट हुए थे ॥

अन्नकूटस्थान—यहाँ अन्नों का कूट अर्थात् राशि पर्व्वताकार में रखा गया था । इसलिये इस स्थान का नाम अन्नकूट है । अन्नकूटग्राम के पास साधुपांडे के घर के पास गोवर्द्धनशीला में श्रीकृष्ण की दहीकटोरा तथा कमल का चिन्ह है । ग्राम के दक्षिण गिरिराज के निकट श्रीनाथजो के प्रकटस्थान है । गोविन्दकुण्ड के पूर्व्व में श्रीगोविन्दमन्दिर, दक्षिणतट में श्रीनाथजो मन्दिर तथा श्रीमाधवेन्द्रपुरीपाद के उपवेशन स्थान है ॥

गोविन्दकुण्ड—यहाँ इन्द्र ने अपराध भय से लज्जित होकर समस्त तीर्थजल तथा विविध द्रव्यों से सुरभी के द्वारा श्रीकृष्ण का अभिषेक करा कर गोविन्द नाम धरा था। इस इन्द्रतीर्थ के पास निविड़वन में गोपालजी गुप्त भाव में थे । पास में दाननिवर्त्तन कुण्ड भी है । यहाँ गुप्तरूप में दोनों की दानलीला हुई है । यहाँ एक वृक्ष के नीचे गोपालजी ने गोपबालकरूप से दुग्ध देने का छलकर माधवेन्द्रपुरीजी को दर्शन दिया था । पर्व्वत के ऊपर गोपालजो की स्थिति है—

गोविन्दस्नपनोद्भूत तीर्थराज नमोऽस्तु ते ।
अभिषेकजलैः रम्य ! कुंडगोविन्दसंज्ञक ! ॥

इस मन्त्र का १०० वार पाठ कर मज्जन-आचमन करें। माधवेन्द्रजी यती रहैं, अतः उनके नाम से यतीपुरा ग्राम बैठा है। अब यह वल्लभसम्प्रदाय का प्रधानकेन्द्र बन गया है।

प्रसंग—एक समय श्रीपादमाधवेन्द्रपुरी गोस्वामी भ्रमण करते हुए ब्रज में पधारे। वे श्रीमन् महाप्रभु गौरांगदेव के परमगुरु तथा ईश्वरपुरीजी के गुरुदेव थे। महाप्रभु ने जगत् में जिस भक्ति-कल्पवृक्ष का सर्व्वत्र फैलाया था उसके बीजस्वरूप व आदिअंकुर श्रीपादपुरीगोस्वामीजी रहे। महाप्रभु ने जिस प्रेम नाटक का खेल खेला है उसके आदिसूत्रधार माधवेन्द्रपुरीजी हैं। आपकी अयाचक वृत्ति थी अर्थात् किसी को कुछ नहीं मांगते थे। आप ब्रज में पधारकर वनोंका भ्रमण करते हुए गोवर्द्धन गोविन्दकुण्ड में आये। एक दिवस यहाँ एक वृक्ष के नीचे बैठकर भजन कर रहे थे, मध्याह्न का समय आ गया, परन्तु उनका कोई भ्रूक्षेप नहीं। कुछ समय अतीत हो जाने के पश्चात् एक गोप-बालक वहाँ आकर पुरीजी से कहा स्वामीजी ? आप भूखे हैं, आहार की चेष्टा क्यों नहीं करते हैं, लीजिये यह दूध है, माताजी जल लेने को आयी थीं आप को भूखा देख गईं। इस लिये मेरे हाथ में इस दुग्धपूर्ण बर्त्तन देकर आप को देने के लिये भेजा है। मेरा विलम्ब हो रहा है, अब मैं गोचारण के लिये जा रहा हूँ। जब फिर कर आऊँगा तब बर्त्तन ले जाऊँगा, आप दूध पीकर बर्त्तन को धोकर रख लेना। ऐसा कह कर बालक वन के लिये चल दिया। बालक का सौन्दर्य देख कर पुरी जी मुग्ध हो गये थे परन्तु कुछ कहा नहीं सकें। आप यथासमय भजन-नियम का समापन कर दुग्धपान करने लगे। दुग्ध की अपूर्व्व आस्वाद था। जिस से पुरीगोस्वामी आश्चर्य हुए तथा नाना प्रकार शोच विचार में मग्न हो गये। आपने बालक के आने का रास्ता देखा परन्तु वह बालक नहीं

आया । आप बालक के सौन्दर्य में मुग्ध होकर हृदय में नाना प्रकार परामर्श करने लगे । उनको कुछ तन्द्रासी आगई । आपदे देखा कि वह बालक पास में आकर कह रहा है गोसाँईजी ! मैं गोप-बालक रूप से दुग्ध लेकर तुम्हारे पास आया था । मैं ब्रज-राज-नन्दन गोवर्द्धन-नाथ गोपाल हूँ । म्लेच्छों के भय से सेवक-गण मुझे धरती में गाढ़ कर रख गये हैं । मैं वहुत दिवस से धरती में दवा हुआ हूँ । तुम ब्रजवासियों के द्वारा स्थान की सफाई करके धरती से निकालो तथा मेरी स्थापना करके सेवा करो । ऐसा कहकर आप स्थान का निर्देश करते हुए अन्तर्द्धान हो गये । पुरी जी उठकर ग्राम वासियों को बुलाकर यथा निर्दिष्ट स्थान पर गये । वहाँ के जंगल काट कर कुछ धरती खोदने पर उन्हें अकस्मात् गोपाल जी का दर्शन सौभाग्य मिला । आप बड़े प्रसन्नता के साथ अभिषेक कराकर कुटीर में श्रीगोपाल जी को विराजमान कराये तथा विविध भोग राग अर्पण के द्वारा सेवा करने लगे । बीच २ में अन्नकूटादिक महान् महोत्सव होने लगा । बड़े २ धनी आकर गोपालजी का दर्शन कर मुग्ध हो गये । किसी ने मन्दिर, किसी ने भोग-राग की व्यवस्था, किसी ने अन्नकूट आदि नाना प्रकार महोत्सव कराने लगे । आज यह श्रीगोपाल जी नाथ-द्वारा में विराजमान हैं । इस प्रकार कुछ दिवस सेवा करते हुए श्रीपाद पुरीगोस्वामी जी निज गौड़ीय दोनों शिष्यों के ऊपर सेवा का भार अर्पण कर श्रीनाथजी की आज्ञा के अनुसार मलय-चन्दन-कर्पूर लाने के लिये दक्षिण देश चल दिये । फिर उनका वृन्दावन नहीं आना हुआ । वे यती थे इसलिये उनके नाम से ग्राम का नाम यतीपुरा पड़ा । श्रीचैतन्यचरितामृत में पुरीगोस्वामी जी का चरित्र विस्तार रूप से वर्णन है ॥

पूछड़ि—गोवर्द्धन के दक्षिण में है । पूछडि का तात्पर्य—मयूरा-

कार गोवर्द्धन का पूच्छरेश है । सात कोस की परिक्रमा में यह स्थान आता है । यहाँ से पूर्व्वदिशा की परिक्रमा समाप्त होकर पश्चिम की तरफ परिक्रमा आ जाती है। ग्राम के उत्तर में अप्सरा तथा नवलकुण्ड है। कुण्ड के ईशान कोणे में टीला के ऊपर नृसिंह-देव का मन्दिर है। कुण्ड के उत्तर में तथा गोवर्द्धन के प्रान्तभाग में राघव-पंडितगोस्वामी की गोफा है । गोफा के समक्ष गोवर्द्धन के ऊपर श्रीकृष्ण के मुकुटचिन्ह है, कुण्ड के पास गंगाजी तथा नवल-बहिारी जी का मन्दिर है । कुण्ड के पश्चिम पूछडी लोंठा है। पूछडी लोंठा के एक मील पश्चिम में श्यामढ़ाक है ॥।

अप्सराकुण्ड— पूछडि में यह कुण्ड मौजूद है ॥

श्यामढ़ाक—पलाश (ढ़ाक) वृक्षों से यह स्थान परम मनोहर श्यामता को धारण कर रहा है । यहाँ गोमोतलाई, गोपसागर, श्यामढ़ाक ठाकुर जी का मन्दिर तथा जलघड़ा ये चार स्थान हैं । श्याम-तमाल के नीचे बैठक है और अनेक विचित्र चिन्ह हैं । यहाँ से आगे चरणघाटी है जहाँ ठाकुरजी, सुरभीगाय, ऐरावत-हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा के चरण चिह्न हैं । ढूका बलदेवजी का मन्दिर, (ढूक अर्थात् झुक कर गायों का देखना) हाथ को काला करने वाली काजली शिला है ॥

राघवपण्डित की गुफा—यह गोवर्द्धन की प्राचीन गुफा है । इसमें राधाकृष्ण नित्य विहार करते हैं । महाप्रभु के पार्षद श्री-राघवपंडित जी वहाँ रहते थे। उन्हीं के नाम से यह गुफा प्रसिद्ध हो गया है ॥

सुरभिकुण्ड—यहाँ गोवर्द्धन की पूजा हुई थी। इन्द्र के द्वारा श्री-कृष्ण का गोविन्दपद में अभिषेक के पश्चात् यहाँ सुरभी ने अपने दुग्ध के द्वारा उनका अभिषेक किया था ॥

ऐरावतपदचिह्न— इन्द्र ने यहाँ श्रीकृष्ण की अद्भुत करुणावातों को स्तुति के द्वारा वर्णन किया था। उस का ऐरावतहस्ति के पद-चिह्न पर्व्वत के ऊपर मौजूद है। सुरभीकुण्ड के उत्तर में यह ऐरावतकुण्ड है। यहां ऐरावत ने खड़ा होकर शुंड के द्वारा आकश-गंगा का जल लाया था। कुण्ड के तट में कदम्बखण्डी है॥

रुद्रकुण्ड—यहाँ महादेवजी श्रीकृष्ण के ध्यान में आकर मग्न हो गये थे। इसको कोई कोई रुदनकुण्ड भी कहा करते हैं। यहाँ बूढ़ेबाबू महादेवजी का मन्दिर, सूयकुण्ड, विलछूवन है। यहाँ श्रीकृष्ण की कन्दुकक्रीड़ा (गेंदबल्ली) का स्थल (चौगान) है। राधिकाजी की बैठक, जान अजान वृक्ष, पूजनी शिला आदि स्थान हैं। रुद्रकुण्ड का नामान्तर हरजिकुण्ड है। ऐरावतकुण्ड के वायु-कोण में यह कुण्ड है॥

विलासवदन—यह परम मनोहर स्थान है। जहाँ श्रीराधा, कृष्ण को देखकर प्रसन्न वदन हो गई थीं॥

कदम्बखण्डि—श्रीकृष्ण यहाँ विराजमान होकर राधिका-आग-मन का मार्ग देखते थे॥

दानघाटि—हरिदेवमन्दिर के नैऋत कोण में दानघाटि मार्ग है। यहाँ रसिकराज श्रीकृष्ण प्रियागण से दान माँगते थे। आपने यहाँ दानी बनकर उनके साथ विविध दानलीला की थी। कोई-कोई इस स्थान को रहस्यवेदी भी कहा करते हैं। दानकेलिकौमुदी तथा दानकेलिचिन्तामणि आदिक ग्रंथ मे दानलीला का सरस वर्णन किया गया है। श्रीमाधुरीकृत दानमाधुरी में भी इसका सरस वर्णन है॥

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्माजी ने श्रीकृष्ण की स्तुति की। श्रीकृष्ण प्रसन्न

होकर अपराध की क्षमा करने लगे। उससे यह कुण्ड उत्पन्न हुआ। इस कुण्ड के पूर्वपार्श्व में इन्द्रतीर्थ, दक्षिणपार्श्व में यमतीर्थ, पश्चिमपार्श्वमें वरुणतीर्थ, तथा उत्तरपार्श्वमें कुवेरतीर्थ मौजूद हैं॥

"ब्रह्मादिनिर्मितस्तीर्थ शुद्ध कृष्णाभिषेचन।
नमः कैवल्यनाथाय देवानां मुक्तिकारक!॥

इस मन्त्र का १० बार पाठ कर स्नान-आचमन-नमस्कार करें॥

मानसगंगा—इसमें श्रीकृष्ण ने प्रियागण के साथ नौकाविहारादि विविधलीला की। "गोपियों के वचन से श्रीकृष्णने वृषहत्या के पातकों से मुक्त होने के लिये इसे मानस से उत्पन्न किया है। इस का जल दुग्धमय है तथा पापों का नाश में परम समर्थ है" ऐसा ब्रजभक्तिविलास में कथन है। "गंगे दुग्धमये देवि! भगवन्मानसोद्भवे। नमः केवल्यरूपाढ्ये मुक्तिदे मुक्तिभागिनि!"॥ यह मानसीगंगा में स्नान-आचमन-नमस्कार करने का मन्त्र है। इस मंत्र का १०० वार पाठ कर स्नान-नमस्कारादि करने की विधि है। एक समय नन्दबाबा गोपों के साथ गङ्गास्नान करने के लिये जा रहे थे। श्रीकृष्ण ने "यहाँ ही गंगा है दूर में मत जाइये" ऐसा कह कर मना किया तथा सबके प्रत्यक्ष वहाँ ही गंगाजी को आविर्भूत करा कर आश्चर्यान्वित किया। सबने स्नान किया तथा रात्रि में दीपावली का दान किया। दिवाली के दिवस यह लीला हुई थी। अभी भी उस दिवस दीपावलीदान होता है। हजारों ब्रजवासी, दूरदेशी भक्त-समाज, बाहर की यात्रीजनता दर्शन करने को इकट्ठे होते हैं। दीपमालिका से मानसीगंगा के चारों ओर सजाया जाता है। यह दर्शनीय विषय है। मानसीगंगा के तटों को जयपुरराजा मानसिंह के पिता राजा भगवानदास ने प्रस्थरों के द्वारा बँधवाय दिया था॥

भगवान् हरिदेवनारायण का प्रणाममन्त्र—

"करोद्धृतनगेन्द्राय गोपानां रक्षकाय ते ।
सप्ताब्दरूपिणे तुभ्यं हरिदेवाय ते नमः ॥"

इस मन्त्र का ५ बार पाठ कर नमस्कार करें ।

मनसादेवी का प्रणाममन्त्र—

"मनसः कामदायैव मनसायै नमो नमः ।
नमः देव्यै महादेव्यै धन-धान्यफलप्रदे ॥"

इस मन्त्र का ९ बार पाठ कर प्रणाम करें ॥

गोवर्द्धन—मथुरा की पश्चिमदिशा में दो योजन दूर पर है । जिन्हें श्रीकृष्ण ने अपने वामहस्त के करतल में सप्ताह पर्यन्त धारण कर इन्द्र का गर्व्वनाश तथा ब्रज की रक्षा की । "गोवर्द्धन गिरे तुभ्यं गोपानां सर्वरक्षक ! नमस्ते देवरूपाय देवानां सुख-दायिने" यह पूजनपरिक्रमा मन्त्र है । इस मन्त्र का २००० बार जप करके चारिबार प्रदक्षिणा करनेपर अवश्य सर्वसिद्धि प्राप्त होती है ।

गोवर्द्धनप्राकट्यप्रसंग—श्रीरामचन्द्रजी की आज्ञा से हनुमानजी उत्तराचल से गोवर्द्धनजी को कन्धे पर रखकर ला रहे थे । उस समय दैववाणी हुई कि—समुद्र में सेतु बंध गया है । दैववाणी का श्रवण कर हनुमानजी कुछ विमर्ष होकर उन्हें यहाँ पृथ्वी में रख दिये । तब हरिभक्तश्रेष्ठ गिरिराज ने हनुमानजी से कहा—आपने भगवान् के चरणचिह्नों का स्पर्श से मुझे वञ्चित किया । अतः मैं आपको श्राप देऊँगा । हनुमानजी ने कहा— हे गिरिवर ! क्षमा कीजिये । जब इन्द्र देवताओं के साथ गोपों की पूजा ग्रहण करेगा उस समय भगवान् इन्द्रपूजा का खंडन कर आप ही की पूजा करवायेंगे , इससे इन्द्र कुपित होकर ब्रज में उत्पात करने लगेगा, उस समय आप ब्रजवासियों के रक्षक होंगे । द्वापर के अन्त में श्रीकृष्ण

का अवतार होगा । वे तुम्हारी इच्छा की पूर्त्ति करेंगे । ऐसा कह कर हनुमानजी आकाशमार्ग होकर रामजी के पास गये तथा समस्त वृत्तांत सुनाया। रामजी कहने लगे—अस्तु सेतुबन्ध के लिये लाए गये यह सब पर्व्वत मेरे चरणस्पर्श से विमुक्त हो गये। परन्तु गोवर्द्धन को अपने हस्तकमल तथा सर्वाङ्ग के स्पर्श द्वारा पवित्र करूँगा। मैं वसुदेव के कुल में जन्म लेकर ब्रज में विविध लीला विनोद करूँगा तथा गोवर्द्धन के ऊपर गोचारण, गोपियों के साथ अद्भुत विलासादि के द्वारा हरिदासश्रेष्ठ बना देऊँगा । ब्रज में मेरी लीला का परम सहायक रूप से गोवर्द्धन प्रसिद्ध होगा, ऐसा आदिवाराह में वर्णित है॥

गर्गसंहिता में ऐसा कथन है कि—एक समय पौलस्त्यऋषि भ्रमण करते हुए बिन्ध्याचल में गये तथा वहाँ बिन्ध्य के पुत्र, परमसुन्दर, श्याममय, अतिचिक्कण, नाना हरे हरे वृक्षलताओं से परिपूर्ण गोवर्धनजी को देखा। उनको लेकर अपने स्थान में स्थापन करने की प्रबल इच्छा हुई । क्यों कि काशी के निकट ऐसा कोई पर्व्वत नहीं रहा जिसमें कि आप शान्ति में बैठ कर भजन साधन कर सकें। आपने सत्य कराकर पिता बिन्ध्याचल से गोवर्धनजी को देने के लिये माँगा। पिताजी वाध्य होकर नहीं न कर सकें । उस समय गोवर्धनजी दुःखित होकर ऋषि से यह सर्त्त माँगने लगे कि मैं आपके हाथों में रह कर चलूँगा यह सत्य है, परन्तु आप कहीं पर मुझे नीचे नहीं रख सकेंगे । यदि किसी भी प्रकार नीचे धर देंगे तो मैं वहाँ ही रह जाऊँगा आगे तिल भर भी नहीं चलूँगा। ऋषिजी उस सर्त्त को मान गये तथा अपने हाथ में रख कर काशी के लिये चल दिये । आप मथुरा में पहुँचे । यहाँ तक तो गिरिराज हालका रहै परन्तु अब ऐसे महान् भारी हो गये कि ऋषिजी हाथ में धरने में असमर्थ होकर पृथ्वी पर रख दिये ।

जब सन्ध्या-वन्दन-स्नान-भोजन के उपरान्त सुस्थ होकर ऋषिजी गिरिराज को उठाने के लिये चेष्टाशील हुए तब गिरिराज ने जाने के अनंगीकार कर दिया । ऋषिजी बहुचेष्टा के उपरान्त क्रोधित होकर उन्हें श्राप देने लगे कि—तुम नित्य एक तिल के परिमाण घट जाओगे। अब गोवर्धनजी ऋषिश्राप को मस्तक पर कर लिये क्यों कि उन्हें मालूम था कि श्यामसुन्दर यहाँ प्रकट होने वाले हैं। जो ब्रज में प्रकट होकर मेरे तट में विविध लोलाविनोद करेंगे । जिससे मैं परमकृतार्थ हो जाऊँगा । श्रीगिरिराजजी ब्रज के देवता हैं। ब्रजवासिगण उन्हीं की पूजा करते हैं । पहले गिरिराजजी बड़े ऊँचे थे। अब धरती में अदृश्य हो रहे है। तीन योजन ऊँचाई का प्रमाण शास्त्र में मिलता है ॥

चक्रतीर्थ— (चकलेश्वर) यह स्थान राधाकृष्ण दोनों का दोला-विहार स्थान है । यहाँ चकलेश्वर महादेवजी विराजमान हैं और श्रीसनातन गोस्वामीजी को भजनकुटिया है। पास में उससे लगी हुई पूर्वदक्षिण कोणे में श्रीबल्लभाचार्यजी की बैठक मानी जाती है ।

"चक्रतीर्थ नमस्तुभ्यं कृष्णचक्रेण लांछितम् ।
सर्वपापच्छिदे तस्मै कृष्णनिर्मलनिर्मितम् ॥"

यह चक्रतीर्थ स्नानाचमन मन्त्र है। १० बार पाठ की विधि है।

"चक्रेश्वराय रुद्राय पंचास्य शिवमूर्त्तये ।
ब्रजमण्डलरक्षाय नमस्ते भवमूर्त्तये ॥"

इसका ११ वार पाठ करके महादेवजी का नमस्कार करें। महादेवजी ने श्रीपाद सनातनगोस्वामीजी को वास करने की आज्ञा दी थी । आप नित्य गिरिराज की परिक्रमा करते थे। वृद्धावस्था आने पर जब आप असमर्थ हुए तब गोपीनाथ ने गोपबालक रूप से दर्शन देकर चरणचिह्न से युक्त एक गिरिराजशिला प्रदान कर अपने

कोमल हस्तों से सनातन के घर्म्म जल पोंछते हुए आज्ञा दी कि तुम नित्य इस शिला की प्रदक्षिणा करो । तब से गोस्वामीजी उस शिला की प्रदक्षिणा करने लगे । यह शिला वर्त्तमान वृन्दावन राधादामोदर मन्दिर में मौजूद है । मानसीगंगा के ऊपर उत्तर-दिशा में चकलेश्वर तीर्थ है । यहाँ पहले मच्छरों का भारी उत्पात रहा । एक दिवस श्रीसनातनगोस्वामीजी उनसे उद्विग्न होकर कहीं अन्यत्र जाने का विचार करने लगे। चकलेश्वर महादेव ने विप्ररूप से "यहाँ अब मच्छरों का उत्पात नहीं रहेगा" ऐसा कह कर उनको जाने का निषेध किया । तब से चक्रेश्वर में मच्छरों का उत्पात नहीं है । दर्शनीयस्थान—श्रीमानसीगंगा की परिक्रमा में पहले हरिदेव मन्दिर है। यह अति प्राचीनतम मन्दिर है। द्वापर में स्वय राधिकाजी सखियों के साथ दर्शनार्थ यहाँ आती थीं ऐसा दानकेलिकौमुदी ग्रंथ में श्रीरूपपाद ने लिखा है । महाप्रभु ने गोवर्द्धन में आकर हरिदेवविग्रह का दर्शन किया था एवं प्रेमावेश में नृत्य भी किये । मर्म्मरप्रस्तर का मन्दिर मानसिंहमहाराज ने टोडरमल के द्वारा निर्म्माण करवाय दिया था । हरिदेवनारायण स्वरूप का दर्शन अति मनोहर है । हरिदेवमन्दिर के आगे पास में ब्रह्मकुण्ड है, यहाँ ब्रह्मकुण्ड के ऊपर मनसादेवीजी हैं। आगे दक्षिण में दानघाटी है। यहाँ राधिका के साथ श्रीकृष्ण ने दानलीला की है। श्रीरूपगोस्वामिने दानकेलिकौमुदीमें इस लीलाका सरसवर्णन किया है । मानसगंगा के उत्तर में चक्रेश्वर है । चकलेश्वर में हजारों गौड़ीय विरक्त वैष्णव वास करते रहते हैं । चकलेश्वर महादेवजी के सामने निताई गौरांग मन्दिर, श्रीसनातनगोस्वामीजी का भजन-कुटीर मौजूद हैं। आगे चलकर गंगा के किनारे में सिद्ध कृष्णदास बाबा का भजनकुटीर तथा महाप्रभुजी मन्दिर के पास पश्चिम मानसीगंगा के घाट के ऊपर सिद्धकृष्णदासकर्त्ता बाबा का भजन-

कुटीर तथा समाधि है । आपके पास लालाबाबू ने दीक्षा ग्रहण किया था । चक्रेश्वर के बाहर महाप्रभु का नूतन मन्दिर, श्यामसुन्दर मन्दिर, काशीमबाजारराजा का मन्दिर है । मानसीगगा के भीतर पूर्वदिशा में गिरिराजजी है उसमें मुकुट चिह्न है । गोवर्द्धनग्राम के एक मील पश्चिम में यावककुण्ड है । वर्त्तमान नाम मेहेन्दार कुण्ड है ॥

सोंकराई—यहाँ श्रीकृष्ण ने शपथ रख कर गोपियों से बार बार कहा था कि में राधिका के बिना अन्य कुछ नहीं जानता हूँ । गोपियों ने उन्हें शपथ खवाया था इस लिये इस स्थान का नाम सोंकराई हो पड़ा । यह स्थान गोवद्धन के पश्चिम एक कोस दूर पर है । यहाँ इन्द्र ने श्रीकृष्ण के लिये सुरभी का दान दिया था । वर्तमान नाम शकरवा है । सखीथरा से देढ़ मील उत्तर पश्चिम कोण में यह ग्राम है । यहाँ शक्रकुण्ड तथा ग्वालकुण्ड है तथा गिरधारी मन्दिर है ।

सखीस्थली—वर्तमान नाम सखीथरा है जो मानसीगंगा उत्तर में गोवर्द्धन के पश्चिम उत्तर कोणे में अनतिदूर में मौजूद है । यह गाँव चन्द्रावली सखी का रहने का स्थान है । इस कारण से सखीस्थली इस नाम के स्थान पर अब सखीथरा हो गया है । वन का नाम सखीवन है ॥

उद्धवकुण्ड व उद्धव बैठक—यहाँ उद्धव जो बैठ कर गोपियों को द्वारका की बातें सुनाते थे । कुसुमसरोवर के दक्षिण पश्चिम कोणे में उद्धवजी का बैठक तथा पश्चिम दिशा की परिक्रमा रास्ता में उद्धवकुण्ड है । उद्धवजी ने कुसुमसरोवर के पास लता रूप से जन्म लिया था यह स्कन्धपुराण के भागवतमाहात्म्य में वर्णित है । उद्धव बैठक में उद्धवजी का दर्शन है ॥

नीमगाँव—श्रीकृष्ण की गुरुस्थानीय गोपियों ने अत्यधिक स्नेह के वश में आकर प्राणों से अधिक प्रिय निज पुत्र से भी अधिक श्रीकृष्ण के चरण कमल धामों का निर्मञ्छन करा कर मुखारविन्द का चुम्बन किया था । निर्मञ्छन शब्द से इस स्थान का नाम नीमगाँव हो पड़ा । यह गाँव गोवर्द्धन-बरसाना के सड़क पर एक कोस दूर पर है तथा सखीथरा से डेढ़ मील उत्तर में है । यहाँ श्रीनिम्बाकाचार्य का भजन स्थान है तथा निम्बार्कसंप्रदाय का मन्दिर और एक कुण्ड भी है ॥

पाटलग्राम— नीमगाँव से दो मील उत्तर में है । यहाँ राधिकाजी सखियों के साथ पाटलपुष्पों का चयन करती थीं । इसलिये गाँव का नाम पाटल रखा गया है । वर्त्तमान नाम पाडर है । यहाँ बिहारीजी का मन्दिर और एक कुण्ड है । पास में एक मील दूर पर भगोसा है जिसमें कृष्णकुण्ड और गोपीनाथजी का दर्शन है ॥

डेरावलि—नन्दमहाराज ने नन्दग्राम जाने के समय छटीकरा से आकर यहाँ दूसरा डेरा डारा था । इसलिये इस गाँव का नाम डेरावलि है । गोवर्द्धनपूजा के समय नन्दमहाराज ने नन्दग्राम से आते हुए यहाँ डेरा भी डारा था । यहाँ से डेढ़ मील दूर पर पाली-ग्राम है ॥

नवाग्राम—वर्त्तमान नाम कुञ्जेरा है । यहाँ से श्रीराधाकुण्ड के कुञ्जों की सीमा आरम्भ होता है । कुञ्जसीमा से इस गाँव का नाम कुञ्जेरा है । यह स्थान राधाकुण्ड के दक्षिण-पश्चिम कोणे में एक कोस दूर पर है । इसमें दाऊजी का मन्दिर और सिद्धबाबा का स्थान है । यहाँ गोपियाँ मिल कर कुञ्जर अर्थात् हस्ती की भाँति बनी थीं, जिसमें श्रीकृष्ण ने आरोहण किया था । अतः गाँव का नाम कुञ्जेरा पड़ा है ॥

सूर्यकुण्ड— (छोटेभर्न्ना) राधाकुण्ड से लगभग दो कोस दूर पर उत्तर दिशा में है। यहाँ श्रीराधिका का छल करके सखियों के साथ नित्य आकर सूर्यनारायण की पूजा करती थी। इधर श्री-कृष्ण पुरोहित बन कर मधुमङ्गल के साथ वहाँ जाकर पूजाविधान करवाते थे। अपराह्न के समय यह लीला होती थी। बाद में यहाँ से दोनों अपने अपने घर के लिये चले जाते थे। यहाँ सूर्य भगवान् का विग्रह है। यहाँ से चार मील उत्तर में सहार तथा एक मील पश्चिम में पेरखु है। सहार के दो मील दक्षिण में बड़ेभर्न्ना गाँव है॥

क्योंनाई—(कोनाई) यहाँ श्रीकृष्ण श्रीराधिका के विरह में व्याकुल होकर सखियों से "क्यों नहीं आई राई" "क्यों नहीं आई" इन बातों को बार-बार पूछने लगे थे। अतः "क्यों नहीं आई" इस शब्द से क्योंनाई बन गया है। यह गाँव राधाकुंड से दो कोस दूर में उत्तरमें है। ढेढ़ मील पूर्व्व में भादार है यहाँ देवी का प्राचीनमन्दिर, ग्वालकुण्ड तथा गोकुण्ड है। जुल्हैदो से एक मील दूर पर है।

भदायर—वर्त्तमान नाम भदाहर है। भद्रा-यूथेश्वरी का स्थान है। पेरखु से दो मील अग्निकोण में है॥

मगहेरा—वर्त्तमान नाम मघेरा है। यहाँ श्रीकृष्ण-आगमन के लिये सब कोई मार्ग देखते थे। "मग हेरते थे" इसलिये इस गाँव का नाम मगहेरा हो पड़ा। यह गाँव राल से डेढ़ मील ईशान तथा बहुलावन से दो मील उत्तर में है। यहाँ कृष्णकुण्ड तथा ग्वालकुण्ड है। कृष्णकुण्ड में कृष्णमन्दिर एवं ग्वालकुण्ड पर राममन्दिर है॥

गाँठोली—यहाँ राधाकृष्ण दोनों होरी खेलते हुए सिंहासन पर बैठे थे तथा रासविलास से अत्यन्त उन्मत्त रहे। उस समय ललिताजी ने अलक्षित रूप से वस्त्राञ्चल के द्वारा गाँठ बाँध दिया था। जब दोनों उठने लगे तब देखे कि वस्त्रांचल का गाँठ पड़ा हुआ

है। उस समय सखीगण मुख ढकती हुई हास्य करने लगीं। दोनों अत्यन्त लज्जित हुए। इसलिये इस स्थान का नाम गाँठोली हुआ है। गोवद्धन से एक कोस दूर पर गोवर्द्धन-डीग के सड़क के पास यह गाँव मौजूद है। गोपालजी पर्व्वत के ऊपर से बीच-बीच में यहाँ आकर रहते थे। क्यों कि पर्व्वत के ऊपर उनका विराजमान में म्लेछों का भय कभी-कभी आय पड़ता था जिससे सेवकगण उन्हें छिपाकर यहाँ ले आते थे। जब गौरांगमहाप्रभु गोवर्द्धन में आये और उनकी गोपालजी देखने की इच्छा हुई उस समय गोपालजी म्लेच्छों के भय से गाँठोली में आकर तीन दिवस विराजमान हुए। महाप्रभुजी गोवद्धन के ऊपर नहीं चढ़ते थे। आप परिक्रमा देकर गाँठोली में आये तथा तीन दिवस रह कर श्रीगोपालवैभव का दर्शन करने लगे। इस प्रकार रूप-सनातन भी गोवद्धन के ऊपर चढ़कर गोपालदर्शन नहीं करते थे। अगत्या श्रीगोपालजी उनको दर्शन देने के लिए कभी किसी बहाना से अन्यत्र चले जाते थे। यहाँ गुलालकुण्ड, वल्लभाचार्य की बैठक, शय्यामन्दिर, टौक की घेना, वैज (विजयगाँव), बलभद्रकुण्ड, रेवतीकुण्ड हैं॥

गुलालकुण्ड—गाँठोली के पास सड़क के वाम पार्श्व में है। इस कुण्ड में वसन्त के समय सब कोई फागु का चिन्ह देखते हैं। होरी-खेला के उपरान्त कुण्ड में स्नान कर दोनों ने शरीर का गुलाल धोय थे। अतः गुलालकुण्ड नाम हुआ है। यह गाँठोली के अग्नि-कोणे में है। श्रीमन्महाप्रभु तथा बल्लभाचार्य जी के बैठने का स्थान है॥

वेहेज—गोवर्द्धन के पश्चिम तीन कोस दूर पर गोवर्द्धन-डीग की सड़क में है। यहाँ इन्द्र अपने को अत्यन्त हीन मान कर वेसरम हो सुरभी आगे रख श्रीकृष्ण के निकट आया था। अतः "वेसरम" से इस गाँव का नाम वेहेज हो पड़ा है। गाँव के पश्चिम में बलभद्र-

कुण्ड तथा दाऊजी का मन्दिर है । यहाँ से वायुकोण रास्ता में जाने पर देवशीर्ष, मुनिशीर्ष गाँव आते हैं । बेहेज से पश्चिम दो माईल दूर पर डोग है । सूर्यकुण्ड, रेवतीकुण्ड, विहारीजी का मन्दिर, शङ्करजी का मन्दिर, राधाकान्तजी का दर्शन है ॥

देवशीर्ष स्थान—यहाँ सखाओं के साथ श्रीकृष्ण गोचारण करते थे। देवताओं ने आकर विविध स्तुति-नति की थी। यहाँ एक कुण्ड भी मौजूद है। वर्त्तमान नाम द्योसेरस है । यह स्थान लठावन से उत्तर अढ़ाई कोस दूर पर है ॥

मुनिशीर्षस्थान—यहाँ एक मनोहरकुण्ड है । देवशीर्षस्थान के पश्चिम में है। यहाँ मुनियों ने तपस्या करके श्रीकृष्ण की प्राप्ति की। वर्त्तमान नाम मुड़सेरस है। यह गाँव लठावन से दो कोस दूर पर उत्तरदिशा में है । लठावन से उत्तर दो मील दूर पर इकलहरा गाँव है। वहाँ कुञ्जविहारीजी का दर्शन है और देवी का प्राचीन स्थान है। देवी का नाम चन्द्रावली करके प्रसिद्ध है । चैत्र शुक्ला सप्तमी में यहाँ देवीजी का मेला होता है ॥

सूर्यपतनवन—आज कल इसे "सामरीखेरा" कहते हैं जो बेहेज से तीन मील दूर पर है । रावण से भयभीत होकर सूर्यनारायण यहाँ आय कर रामजी के चरणों में गिर पड़े थे। यहाँ गोपालकुण्ड, गोपालमन्दिर, सूर्यकुण्ड, विहारीजी का मन्दिर, ग्वालकुण्ड हैं ॥

दीर्घपुर—(डोग) यहाँ भरतपुर महाराज के भवन, कृष्णकुण्ड, साक्षीगोपालजी का मन्दिर, लक्ष्मणजी का मन्दिर, रूपसागर, लालाजी का कुण्ड, गोवर्द्धननाथ मन्दिर हैं । यहाँ अब यात्रा पड़ती है ॥

परमादना—वर्त्तमान नाम परमदिरा है। प्रमोदना नाम से भी इसकी प्रसिद्धि है। यहाँ श्रीकृष्ण ने ब्रजगोपियों को प्रमोद दिया

था। परस्पर दर्शन से परस्पर प्रमोद प्राप्त हुए । इसलिये गाँव का नाम प्रमोदना हो पड़ा । गाँव के उत्तर दिशा में कृष्णकुण्ड और उसके उत्तर में श्रीदामाजी का मन्दिर है । गाँव के पूर्व में चरणकुण्ड है ॥

सेतुकन्दरा—आदिबद्रिनारायण का स्थान है । यहाँ श्रीकृष्ण ने नन्दादिक गोपों को लाकर नारायणस्वरूप का दर्शन कराया। सब की इच्छा बद्रिनारायण जाने की थी । परन्तु श्रीकृष्ण ने यहाँ ही उसका वैभव दिखलाया । बद्रिनारायण की भाँति यहाँ भी अलकानन्दा बहती है तथा उसी प्रकार उसी वैभव के साथ नारायणजी योगासन में बैठे हुए हैं । पास में आधा मील पश्चिम में सुशोभन गन्धशीला है। अब गाँव का नाम सेऊ है । नयनसरोवर, बड़े बद्री, व मानसरोवर आदि उत्तराखण्ड के स्थल हैं । यहाँ एक तप्त कुण्ड भी है । एक मन्दिर के बीच में नारायण तथा इधर-उधर चन्द्रकुवेर हैं। दूसरे मन्दिर में व्यास, नर और बद्रीनाथ हैं । मन्दिर के भीतर—(१) बदरीनारायणदेव हैं, उनके एक पार्श्व में कुवेर अपर पार्श्व में अन्नपूर्णाजी हैं, (२) बदरीनारायण के दक्षिण में ध्यानमग्नउद्धवजी, (३) योगारुढ़ बद्रीनाथजी, (४) चतुर्भुजनारायण, (५) श्रीगणेशजी, (६) उनके पास पार्व्वतीजी, (७) केदारनाथमहादेवजी हैं, आगे वृषभ विराजित है ॥

आदिबद्रिस्वरूपाय नारायण सुखात्मने ।
सदानन्दप्रदायैव सर्व्वबाधाप्रशान्तये ॥

इशका पाठ कर २० बार नमस्कार करें।

शाङराशिखर— यह पर्व्वत धवलवर्ण का है। यहाँ कदम्बखण्ड भी मौजूद है । राधाकृष्ण ने सखियों के साथ सुख में मग्न होकर विविध लीला की थी । श्रावण में हिंडोला रचना करा कर झूला

भी झूले थे। तेरह दिवस पर्यन्त यहाँ झूलन लीला हुई थी। पास में नालपर्व्वत और आनन्दाद्रि (घाटी) है। खोह से आगे ये सब स्थान हैं। पहाड़ में स्थान-स्थान पर किस स्थान से कौन स्थान कितनी दूर है यह खुदा हुआ मिलता है। यह गौड़ीय-गोस्वामियों के अथक परिश्रम की सूचना है॥

इन्दरोलि--यहाँ इन्द्र ने श्रीकृष्ण के ध्यान में मग्न होकर परम सुख को प्राप्त किया था। अब इसका नाम इन्दरोलि हो पड़ा। इसमें इन्दुलेखा का निकुञ्ज, इन्द्रकूप, इन्द्रकुण्ड हैं। यह गाँव इन्दुलेखाजी का है॥

गोदृष्टिवन--आज कल उसे गुहाना कहते हैं। यह परमदरा से १ मील है। यहाँ गोचारण स्थान है। ऊंचे टीले पर खड़े होकर गायों पर दृष्टि डालते थे। यहाँ श्यामकुण्ड तथा गोपालकुण्ड है॥

सेऊ--गुहाना से २ मील है। यहाँ नयनसरोवर है जो कि विशाल एवं सुन्दर है।

कनोवारो--कण्वमुनि का तपस्या स्थान है। वर्त्तमान इसका नाम कनवारो है। यहाँ कर्णकुण्ड, सुनहरा की कदम्बखण्डी, पनिहारोकुण्ड, कृष्णकुण्ड, ठाकुरजी की बैठक, काकाबल्लभजी की बैठक हैं। बद्रीनारायणदर्शन करके कोई कोई काम्यवन जाते हैं। रास्ता में सेउकन्दरा (सेउ), घाटि तथा इन्दरोलीगाँव पड़ते हैं। बदरीनारायण के डेढ़ मील उत्तर में सेउ है। उसके एक मील वायुकोण में घाटि है। उससे चार मील वायुकोण में इन्दरोलि, इन्दरोलि के वायुकोण में दो मील दूर काम्यवन है। जो बदरीनारायण दर्शन करके श्रीआदिबद्रीनाथ होकर काम्यवन जाना चाहते है उनके पक्ष में रास्ता-बद्रीनारायण के एक मील दक्षिण में गोहाना है, वहाँ सुदामाजी का जन्मस्थान है। उसके दो मील पश्चिम में

खों गाँव है । उसके दो मील पश्चिम में कर्मखग्राम है । उसके अग्निकोण में धवलउद्यान पर्व्वत है । गाँव के दक्षिण घाटी पहाड़ अतिक्रम करने पर आलीपुर ग्राम मिलता है । आलीपुर के डेढ़ मील नैऋतकोण में आदिबद्रीनाथ हैं । यहाँ तपोवन है । तपोवन के दक्षिण में गन्धमादन पर्व्वत, पश्चिम में केशरपर्व्वत, उत्तर में निषेध पर्वत तथा पश्चिम में शङ्खकूट पर्वत हैं । रास्ता के वाम-भाग में श्रीमालादेवी का प्राचीनभग्नमन्दिर, यात्रा करने वाला के दक्षिण में गौरीकुण्ड है । आगे कुछ दूर चलने पर आदिबद्रीनाथ हैं । मन्दिर के सामने तप्तकुण्ड है ।

बद्रीनाथ से फिर आलीपुर, आलीपुर से दो मील उत्तर पशप-गाँव होकर कोई कोई पाँचमील उत्तर में काम्यवन को जाते हैं । कोई कोई पशप के पाँच मील पश्चिम केदारनाथमहादेव दर्शन करते हुए काम्यवन जाते हैं । पशप-केदारनाथ के बीच में रास्ता पर वरलीगाँव पड़ता है । अति उच्च पर्वत में केदारनाथजी पार्व्वतीजी के साथ विराजमान हैं । केदारनाथ से काम्यवन छ मील ईशान-कोण में है तथा केदारनाथ से दो मील ईशान में विलोन्द है । उसके दो मील ईशान में चरणपहाड़ी तथा चरणपहाड़ी के दो मील ईशान में काम्यवन है । आदिबद्री, श्रीनरनारायण के तपस्यास्थान है । यहाँ ही उनके तपस्या भंगके लिये इन्द्र ने अप्सराओं को भेजा था । उससे नारायणदेव ने अपनी वामजंघा से उर्वशी की सृष्टि कर इन्द्र के दर्प का चूर्ण किया ।

काम्यवन—यहाँ दोनों ने विविध लीलाएँ की । यह डीग से सात कोस दूर पर पश्चिमदिशा में है । इसमें अनेक तीर्थ हैं । यहाँ देवता, ऋषी, मुनि, मनुष्य, तपस्वी सब की मनः कामना सिद्धि होती है

इसलिये इसका नाम काम्यवन है । भाद्रमास शुक्लपक्ष प्रतिपदा-तिथी में कामवन की प्रदक्षिणा है । इसका प्रदक्षिणा सप्तकोस परिमाण है । कामवन के अधीश्वर गोपीनाथजी हैं । "ओं श्रीं काम्यवनाधिपतये गोपीनाथाय स्वाहा" यह उनका मन्त्र है । इस मन्त्र से प्राणायामादि करने की विधि है । भाद्र शुक्ल प्रतिपदा के दिवस कामवन में जाकर यात्री कामवन की प्रार्थना करें ऐसा ब्रज-भक्तिविलास में कथन है। प्रार्थनामन्त्र—

नमस्ते भगवद्रूप कामनासिद्धिदायिने ।
वनयात्राप्रसंगेन प्रसीद परमेश्वर ! ॥

इस मन्त्र का पाठ कर १६८ वार कामवन को नमस्कार करने की विधि है। यहाँ प्रतिपदा रात्रि में वास करने का नियम है नहीं तो यात्रा निष्फल हो जाती है। वृन्दावन से पश्चिम अठारह कोस दूर पर कामवन है।

ब्रजभक्तिविलास में कामवन का चिन्ह निर्देश करते हुए विष्णु-पुराण का वचन उठाकर इस प्रकार कहा गया है—विष्णुपुराण में लिखा है—कामवन में ८४ तीर्थ, ८४ मन्दिर, ८४ खम्भ मौजूद हैं जो कि कामसेन के द्वारा निर्मित हैं। यहाँ देव-असुर समस्त विष्णु-आज्ञा से प्रेरित होकर १६८ खम्भ बने हैं । विचार करने पर यहाँ छोटे बड़े असंख्य कुण्ड हैं । यहाँ के तीर्थ-विमलकुण्ड, गोपिकाकुण्ड, सुवर्णपुर, गयाकुण्ड, धर्म्मकुण्ड, सहस्र-तीर्थ सरोवर हैं। वहाँ धर्म्मराज सिंहासन का दर्शन है । आगे यज्ञकुण्ड, पाण्डवों के पञ्चतीर्थ सरोवर, परमोक्षकुण्ड, मणिकर्णिकाकुण्ड, हैं । पास में निवासकुण्ड, त्रिकोणाकार यशोदाकुण्ड हैं । आगे मनोकामना-कुण्ड, गोपिकारमण-कुण्ड, समुद्रसेतुबन्ध-कुण्ड, त्रिकोणाकारध्यानकुण्ड, तप्तकुण्ड, जलविहारकुण्ड, जलक्रीड़ा-

कुण्ड, रङ्गिलाकुण्ड, छबिलाकुण्ड, जकीलाकुण्ड, मतीलाकुण्ड, दतीलाकुण्ड, पञ्चकुण्ड, घोसरानीकुण्ड, विह्वलकुण्ड, श्यामकुण्ड, गोमतीकुण्ड, द्वारिकाकुण्ड, मानकुण्ड, ललिताकुण्ड, विशाखाकुण्ड, दोहनीकुण्ड, मोहनीकुण्ड, बलभद्रकुण्ड, चतुर्भुजकुण्ड, सुरभीकुण्ड, वत्सकुण्ड, लुक्लुकस्थान, गोविन्दकुण्ड, नेत्रमोचनकुण्ड, खिसलनीशिला, व्योमासुरगुफा, भोजनस्थल, सुमनासखी का विवाहस्थल, ललिताग्रन्थिदत्तस्थान, अनन्तर— विष्णुचिन्हपादपर्वत, गरुडनामकतीर्थ, कपिलतीर्थ, लोहजंघऋषिस्थान, होढ़स्थल, उत्तर में इन्दुलेखादेवी स्थल, उस पर्वत के ऊपर रामस्थल जो दोनों के मध्य दीघ हलरेखा से युक्त है। उसके उत्तर भाग में कृष्णकूप, उसके पास मे दूसरा संकर्षणकुण्ड, अनन्तर लोकेश्वर नामक गुह्यतीर्थ, वाराहकुण्ड, सतीकुंड चन्द्रसखीपुष्करिणी, उसके ऊपर चन्द्रशेखर शिवमूर्त्ति तथा शृङ्गारतीर्थ हैं। अनन्तर पर्वत के दक्षिण में प्रभालक्ष्मी नामक बावड़ी है। उसके पश्चिम भाग में भारद्वाज ऋषिकूप है। उसके उत्तर में सङ्कर्षणकुण्ड, उसके पूर्वभाग में कृष्णकूप है. ये तीन कूप पर्वत के निकट में हैं। पर्वत के शिखर में भद्रेश्वरशिवमूर्ति है, अनन्तर आगे बलक्षगरुडमूर्ति है। उसके निकट पिप्पलादाश्रम है। अथ पर्वत के पास पश्चिम की तरफ बुद्धस्वरूप का स्थल है। अनन्तर दिहुहली, राधापुष्करिणी है, उसके पूर्वभाग में ललितापुष्करिणी, उसके उत्तर में विशाखापुष्करिणी, उसके पश्चिम में चन्द्रावलीपुष्करिणी, उसके दक्षिण में चन्द्रभागापुष्करिणी हैं। पूर्वदक्षिण के मध्यस्थल में लीलावतीपुष्करिणी, पश्चिम उत्तर के अभ्यन्तर प्रभावती-पुष्करिणी, मध्य में राधापुष्करिणी हैं। इन पुष्करिणियों के अभ्यन्तर ६४ सखियों की पुष्करिणी हैं। उनके आगे कुशस्थली है। वहाँ शङ्खचूड़वधस्थान, कामेश्वरमहादेवजी है। उत्तरभाग में चन्द्रशेखरमूर्ति, विमले-

श्वरदर्शन, बाराहस्वरूप का दर्शन है । वहाँ द्रौपदी के साथ पांडवों का दर्शन, अष्टसिद्ध गणेश का दर्शन, वज्रपञ्जर नामक हनुमान का दर्शन, वृन्दादेवी के साथ गोविन्द का दर्शन, राधावल्लभ, गोपीनाथ, नवनीतराय, गोकुलेश्वर, रामचन्द्र इन स्वरूपों का दर्शन हैं । इस प्रकार ८४ देवस्थानों का दर्शन करने की विधि है । ब्रजभक्तिविलास में क्रम से समस्त तीर्थों के प्रणाम, प्रार्थन, स्नानादि का मन्त्र सविस्तार पृथक् पृथक् वर्णित है ॥

प्रथमवारदर्शनीयस्थान—

श्रीगोविन्दजी का मन्दिर, वहाँ वृन्दादेवी का दर्शन है । आगे विष्णुसिंहासन है । यहाँ वैशाख शुक्ला तृतीया के दिवस श्रीनारायण के साथ लक्ष्मीजी का विवाह सम्पन्न हुआ था । आगे चरणकुण्ड है, जहाँ राधाकृष्ण ने चरण धोया है । पास में वैद्यनाथमहादेवजी हैं । आगे गरुड़जी, चन्द्रभासाकुण्ड, चन्देश्वरमहादेवजी, वराहकुंड, वराहकूप, यज्ञकुंड, धर्म्मकुंड हैं ।

धर्मकुण्ड—यह कुंड पूर्वादिशा में मौजूद है । यहाँ श्रीनारायण धर्मरूप मे विराजमान हैं । पास में विशाखा नामक वेदी है । श्रवणनक्षत्र बुधवार भाद्रपद कृष्णाष्टमी में यहाँ स्नान की विशेष विधि है । धर्मकुंड के अन्तर्गत नरनारायणकुंड, नीलवराह, पञ्चपांडव, हनुमानजी, पञ्चपांडवकुंड, (पञ्चतीर्थ) मणिकर्णिका, विश्वेश्वरमहादेव, गणेशजी हैं । ये सब प्रथमवार दर्शनीय हैं ॥

द्वितीयवारदर्शनीयस्थान—

पहले वृन्दादेवी का दर्शन कर पीछे सत्यनारायणजी, नृसिंहदेवजी, गणेशजी, सिद्धबाबा की कुटी, बलदेवजी, हनुमानजी, चतुर्भुजभगवान्, विशोकादेवी, दाऊजी इन सब का दर्शन करें । अनन्तर विमलाकुंड में स्नानादि विधि है ॥

विमलाकुण्ड—यहाँ विमलादेवी सर्वदा विराजमान है। यह कुंड कामवन में परम प्रसिद्ध तथा कामवन के दक्षिण पश्चिम कोण में दो फर्लाङ्ग दूर पर है। कुंड के चार ओर (१) दाऊजी, (२) सूर्यदेव, (३) नीलकंठेश्वरमहादेव, (४) गोवर्द्धननाथ, (५) मदनगोपाल तथा काम्यवनविहारी, (६) विमलविहारी, (७) विमलादेवीजी, (८) मुरलीमनोहर, (९) गङ्गाजी, (१०) गोपालजी क्रम से विराजमान हैं। इस कुंड में स्नान कर चतुर्भुज-भगवान् के दर्शन करने का महात्म्य है। भाद्र शुक्ला तृतीया में यहाँ स्नान की विशेष विधि है।

"वैमल्यरूपिणे तुभ्यं नमस्ते जलशायिने।
केशवाय नमस्तुभ्यं तीर्थराज नमोऽस्तु ते॥"

इस मन्त्र को ७ वार पाठ कर स्नानादि करें।

तृतीयवारदर्शनीयस्थान—वृन्दादेवी, विहारीजी, मुरलीमनोहर, श्रीगोपालजी, आगे काशीकुंड और मणिकुंड है। ये दोनों एक ही साथ विराजमान हैं। कुंड के किनारे में चन्द्रशेखर महादेवजी हैं। कुंड के किनारे में एक प्रस्थर फलक में योगकुंड का नाम उल्लेख है। मणिकुंड में चतुर्दशी के दिवस स्नान का विशेष महात्म्य है। आगे लुकलुकनिकुंड है। जहाँ राधाकृष्ण ने नेत्र मूँद कर आँखिमिचोनी खेला खेली है। यहाँ क्रीडाछल से श्रीकृष्ण छिप कर सामने पर्वत पर प्रगट हुए थे। वर्त्तमान नाम लुकलुक कन्दरा है। इसके अन्तर्गत कमलाकरसरोवर तथा जलक्रीडनकुंड एक ही साथ विराजमान हैं। जलक्रीड़ा-कुंड मे श्रीकृष्ण ने जलक्रीड़ा की है। पास में ध्यानकुंड तथा तपकुंड है। भाद्र शुक्ला एकादशी में तपकुंड में स्नान की विशेष विधि है। तपकुंड में राजा हरिश्चन्द्र ने तपस्या की है। आगे

चरणपहाड़ी है । पर्वत के ऊपर श्रीकृष्ण के चरणचिन्ह मौजूद है। वंशीध्वनि से पर्वत का पिघल जाने के कारण उसमें चरण-चिन्ह पड़ा है। पास में विह्वलकुंड तथा पञ्चसखाकुंड हैं। इनके नाम रङ्गिला, छविला, जकिला, मतिला, दतिला हैं । ये सब आगरावली ग्राम के पास मौजूद हैं । इनके मध्यदेश में श्याम-कुंड, दोहनीकुंड, मोहनीकुंड ये एकत्र विराजमान हैं। विह्वल-कुंड में श्रीराधिका हरि के मुरलीगान से विह्वल हो गयी थीं । पास में घोषरानोकुंड है। घोषरानो यशोधरगोप की बेटी थी। यशोधर ने यहाँ ही कन्या का विवाह दिया था । यहाँ यशोदा का पित्रालय था। श्रीकृष्ण की मातामही पाटलादेवी का यह कुंड है। द्वारकाकुंड, सोमतिकुंड, मानकुंड, बलभद्रकुंड ये चार परस्पर निकट में हैं। आगे चतुर्भुजकुंड है । ललिताकुंड, विशाखाकुंड, ये दोनों एकत्र अवस्थित हैं । कुंड के तट पर मानसीदेवी हैं अनन्तर ग्राम में आकर गोपालजी का दर्शन है ॥

चतुर्थवारदर्शनीय स्थान—

श्रीराधामोहन, कोटेश्वरमहादेव, कल्याणरायजी, चौरासीखम्भ, (नामान्तर कामसेनराजा की कचहरी) गोपीनाथजी, गोपीश्वर-महादेव, गोपीकुंड, आस पास में गन्धर्वकुंड, गोदावरीकुंड, अयोध्याकुंड, सावित्रीकुंड, गायत्रीकुंड हैं । पास में सुरभीकुंड है । श्रीकुंड, चक्रतीर्थ, दामोदरकुंड मधुसूदनकुंड, पृथूदक-कुंड, अर्घ्यकुंड, अप्सराकुंड (नामान्तर रमणाभिधकुंड) ये आठ सुरभीकुंड के अन्तर्गत हैं । वेदकुंड, रोहिणीकुंड, चन्द्र-कुंड ये तीनों एकत्र विराजमान हैं तथा कलावताग्राम के पास में हैं । इन्द्रसेन पर्वत में खिसलिनी सीला है । अनन्तर बलदेव-चरणचिन्ह, मेधावी मुनि की कन्दरा, (नामान्तर व्योमासुरगोफा) भोजनथाली हैं ।

व्योमासुरगोफा— (चौर्यक्रीडास्थान) यहाँ पर्वत में व्योमासुर का गोफा है तथा श्रीकृष्ण ने व्योमासुर को यहाँ मारा था। श्रीकृष्ण सखाओं के साथ यहाँ एक दिवस मेष (भेंड) चोरी-लीला खेल रहे थे। बहुत तो भेंड बने तथा कुछ तो उनके पालक और अनेक चोर बन कर क्रीडा करने लगे। चोरों ने भेंडों की चोरी की। पालकों ने श्रीकृष्ण के पास इसका विचार रखा। श्रीकृष्ण दोनों पक्ष को बुला कर विचार (मुकद्दमा) करने लगे। इस प्रकार वे सब क्रीड़ासक्त रहैं। उधर कंसचर व्योमासुर ने बालक रूप बनकर उनके समाज में प्रवेश किया तथा भेंडों को चोरी का। जब भेंड सब निःसारित हो गये तब श्रीकृष्ण ने व्योमासुर का यह कार्य है ऐसा जानकर उसको मारा तथा पर्व्वत की गोफा से उसके द्वारा रुद्ध मेष रूपी बालकों का उद्धार किया। यह चरित्र दशमस्कन्ध में वर्णित है। पास में भोजनथाल है। श्रीकृष्ण ने सखाओं के साथ यहाँ भोजन कौतुक किया था। पर्व्वत-खण्ड के ऊपर भोजन करने के थाल का चिन्ह मौजूद है। पास में वाजनशीला है। जिसको वजाने पर नानावाद्य निकलते हैं। आगे सामने क्षीरसागर, चैतन्यकुंड तथा शान्तनुकुंड है। इस शान्तनुकुंड के अन्तर्गत गुप्तगङ्गा, नैमिषतीर्थ, हरिद्वारकुंड, अवन्तिकाकुंड, मत्स्यकुंड ये सब विराजमान हैं। गोविन्दकुंड, नृसिंहकुंड, प्रल्हादकुंड, ये एकत्र मौजूद हैं। आगे गोपालकुंड और ब्रह्मकुंड हैं। गोविन्दकुंड में कार्त्तिक कृष्णाष्टमी में तथा नृसिंहकुंड में वैशाख शुक्ला चतुर्दशी में स्नान का विशेष महात्म्य है॥

पञ्चमवार दर्शनीय स्थान—

वृन्दादेवी, धामकुंड, भोगकुंड, परसुरामकुंड, दावरीकुंड, प्रेमकुंड, माधुरीकुंड, केवलकुंड, सूर्यकुंड, सत्यनारायण, काम-

किशोरी, सूर्यनारायण, गोपालजी, लक्ष्मीनारायण, विहारीजी, सीतारामजी, वैद्यनाथजी, छोटेरामजी, छोटे दाऊजी, धर्मराज, बड़े दाऊजी, कामेश्वरमहादेवजी, राधाबल्लभजी, मदनमोहनजी, गोकुलचन्द्रमाजी, नवग्रह, लक्ष्मीनारायण, चित्रगुप्त, हनुमानजी, गङ्गाविहारी, रामलाला, गोपालजी, श्रीमन्महाप्रभुजी, गोवर्द्धननाथ, श्वेतवाराहदेव ये सब दर्शनीय हैं।

कामेश्वरमहादेव— आप कामवन के क्षेत्रपालक हैं तथा कामवन के उत्तरपूर्वकोण में गाँव के बाहिर मौजूद हैं। वहाँ से वर्षाणा का रास्ता आता है।

"कामेश्वराय देवाय कामनार्थप्रदायिने !
महादेवाय ते तुभ्यं नमस्ते मुक्तिदो भव ॥"

इस मन्त्र का ११ बार पाठ कर प्रणाम करने की विधि है॥

गयाकुंड—अगस्त्यकुंड और गयाकुंड एक ही साथ विराजित है। गयाकुंड के दक्षिणभाग घाट का नाम अगस्त्यघाट है। आश्विन कृष्णपक्ष में इसमें स्नान, तर्पण, पिण्डदान आदि प्रशस्त है॥

प्रयाग—तीर्थराज प्रयाग ने यहाँ तपस्या की तथा निवास भी किया। प्रयाग तथा पुष्करकुंड ये दोनों एकत्र विराजित हैं।

द्वारकाकुंड—श्रीकृष्ण ने द्वारका से ब्रज में आकर महर्षियों के साथ शिविर बनाकर यहाँ वास किया है। लुक्लुकानीकुंड तथा चरणपहाड़ी इनके बीच में ध्यानकुंड तथा तपकुंड है।

मानकुंड—यहाँ राधिका मानिनी हो गई थीं। श्रीकृष्ण ने विविध चाटुवचनों से उनका मान भङ्ग किया।

मोहिनीकुंड—यहाँ श्रीहरि ने मोहिनीस्वरूप धारण कर देव-

ताओं को अमृत बाँटा था। यहाँ गोदोहनलीला भी होती थी। यह कुंड तथा दोहनीकुंड एकत्र विराजमान हैं। आगरावाला गाँव पार होकर सामने ये दोनों कुंड पड़ते हैं॥

सूर्यकुण्ड—यह कृष्णकुंड के पास में है। यहाँ सूर्यभगवान् ने ठहर कर श्रीकृष्ण की स्तुति की थी॥

यशोदाकुण्ड—यहाँ श्रीकृष्ण सखाओं के साथ गोचारण करते थे। यह स्थान परममनोहर है। इसके मध्यभाग में देवकुंड तथा नारदकुंड मौजूद है। नारदकुंड में श्रीनारदजी श्रीकृष्ण की लीलाओं का गान करते हुए अधैर्य हो गये थे॥

मनःकामनाकुण्ड—यहाँ स्नानादि करने पर मनःकामना पूर्ण होती है। यह कुंड तथा कामसरोवर, विमलाकुंड और यशोदाकुंड के बीच एक ही साथ विराजित हैं॥

सेतुबन्धसरोवर—(नामान्तर लङ्काकुंड) यहाँ श्रीकृष्ण ने रामावेश में गोपियों के समक्ष बन्दरों के द्वारा सेतु बाँधा है। अभी भी सरोवर के बीच सेतुबाँध मौजूद है। कुंड के उत्तर में सेतु के प्रारम्भिकस्थान में रामेश्वरमहादेवजी विराजमान हैं। जिन्हें रामावेशी श्रीकृष्ण ने स्थापना की थी। कुंड के दक्षिणपार में टीलाकार लङ्कापुरी है।

प्रसंग—एक दिवस कुंड के उत्तर तट पर श्रीकृष्ण गोपियों के साथ वृक्षों के नीचे बैठ कर श्रीराधिका के साथ-हास्य-परिहास-विनोद कर रहे थे। उस समय उनका रूपमाधुरी में मोहित होकर बन्दर सब वृक्षों से नीचे उतर कर उनके चरणों में प्रणाम करते हुए प्रसन्नता के साथ नाचने कूदने लगे। अधिक संख्यक बन्दरों ने कुंड के उस पार से वृक्षों से छलांग मार कर उनके पास आकर चरण वन्दना की। श्रीहरि उस समय बन्दरों की वीरता की प्रशंसा

करने लगे तथा गोपियाँ भी रामचन्द्र के चरित्रों का वर्णन करती हुई "राम ने तो इनकी सहायता ली है" ऐसा कह कर बन्दरों की प्रशंसा करने लगीं। उस समय ललिता ने कहा—हनुमान ने पहले समुद्र का पार किया था ऐसा हम सबने सुना है परन्तु अब तो साक्षात्रूप में बन्दरों का सरोवर पार हो जाना देखने में आ रहा है। तब श्रीकृष्ण गर्व्व करते हुए कहने लगे, हम ही तो पूर्व अवतार में राम थे। ललिता ने राम की प्रशंसा करती हुई श्रीकृष्ण के वचनों को मिथ्या प्रतिपादन कराने के लिये प्रयास किया। श्रीकृष्ण कहने लगे, राम ने धनुर्बाण लेकर क्षत्रिय-धर्म की रक्षा की तथा दैत्यों को मारा। वे सीता के वियोग में वन-वन में फिरे हैं। अब हम वंशीधारण के द्वारा गोपधर्म्म की रक्षा करते हुए वन में राधिका के साथ विनोद कर रहे हैं। पहले रामरूप हमारे शराघात से त्रिजगत् कम्पायमान हो जाता था, परन्तु अब हमारे वेणुनाद के द्वारा समस्त स्थावर जङ्गम प्रेम में उन्मत्त हो जा रहे हैं। तब ललिता ने कहा—इस प्रकार कहने पर हम विश्वास नहीं कर सकती हैं। यदि कार्य में कुछ दिखाकर विश्वास उत्पादन करा सकते हैं तब हम मान जायेंगी। राम ने तो समुद्र को बाँध डारा था, परन्तु आप तो इस सरोवर को बाँधने में असमर्थ हैं। ललिता के इस प्रकार अवहेलारूप वचनों का श्रवण कर श्रीकृष्ण ने गर्व के साथ वंशीध्वनि के द्वारा बन्दरों को बुलाकर एकत्र किया तथा उन्हें पर्वत लाकर सेतु बाँधने के लिये आदेश दिया। उनका आदेश प्राप्त होकर समस्त बन्दर उत्सुकता के साथ पत्थरों को लाने लगे। आपने उन पत्थरों से अपने हस्तों के द्वारा सेतु बाँधा तथा लङ्काविजय के लिये रामेश्वरमहादेव की स्थापना की। यह लीला कामवन में हुई है। इस प्रकार दोनों की विविधलीलाएँ यहाँ हुआ करती थीं। इस कुंड का नामान्तर लङ्काकुंड है॥

श्रीकृष्णचैतन्यसम्प्रदाय के ठाकुर विग्रह—श्रीगोविन्ददेवजी, श्रीवृन्दाजी, श्रीगोपीनाथजी, श्रीमदनमोहनजी, श्रीवल्लभसम्प्रदाय के कृष्णचन्द्रमाजी, नवनीतप्रियाजी, मदनमोहनजी हैं। काम्यवन में सात दरवाजे मौजूद हैं। १-दीगदरवाजा—अग्निकोण में भरतपुर जाने का रास्ता है। २-लंकादरवाजा—दक्षिण में सेतुबन्धकुंड की तरफ है। ३-आमेरदरवाजा—नैऋतकोण में है। यहाँ से चरणपहाड़ी जाया जाता है। ४-देवोदरवाजा—पश्चिम में, पञ्जाव जाने का रास्ता। ५-दिल्लीदरवाजा-उत्तर में, दिल्ली जाने का रास्ता। ६-रामजीदरवाजा—इशान में, नन्दग्राम जाने का रास्ता। ७-मथुरादरवाजा—पूर्व में है, यहाँ से वर्षाणा होकर मथुरा जाया जाता है॥

धूलेडागाँव—यहाँ गोचारण के समय गौओं के चरण रजः से आकाश छा गया था॥

उधा—यहाँ उद्धवजी ठहर कर पीछे नन्दालय के लिए गये थे॥

आटोर—यहाँ श्रीकृष्ण आठ प्रहर क्रीड़ामुख में मग्न रहे थे। इस लिये इसका नाम आठ प्रहर से आटोर बन गया है॥

वजेरा—काम्यवन से दो मील पूर्व में है। वजेरा में रङ्गदेवी और सुदेवी यमजभगिनी का जन्म हुआ था॥

कदम्बखण्डि—इसमें सोनेहरागाँव है। यह कामवन से चार मील पूर्व अथवा वजेरागाँव से दो मील पूर्व में हैं। गाँव के नैऋतकोण में कदम्बखण्डि है। उसमें रासमण्डल और रत्नकुंड मौजूद हैं। भाद्रशुक्ला चतुर्दशी में बूढ़ीलीला प्रसंग में यहाँ रासलीला का अभिनय होता है॥

स्वर्णहार—वर्त्तमान नाम सोनेहरा है। यह कामवन से चार मील

दूर पर पूर्वदिशा में है। यहाँ श्रीराधिकाजी महादेवजी को सुवर्ण-हार पहनाई हैं। सब कोई इस गाँव को सुनेरा भी कहते हैं। सुवर्णाचलपर्वत के ऊपर यह गाँव बसा हुआ है तथा सुदेवोजो की यह जन्मस्थली है॥

श्रीनारायणभट्ट के द्वारा विरचित ब्रजोत्सवचन्द्रिका नामक विशाल ग्रंथ में—स्वर्णपुरे समाख्याते पश्चिमस्यां दिशि स्थिते।

गौरभानुर्महागोपस्तस्य भाय्या कलावती॥
स्वर्णाचलमिति नाम्ना पर्वतः संस्थितः स्वयम्।
तस्योपरि ग्राम वसेत् संस्थानं रासमण्डले॥
तयोः कन्या समुत्पन्ना सुदेवी नाम विश्रुता।
भादे मासे सिते पक्षे चतुर्थी पञ्चमी युता॥

रत्नकुण्ड—यह चतुर्मुख ब्रह्माजी का स्थान है तथा ब्रह्माचल (वरसाना) पर्वत में है। ब्रजभक्तिविलास में कहा गया है कि—"ब्रह्मपर्वतोपरिस्थं मानमन्दिरं, हिण्डोलं, रासमण्डलं रत्नकुंडम्।" अब इस ब्रह्माचल पर्वत के भाग मानपुरा गाँव के अन्तर्गत है॥

उच्चगाँव—जिसे आज कल ऊँचा गाँव कहते हैं। यह ललिताजी के गाँव करके प्रसिद्ध एवं सखोगिरि पर्वत से सम्बन्धित है। सुनेरा से पूर्व तीन मील अथवा वरसाना से पश्चिम एक मील दूर में यह स्थान है। शास्त्र में बलदेव स्थल करके भी प्रसिद्ध है। इस स्थान का चिन्ह इस प्रकार है कि—"सखीगिरिपर्वतोऽस्ति तत्पार्श्वे स्खलिनी सिलामन्दिरं, तत्रैव ललिताविवाहस्थलं, तत्पर्वतस्य दक्षिणपार्श्वे त्रिवेणीतीर्थं, तन्मध्ये रासमण्डलं, तत्पार्श्वे सखीकूपं, तदुत्तरपार्श्वे शिलापृष्ठस्थ श्रीयुगलबलदेवमूर्तिः हिंसवृक्षादधस्थः"। उच्चगाँव के पूर्व भाग में बलदेवमन्दिर, उसके नैऋतकोण में श्रीनारायणभट्टजी की समाधि, उसके उत्तर में त्रिवेणीकूप,

उसके नैऋत में आलतापहाड़ो नामान्तर चित्रशिला, उत्तर में देहकुण्ड हैं ॥

सखीगिरिपर्वत—श्रीकृष्ण के गुणों से मुग्ध होकर ललितादि गोपबालाओं ने सर्वप्रकार से क्रीड़ा की थी इसलिये इस गिरि का नाम सखीगिरि है । भाद्र मास तृतीया के दिवस यहाँ वनयात्रा प्रसंग है । इसकी प्रदक्षिणा तीन कोस की है । ब्रजभक्ति-विलास में कथन है कि—"विष्णुरहस्ये—

यत्र गोपसुताः सर्वाः ललितादिप्रभृतयः ।
क्रीड़ां चक्रुः समासेन श्रीकृष्णगुणमोदिताः ।
यस्मात्सखीगिरिर्नाम बभूव ब्रजमण्डले ।
तत्पार्श्वे स्खलिनो ख्याता कृष्णक्रीड़ाशिला स्थिता ।
भादे मासि सिते पक्षे तृतीयायां शुभे दिने ।
वनयात्रा-प्रसंगस्तु क्रोशत्रयप्रविस्तृतः ॥

खिसलिनी-शिला—सखीगिरि पर्वत के ऊपर में है जो कि ललिताविवाह स्थल से लगी हुई है । यहाँ सखियों ने खिसल खिसल कर क्रीड़ा की थी । पर्वत में उस का चिन्ह है । उसके बगल में कुछ उत्तर में चल कर चित्रशीला है । सखियों ने जो विचित्र चित्र बनाये उनका चिह्न है । भाद्र शुक्ला द्वादशी में यहाँ बूढ़ोलीला (रासादिक) होती है । ब्रजोत्सवचन्द्रिका ग्रन्थ में श्रीपादनारायणभट्टजो ने विष्णुधर्मोत्तर के वचनों का उद्धृत के साथ निर्णय दिया कि—"तत्र ग्रामतः पश्चिमभागतः सखीगिरिनाम पर्वतोऽस्ति तस्योपरि चैका पुष्करिणी स्थिता ।" "तत्रैव पर्वतस्याधः पश्चिमतः खिशिलिनोसिला स्थिता . लैङ्गे-"तत्र क्रीड़ा कृतास्ताभिः शिलायां स्खलनं कृतम्" ॥

ललिताविवाहस्थल—यहाँ श्रीकृष्ण ने सात वर्ष वयस में

ललिताजी के साथ विवाह किया था। अब यहाँ एक छत्री चबूतरा बना हुआ है। "ब्रजोत्सवाय कृष्णाय ब्रजराजस्य शोभिने। ललितायै नमस्तुभ्यं ब्रजकेल्यै नमो नमः" इस मन्त्र का ७ वार पाठ कर नमस्कार करें॥

त्रिवेणीकूप--यहाँ त्रिवेणीजी विराजमान हैं जिसमें श्रीबलदेवजी एवं श्रीललिताजी नित्य स्नान किया करते थे। यहाँ की धूलि उठा कर ललाट में धारण करने पर त्रिवेणीस्नान का फल मिलता है—

"कृष्णाज्ञासंप्रवर्त्तिन्यै त्रिवेण्यै सततं नमः।
परं मोक्षपदं देहि धनधान्यप्रवर्द्धिनि ! ॥"

इस मन्त्र का पाठ कर ३ वार नमस्कार-आचमनादि करें। पास में रासमण्डल तथा श्रीनारायणभट्टजी की समाधि है॥

सखीकूप--पर्वत के पास सखीकूप है। ललितादि सखियों ने कृष्णागमन प्रतीक्षा में उत्कंठिता होकर जलपानार्थ इसे बनाया है। खिसलिनीशिला के सामने पश्चिम सखीकूप है।

बलदेवमन्दिर—यह श्रीबलदेवजी का स्थान है। श्रीबलदेवजी, श्रीनारायणभट्टजी के द्वारा हिंसवृक्षों के नीचे से प्रगट हुए थे। वहाँ बलदेवजी के विशालमन्दिर है जिसे कि भट्टजी की आज्ञा से राजा टोडरमल्ल ने बनवाया है। भट्टजी मुख्यतया यहाँ ही निवास करते थे। इन्होंने त्रिवेणी को प्रकट करा कर यहाँ (त्रिवेणी तीर्थ में) दिखलाया था॥

ललितास्थल--(अटोरा पर्वत) यह देहकुण्ड के पूर्व में तथा उससे संलग्न है। इस पर्वत के ऊपर में ही गाँव बसा हुआ है। पर्वत के ऊपर ललिताजी का "अटा" है। ब्रजभक्तिविलास में कहा है—"तद्वामपार्श्वेऽशोकवासपर्वतोऽस्ति। तदुपरि ललिता-

क्रीडनघटास्थानं अशोकगोपमन्दिरम्"।

उन्होंने ब्रजोत्सवचन्द्रिका में भी निर्णय दिया है—"बृहद्गौतमीये—

ग्राममध्ये त्वटा त्वस्ति ललितायास्तु खेलनम्।
तस्मिन्नटायां ललिता साष्टाभिः सखिभिः सह।
अष्टाब्दसंयुतावस्था सखिभिः परिक्रीडते।
तस्मादुच्चाभिधानस्याटोरिसंज्ञं प्रवक्षते॥

गोपीपुष्करिणी—यह सखीगिरि पर्वत में मौजूद है। ललितादि सखियों ने यहाँ स्नान किया था। यह देवदुर्लभस्थान है। यहाँ सखियों ने बदरिका (बेर) लेकर खड-खड करके ऊखल रूप से रखा था। इस स्थान पर वे रखे गये थे। अतः यहाँ बदरिका-उलूखलि स्थान भी मौजूद है। पर्वत के ऊपर सप्तवर्षीया ललितादि सखियों के चरणचिन्ह हैं। अनेक परिश्रम से बहुत दिवस यावत् ढूँढ़ने पर मृगतृष्णा झाँई की भाँति दीख पड़ते हैं। वे सब सखीगिरि के शिखर में मौजूद हैं॥

देहकुण्ड—यहाँ दशकर्ष सुवर्णदान करने पर कोढी कोढ़ से मुक्त हो दिव्यशरीर लाभ करता है। यहाँ वेणीशंकर महादेवजी मौजूद हैं। जिन्हें महान् आत्मावाली गोपियों ने स्थापना की है। यहाँ स्नान कर महादेवजी का दर्शन करने पर त्रिवेणी स्नान का फल मिलता है। एक समय किसी पर्वोपलक्ष में राधाकृष्ण दोनों स्नान कर रहे थे। उस समय किसी दरिद्र ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण से अर्थ की याचना की। श्रीकृष्ण ने श्रीमती को हो उसे दान देने को कहा, पश्चात् वृषभानुनन्दिनी के देह परिमित सुवर्ण देकर उस ऋण से मुक्त हुए, अतः इसका नाम देहकुण्ड है। कुण्ड के नैऋतकोण में चरणचिन्ह विराजमान है।

"त्रैलोक्यश्रमनाशाय सर्वदानन्ददायिने ।
सर्वकल्मषनिर्धौत दीप्यकायप्रदायक ! ॥"

इस मन्त्र का पाठ कर १० वार स्नान-मज्जन एवं कुण्ड के ऊपर वेणीशङ्करमहादेवजी का दर्शन करें।

"वेणीशङ्कररुद्राय नमस्ते शिवरूपिणे ।
कुलगोपशिवार्थाय नमस्ते भवमूर्त्तये ॥"

इस मन्त्र का ११ वार पाठ कर प्रणाम करें॥

वृषभानुपुर—वर्त्तमान इसका नाम वरसाना है। राधिकाजी के पिता वृषभानु राजा का यह गाँव है। गोवर्द्धन से पश्चिम सात कोस दूर पर यह मौजूद है। यहाँ से कामवन तीन कोस पश्चिम में है। ब्रजभक्तिविलास ग्रंथ में वाराह तथा पद्मपुराण का वचन इस प्रकार से उद्धृत है—"वाराहपुराणे पद्मपुराणे च—

पुरा कृतयुगस्यान्ते ब्रह्मणा प्रार्थितो हरिः ।
ममोपरि सदा त्वं हि रासक्रीड़ां करिष्यसि ।
सर्वाभिर्ब्रजगोपीभिः प्रावृट्काले कृतार्थकृत् ॥

श्रीभगवानुवाच—

तथा ब्रह्मन् ब्रजं गत्वा वृषभानुपुरं गतः ।
पर्वतो भवसि त्वं हि मम क्रीड़ां च पश्यसि ।
यस्मात् ब्रह्मा पर्वतोऽभूद्वृषभानुपुरे स्थितः ॥

पहले कृतयुग के अन्तभाग में ब्रह्माजी ने श्रीहरि की प्रार्थना की कि आप मेरे ऊपर में ब्रजगोपियों के साथ सर्वदा रास विनोद करें। विशेष करके वर्षाकाल में विविध लीला विलास के द्वारा हमें कृत्यकृत्य करें। श्रीरासविहारी हरि ने कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुम वृषभानुपुर में जाकर पर्व्वत रूप हो जाओ। मैं ब्रज-गोपियों

के साथ ब्रज में प्रकट होकर तुम में विविध क्रीड़ा विनोद करूँगा। जिनका दर्शन से तुम कृतार्थ हो जाओगे । प्रभु की ऐसी आज्ञा पाकर ब्रह्माजी ने बरसाना में आये तथा पर्व्वत रूप बनकर वास करने लगे। वृषभानुमहाराज के श्रीमहल इस ब्रह्म पर्व्वत के ऊपर है। भाद्र शुक्ल तृतीया के दिवस यहाँ परिक्रमा है । परिक्रमा का परिमाण दो कोस का है। वृषभानु-पुर दर्शन करने का यह मन्त्र है-"महीभानुसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः । सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांक्षिताम् ॥" इस मन्त्र का दशवार पाठकर वृषभानु-पुर नमस्कार करने की विधि है। ब्रजभक्तिविलास में वृषभानुपुर का चिह्न इस प्रकार निर्देश किया गया है-"पद्मपुराणे-विष्णुब्रह्म-नामानौ पर्वतौ द्वौ परस्परौ। दक्षिणपार्श्वे ब्रह्मनामपर्वतः वामपार्श्वे विष्णुनाम पर्वतः ब्रह्मपर्वतोपरि श्रीराधाकृष्णमन्दिरं, श्राराधा-कृष्णदर्शन, तदधोभागे श्रीवृषभानुगोप-मन्दिरं, वृषभानु-कीर्त्ति-श्रीदामादर्शनं, तत्पार्श्वे ललितादिसखीनां प्रियासहितानां मन्दिरं, राधादि नवसखीनां दर्शनम्। ब्रह्मपर्वतोपरि दानमन्दिरं, हिंडोल-स्थलं, मयूरकुटीस्थलं, रासमण्डलम्। विष्णुब्रह्मनाम्नोरुभयोः सांक-रीखोरिस्थलं। ब्रह्मपवर्तोपरि श्रीराधामन्दिरमग्रे लीलानृत्यमडलम्। विष्णुपर्वतोपरिस्थं श्रीकृष्णमन्दिरमग्रे लीलानृत्यमन्दिरम्, तत्पार्श्वे विलासमन्दिरं तत्पार्श्वे गह्वरवनं, तदधःस्थले रासमण्डलं, राधा-सरोवरि दोहिनीकुंडं, तत्समीपे चित्रलेखया कृत मयूरसरः ॥" अर्थात् पद्मपुराण का कथन यह है-विष्णु, ब्रह्मा नामक दोनों पर्वत सामना सामने मौजूद हैं । दक्षिण पार्श्व में ब्रह्मपर्वत तथा वाम पार्श्व में विष्णुपवत है। ब्रह्म पर्वत के ऊपर श्रीराधाकृष्ण-मन्दिर है। उसमें राधाकृष्ण दर्शन है। उसके नीचे वृषभानुमन्दिर है, उसमें वृषभानु, कीर्त्तिदा, श्रीदामा इन तीनों का दर्शन है। उसके पास प्रिया के साथ ललिताजी का मन्दिर है, उसमें राधादि

नवसखियों का दर्शन है।

पर्वत के ऊपर श्रीराधाकृष्णदर्शन करने का मन्त्र—

"नमः प्रियायै राधायै ब्रह्मणो वरदादिने।
सर्वेष्टफलरम्याय राधाकृष्णाय मूर्त्तये" ॥

इस मन्त्र का पाठ कर ७ वार प्रियाजी को प्रणाम करें।

ब्रह्मपर्वत के ऊपर दानमन्दिर, हिंडोलास्थल, मयूरकुटीस्थान, रासमण्डल हैं। दोनों पर्वत के मध्यभाग में सांकरिखोरिस्थल है। ब्रह्मपर्वत के ऊपर राधामन्दिर है। आगे ललितानृत्यमन्दिर है। उसके पास विलासमन्दिर है। उसके पास गह्वरवन है। उसके अधःस्थल में रासमण्डल तथा राधासरोवर है। उसके पास दोहनी-कुण्ड है। उसके पास चित्रलेखाविरचित मयूरसरोवर है। वहाँ भानुसरोवर है। उसके पास वज्रेश्वर नामक महारुद्रमूर्त्ति है। उसके वामभाग में कीर्त्तिसरोवर है। वहाँ सप्तरायुगल दर्शन है। वरसाना के चार ओर चार सरोवर हैं। वरसाना के अधीश्वर राधाकृष्ण हैं। भारद्वाजोपनिषद् में "ओं क्लौं वृषभानुपुराधि-वनाधिपतये राधाकृष्णाय स्वधा" इस मन्त्र का उल्लेख है। इस मन्त्र के द्वारा प्राणायामादि करने की विधि है। "नमः प्रियायै राधायै ब्रह्मणो वरदादिने। सर्वेष्टफलरम्याय राधाकृष्णाय मूर्त्तये" इस मन्त्र का पाठ कर सात वार प्रियाजी को प्रणाम करने की विधि है। बरसाना के पूर्व में भानुखोर, उसके वायुकोण में कीर्त्तिदाकुंड तथा नैऋतकोण में विहारकुंड नामान्तर तिलककुंड है। विहारकुंड के दक्षिण पश्चिम में दोहिनीकुंड है जो चिक्सोली के दक्षिण में है। चिक्सोली के उत्तर में साँकरिखोर, साँकरिखोर के पूर्व पर्वत के ऊपर विलासगढ़ है। उसमें रासमंडल, पास में राधिका की धूली खेलने का स्थान, विलासमन्दिर है। साँकरि-

खोरि के पश्चिम पर्वत के ऊपरिभाग में दानगढ़, साँकरिखोरि के नैऋत तथा चिक्सौली के पश्चिम गह्वरवन, गह्वरकुंड, गह्वरवन के वायुकोण पर्वत के ऊपर मयूरकुटी, गह्वर के नैऋत पर्वत के ऊपर भाग में मानगढ़, उसमें मानमन्दिर, इस के दक्षिणस्थ गाँव मानपुरा, मानगढ़ के उत्तर में जयपुरमहाराज का मन्दिर, उसके उत्तर में श्रीजी का मन्दिर, श्रीजीमन्दिर से नीचे जाने का रास्ता में राधापितामह महीभानु का दर्शन, नीचे गाँव, गाँव के उत्तरांश में कीर्त्तिदामाता, बृषभानुमहाराज के साथ श्रीदाम तथा अष्टसखी-मन्दिर है। बरसाना के पश्चिम मुक्ताकुंड (रतनकुंड) है॥

साँकरिखोर—दोनों पर्वत के बीच संकुचितरूप से जाने आने का मार्ग है। गोप-गोपी-धेनु सब इस मार्ग में गमनागमन करते हैं। गोदोहन के पश्चात् इस मार्ग में होकर गोपगण दुग्धभार ले जाते थे यहाँ श्रीकृष्ण ने गोपियों से दूध-दही लूटे थे। भाद्रशुक्ला त्रयोदशी में यहाँ बूढ़ोलीला होती है। बूढ़ोलोला के प्रवर्त्तक श्री-श्रीनारायणभट्टजी हैं।

"दधिभाजनशीर्षाः स्तागोपिकाः कृष्णरुन्धिताः।
तासां गमागमौ स्थानौ ताभ्यां नित्यं नमश्चरेत्" ॥

इस मन्त्र का यथाशक्ति पाठ कर लोला-नृत्यमण्डल तथा साँकरिखोर इन दोनों स्थान को प्रणाम करें॥

दानगढ़—यह ब्रह्माचल पर्वत के ऊपर तथा बहुत रमणीय स्थल है। प्रसंग—एक दिवस श्रीकृष्ण दानी बन कर सुबल सखा के साथ वहाँ राधा आगमन को प्रतीक्षा में विराजमान रहे। उधर राधिकाजी सूर्य्यपूजा का छल करके सखियों के द्वारा विविध द्रव्य लेकर वहाँ पहुँचीं। उन्हें देखकर श्रीकृष्ण अस्थिर हो बोलने लगे-अयि ब्रजयुवतिएं! तुम सब इन द्रव्यों को साथ में लेकर कहाँ

जा रही हो। मैं राजा का बैठाया दानी हूँ, यहाँ दान अर्थात् द्रव्यों का कर लेने को बैठा हूँ। परन्तु तुम सब भ्रूक्षेप भी नहीं करती हुई रमक ठमक गति से चली जा रही हो। कर देने का स्मरण तो कीजिये। तब विशाखाजी अस्पर्द्धा के साथ कहने लगी "यह तो राधिका के राज्य है, यहाँ के मालिक श्रीवृषभानुनन्दिनी है। बिना राजा आज्ञा से तुम यहाँ जो दानी बन कर बैठ गये हो उसका दण्ड तुम से लिया जायेगा। श्रीकृष्ण ने कहा यहाँ के राजा तो कामदेव हैं। तुम सब बिना कर दिये इस प्रकार प्रतिदिन अन्यथा आचरण करती हो। अतः राजा ने क्रोधित होकर मुझे भेजा है। यदि कर नहीं देती हो तो मैं बलात् तुम सबको बाँध कर राजा के पास ले जाऊँगा। अनन्तर विशाखाजी कहने लगीं-तुम्हारा राजा क्या कर सकता है? हमारे महाराजा तो वृन्दावनेश्वरीजी हैं। हम सब उनके पास रहती हैं। हमारे किसी का भय नहीं है। तुम्हारे कन्दर्प राजा का पराक्रम हम जानती हैं। राधिका के नेत्रान्चल बाणों से उसका गर्व्व नाश हो जाता है। ऐसा कह कर राधिका को आगे कर जब चलने लगीं तब श्रीकृष्ण ने उनका मार्ग रोका। श्रीकृष्ण कहने लगे हे युवतियाँ! यौवनरूप पेटी (डलिया) में नाना रत्न भर कर हृदय में छिपाती हुई इस प्रकार नित्य इस मार्ग मे चली जाती हो। अब तो इन द्रव्यों का दान अवश्य देना होगा। इस प्रकार अनेक हास्य-परिहास्य के उपरान्त दोनों वहाँ निभृत निकुञ्ज में नानाक्रीड़ा करने लगे। यहाँ दान-मन्दिर है।

"दानवेषधरायैव दध्युपास्याभिलाषिणे।
राधानिर्भत्सितायैव कृष्णाय सततं नमः॥"

इस मन्त्र का पाठ कर ४ वार मन्दिर का प्रणाम करें।

मानगढ़—ब्रह्माचल पर्वत के ऊपर में है। प्रसंग–एक दिवस संकेत करा कर श्रीकृष्ण राधिका के निकट आ रहे थे। मार्ग में चन्द्रावलीजी की सखी पद्मा अकस्मात् मिली तथा चन्द्रावली की विरह विवशता को देखाती हुई ऊन्हें मिलने का अनुरोध किया। श्रीकृष्ण चन्द्रावली के प्रेम में आकर वहाँ ही ठहर गये। उधर चन्द्रावलीजी वहाँ आई। श्रीकृष्ण के साथ उनके उसी कुञ्ज में विविध क्रीड़ाविनोद होने लगा तथा नाना प्रेममय कथपोकथन के द्वारा वह दिवस वहाँ ही बीत गया। वहाँ श्रीराधिका की एक सारी वृक्षपर मौजूद रही। उसने जाकर राधिकाजी को समस्त वृत्तान्त सुनाया। सारी मुख से चन्द्रावली के साथ श्रीहरि का विहार सुन कर राधिकाजी अत्यन्त मानिनी होकर बैठ गई। तब श्रीकृष्ण वहाँ आये तथा राधिका को मानिनी देख कर शाम, दाम, दण्ड, नीति के द्वारा समझाने लगे। अनेक प्रकार उपाय के अनंतर जब उनका मान नहीं टूटा तब श्रीकृष्ण निराश होकर रोदन करते हुए चलने लगे। अनन्तर विशाखाजी का परामर्श के अनुसार उन्हें वीणावादका श्यामासखी का रूप बना कर राधिका के निकट लवाया गया। वीणावाद्य से राधिका अत्यन्त प्रसन्न होकर उनको अपने गोद में बैठाने लगी। श्रीकृष्ण ने उनका मुखचुम्बन किया। तब राधिकाजी प्राणवल्लभ को पहिचान गईं तथा उनके साथ विविध क्रीडाविनोद करने लगीं।

इसमें मानमन्दिर, हिण्डोला, रासमंडल, रत्नाकरसरोवर हैं। "देवगन्धर्वरम्याय राधामानविधायिने। मानमन्दिरसंज्ञाय नमस्ते रत्नभूमये"॥ इस मन्त्र का १३ बार पाठ कर नमस्कार करें॥

मयूरकुटी—ब्रह्माचलपर्वत के ऊपर है। वहाँ रासमण्डल है। "किरीटिने नमस्तुभ्यं मयूरप्रियवल्लभ। सुरम्यायै महाकुटयै शिख-

ण्डिपदवेश्मने"। इस मन्त्र का पाठ कर ७ वार प्रणाम करें। वहाँ रासमण्डलप्रार्थनामन्त्र–"नमः सखीसमेताय राधाकृष्णाय ते नमः। विमलोत्सवदेवाय ब्रजमङ्गलहेतवे"॥ इस मन्त्र का ६ वार पाठ कर नमस्कार करें॥

विलासगढ़—यह विष्णुपर्वत के ऊपर है। यहाँ दोनों का विविध विलास हुआ था। इसके पास राधिकाजी का सखियों के साथ धूला खेलने का स्थान है। एक दिवस राधिका अपनी सखियों के साथ वहाँ आकर धूला खेल रही थी। हठात् श्रीकृष्ण वहाँ आ गये। सखियों ने भीतर आने को मना किया परन्तु श्रीकृष्ण बलात् वहाँ भीतर आने लगे। उस समय दैव इच्छा से एक आँधी आई तथा समस्त धूलामय हो गया। किसी को किसी ने नहीं देखा। ऐसा अवसर पाकर श्रीकृष्ण राधिका को आलिङ्गित कर मुखचुम्बनादि करने लगे। वयःसन्धि के समय यह लीला हुई थी। यहाँ विलासमन्दिर है। "विलासरूपिणे तुभ्यं नमः कृष्णाय ते नमः। सखीवर्गसुखाप्ताय क्रीड़ाविमलदर्शिने"॥ इस मन्त्र का १३ वार पाठ करके विलासमन्दिर का नमस्कार करें॥

चिकसौली—यह चित्रासखी का गाँव है। यहाँ विचित्र वेशभूषा बनाने में दक्ष सखियों ने श्रीराधा को विभूषित किया था। ब्रह्माचल पर्वत के नीचे यह गाँव बसा हुआ है॥

गह्वरवन—यहाँ शङ्ख का चिन्ह है, पास में श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक है। रासमण्डल तथा राधासरोवर भी है।

"गह्वराख्याय रम्याय कृष्णलीलाविधायिने।
गोपीरमणसौख्याय वनाय च नमो नमः॥"

इस मन्त्र का १६ वार पाठ कर वन को प्रणाम करें।

"विलासरासक्रीड़ाय कृष्णाय रमणाय च ।
दशवर्षस्वरूपाय नमो भानुपुरे हरे ॥"

इस मन्त्र का १० वार पाठ कर स्थान को प्रणाम करें ।

"देवकृतार्थरूपायै श्रीराधासरसे नमः ।
त्रैलोक्यपदमोक्षाय रम्यतीर्थाय ते नमः ॥"

इस मन्त्र का १० वार पाठ कर स्नानाचमन करें ॥

शीतलकुण्ड—

दोहनीकुण्ड—यहाँ गोदोहन होता था । यह गह्वरवन का पाश्चम-दिशा में है । यहाँ कदम्बवृक्षों में दोनेदार पत्ते होते हैं । विहारकुण्ड के दक्षिण पश्चिम अथवा चिक्सौली के दक्षिण में दोहनीकुण्ड है ।

"रत्ननीलसितधूम्रपीतगोदोहनप्रद ! ।
वृषभानुकृतस्तीर्थ ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मे ॥"

इस मन्त्र का ४ वार पाठ कर आचमनादि करें ॥

डभरारो—यहाँ श्रीराधिकादर्शन से श्रीकृष्ण के दोनों नेत्र आँसुओं से भर गये । डभरारो शब्द का अर्थ "अश्रुयुक्तनेत्र" है । अब इसका नाम डभार है । यह तुङ्गविद्या सखी का जन्मस्थल तथा बरसाना से दो मील दक्षिण में है । इसके डेढ़ मील दूर पर नैऋत में राधोली है ॥

मुक्ताकुण्ड— यहाँ श्रीराधिका ने श्रीकृष्ण के साथ विवाद कर मुक्ताओं का खेत लगाया था । यह चरित श्रीपाद रघुनाथदास-गोस्वामि के विरचित मुक्ताचरित ग्रंथ में सविस्तार वर्णित है ॥

भानुसरोवर—यह वृषभानुराजा का सरोवर है । भानुखोर में दोनों ने नाना क्रीड़ा की थी । यहाँ के चार ओर जियाल वृक्षराजि मौजूद है, जिसे देखकर दोनों अत्यधिक प्रसन्न होते थे । वृषभानु-

महाराज के नामानुसार यह कुण्ड बना था तथा यह बर्षाना की पूर्वदिशा में है।

"निर्धूतकिल्विषायैव गोपराजकृताय ते ।
वृषभानुमहाराजकृताय सरसे नमः ॥"

इस मन्त्र का १०० बार पाठ कर स्नानादि करें ॥

पीलूपोखर—यहाँ पिलुफल के छल से सखियों के साथ श्रीराधा विविध क्रीड़ाविलास करती थीं । वर्त्तमान नाम पिरीपोखर है ।

कीर्त्तिदाकुण्ड—यह भानुखोर के वायुकोण में है।

"नमः कीर्त्तिर्महाभागे ! सर्वेषां गोव्रजौकसाम् ।
सर्वसौभाग्यदे तीर्थे सुकीर्त्तिसरसे नमः ॥"

इस मन्त्र का ९ बार पाठ कर मज्जन-आचमनादि करें ॥

प्रेमसरोवर—यहाँ दोनों के प्रेमवैचित्त्यभाव का उदय हुआ था । वृषभानुपुर से नन्दीश्वर जाने की रास्ता में आधा मील दूर पर यह कुण्ड विराजमान है । कुण्ड का आकार नौका की भाँति है तथा चारि ओर कदम्बबृक्षो से ऐसा सुसज्जित है मानो प्रेम ही कुण्डाकार रूप से विराजमान है । यह स्थान परम मनोहर तथा दर्शकों के चित्त को आकर्षित करने वाला है । प्रसंग-एक दिवस दोनों यहाँ विराजमान होकर विविध प्रेममय लीलाविनोद कर रहे थे। उस समय एक भ्रमर आकर प्रियाजी के मुख कमल के पास इतस्ततः घूमता हुआ उनके कर्णदेश में बैठने को चाहता था । प्रियाजो भयभीत के साथ उद्विग्नचित्त हो रही थीं, उस समय मधु-मङ्गल ने आकर उसको उड़ाय दिया तथा "मधुसूदन यहाँ से चला गया" ऐसा कहने लगा । प्रियाजो मधु का वचन सुन कर 'हाय मधुसूदन चले गये" इस बात को वार-वार कहती हुई विरह से

व्याकुल हो गईं । उस समय उनका इस प्रकार प्रेमविचित्र्य भाव उठा कि श्रीकृष्ण गोद में विराजमान होते हुए भी उनको नहीं देखने पाये । आप "प्राणनाथ मुझे छोड़कर चल दिये" ऐसा बार बार कह कर रोदन करने लगीं । राधिका के प्रेम को देख कर श्रीकृष्ण भी प्रेमवैचित्र्य दशा में आकर "हा राधिके ! आप कहाँ गई हैं" इस प्रकार बार बार कह कर रोदन करने लगे । दोनों के नेत्रों से अश्रुजल तथा शरीर से घर्म्मजल इस प्रकार अधिक से बहने लगा कि उस से सरोवर पूर्ण हो गया । दोनों मूर्च्छित हो गये, उनकी इस दशा को देखकर सखियाँ भी अचेतन हो गईं । उस समय सारिका श्रीराधा नाम का तथा शुक श्रीकृष्ण नाम का सघन बार-बार उच्चारण करने लगे । वाणीकार श्रीमाधुरीजी ने अपनी मनोहर माधुरीवाणी में इस लीला का बहुत सरसता के साथ वर्णन किया है, दोनों का नाम दोनों के कानों में प्रवेश किया, दोनों चेतन होकर परस्पर को देखने लगे । उस समय सखियाँ भी चेतन होकर जय २ शब्द करने लगीं । आनन्द की सीमा रही नहीं । जो इस कुण्ड में एक बार स्नान करेगा उसको दोनोंके प्रेम की प्राप्ति अवश्य होगी इसमें कोई सन्देह नहीं है । यहाँ ललितामोहनजी, रासमण्डल, हिंडोलास्थल ये प्राचीन दर्शन हैं । "ललिताप्रेमसंभूते प्रेमाख्यसरसे नमः । प्रेमप्रदाय तीर्थाय कौटिल्यपदनाशक ॥" इस मन्त्र का १० बार पाठ कर स्नान करें ॥ यहाँ रामगढ़निवासी सेठ घनश्यामदासजी के पुत्र लक्ष्मीनारायण पोद्दार जी का बनवाया हुआ राधागोपालजी का मन्दिर, रामचौंतरा, प्रेमविहारीजी का मन्दिर, श्रीवल्लभाचार्य और विट्ठलनाथजी की बैठक, पूर्वदिशा में गाजीपुर गाँव हैं । भाद्रशुक्लाद्वादशी में यहाँ बूढ़ीलीला होती है ।

विह्वलकुण्ड—यह कुण्ड संकेत के पास अग्निकोण में है । यहाँ

श्रीकृष्ण राधानाम श्रवण से विह्वल हो गये थे। प्रसंग—एक दिवस श्रीकृष्ण सुबल के साथ इस मनोहर कुण्ड के पास एक कुञ्ज में बैठे हुए थे। उस समय एक सारिका राधागुण का गान करने लगी। राधिका के नाम का श्रवण कर श्रीकृष्ण के नाना प्रकार भावों का उदय हुआ। सर्व्वत्र राधिका की स्फूर्त्ति होने लगी। आप उनको पकड़ने के लिये भागने लगे। श्रीकृष्ण के इस प्रकार भावों का दर्शन कर सुबल राधिकामिलन के लिये चञ्चल हो गये, सखियों के साथ जब श्रीराधिका का आगमन हुआ तब उस समय सुबल-ने उनको दूर से दिखाया। दोनों दोनों का दर्शन कर परम आन-न्दित हुए तथा राधिका अंग का स्पर्श पाकर श्रीकृष्ण परम विह्वल हो गये। जो यहाँ बास करता है वह अवश्य राधाकृष्ण के प्रेम में विह्वल हो जायगा। विह्वलवन में यह कुंड है। "कदम्बलतिका-स्थाय ससख्ये हरये नमः। विशाखाललितायैव राधायै सततं नमः" इस मत्र का ६ बार पाठ कर विह्वलस्वरूप का दर्शन करें। "विह्वलपरमाल्हाद तीर्थराज नमोऽस्तु ते। सर्वपापच्छिदे तस्मै कुंड विह्वलसज्ञकः॥" इस मन्त्र का ६ बार पाठ कर विह्वलकुंड में स्नानादि करें॥

संकेत—यह स्थान नन्दगाँव-बरसाने के बीच में है तथा संकेतवट व सकेतकुंड से प्रसिद्ध है। दोनों के पूर्वराग के पश्चात् जो मिलन हुआ है वह यहाँ ही हुआ था। संकेतवन की परिक्रमा डेढ़ कोस है तथा उसमें सकेतवट की प्रदक्षिणा पादकोस हैं। संकेतवट के अधोश्वर राधारमणजी हैं। "ओं ह्रीं क्लीं सः संकेतवटाधिवना-धिपतये राधारमणाय नमः" यह उनका मन्त्र है। दर्शनीयस्थान—श्रीश्रीराधारमणजी-जो कि श्रीनारायणभट्टजी के द्वारा प्रगट हुए हैं। भट्टजी के द्वारा ही वह मन्दिर बनाया गया था। रासमण्डल

का चबूतरा और झूलामण्डप—इन दोनों को बनाने वाला उक्त नारायणभट्टगोस्वामीजी हैं । संकेतविहारीजी का मन्दिर—इसमें संकेतविहारीजी, निताइ गौरांग विराजमान हैं । रासचबूतरा के सामने पूर्व्वदिशा में श्रीविट्ठलेशजी एवं श्रीगोपालभट्टगोस्वामीजी की बैठक है । विह्वलादेवी, विह्वलकुंड, रङ्गमहल, शय्यामन्दिर ये सब दर्शनीय हैं । गाँव के उत्तर में गोपालभट्टगोस्वामी के भजन-स्थान के पास गौरांगमहाप्रभु बैठे थे । झूला के पास संकेतदेवीजी (वीरादेवी) है । गाँव के पश्चिम कृष्णकुण्ड है । वहाँ वल्लभा-चार्यजी की बैठक है । कोई कोई संकेत से तीन मील उत्तर नन्द-गाँव में यात्रा करते हैं । कोई कोई लीलास्थलियों का दर्शन करते हुए नन्दगाँव में पहुँचते हैं । उनके पक्ष में यह क्रम है—रिठोर, भड-खोर, श्रीमेहेरान, साँतोया, पाइ, तिलोयार, शिगारवट, विछोर, अन्जोप, सोन्द, वोनछारी, होडेल, दइगाँश्रो, लालपुर, हारोयान-गाँव, साँचोली, गेंडो ये गाँव हैं ।

"ललितावरदायैव नमस्ते परमेश्वरि ! ।
संकेतपदरक्षिण्यै सकलायै वरप्रदे ! ॥"

इस मन्त्रका १३ बार पाठ कर संकेतदेवी का साष्टांग प्रणाम करें ।

नन्दगाँव—यहाँ ब्रजराज नन्दमहाराजजी का आलय है । गोवर्द्धन से आठ कोस पश्चिम-उत्तरकोणे में है तथा कोसीकलाँ से चार कोस दक्षिण में हैं । ब्रजभक्तिविलास में नन्दगाँव का निर्देश इस प्रकार है—गाँव के पश्चिम भाग में अर्थात पृष्ठ देश में मधुसूदनकुण्ड है वहाँ मधुसूदनमूर्त्ति है । पास में यशोदाकुंड, कृष्ण के द्वारा दीखने वाली पाषाण रूप हावों की मूर्त्ति, ललिताकुण्ड हैं । उसके पास मोहनकुण्ड, दोहनीकुण्ड, दुग्धकुण्ड तथा दधिकुण्ड हैं । गाँव के आगे पावनसरोवर है । उसके बीच में यशोदाकूप

है । पास में कदम्बखण्डि नामक वन है। गाँव के मध्यभाग में यशोदा के दधिमथन का स्थान है । उसके पास नन्दीश्वर-नामक महारुद्रमूर्त्ति है । रुद्रपवत के ऊपरिभाग में नन्दरायजी का मन्दिर है । वहाँ नन्दराय, यशोदा, कृष्ण, बलभद्र का दर्शन है । उसके पास यशोदानन्दन युगलमूर्त्ति है । यह नन्दगाँव का चिन्ह है । भाद्र तथा कार्त्तिक की शुक्ला चतुर्थी और अष्टमी तिथी में यहाँ वनयात्रा का प्रसङ्ग है । नन्दगाँव की प्रदक्षिणा दो कोस परिमाण से है । नन्दगाँव के अधीश्वर यशोदानन्दनजी हैं । सम्मोहनतन्त्र में उनका मन्त्र इस प्रकार है "ओं क्लौं नन्दग्रामाधिवनाधिपतये यशोदानन्दनाय नमः ।" इस मन्त्र के द्वारा प्राणायाम, यजनादि की विधि है । यहाँ रामकृष्ण दोनों गूढ़रूप में विलास करते हैं। वृन्दावन से चौदहकोस पश्चिम में नन्दगाँव है । "नन्दीश्वराय देवायाभीरोत्पत्तिहिताय च । यशोदासुखदायैव महादेवाय ते नमः" यह नन्दीश्वरमहादेवजी का प्रार्थनामन्त्र है । १४ वार मन्त्र पाठ कर १४ नमस्कार करने की विधि है । "नन्दधात नमस्तुभ्यं यशोदायै नमो नमः । नमः कृष्णाय बालाय बलभद्राय ते नमः" ॥ इस मन्त्र का ४ वार पाठ करके ४ नमस्कार के द्वारा नन्द-यशोदा-कृष्ण-बलदेव की स्तुति करें ॥

नन्दगाँव के वर्त्तमान दर्शनीय स्थान—हाऊबिलाऊ-यहाँ यशोदाजी श्रीकृष्ण को "हाऊ आयो" ऐसा कह कर डराती थीं । यहाँ एक दधि बिलोने का बड़ा माट है जिसमें एक आदमी छिप कर बैठ सकता है ॥

पञ्चतीर्थ, वेलकुंड, पनिहारीगाँव, पनिहारीकुंड, चरणपहाड़ी, नन्दगाँव, चौडोखर (चरणकुंड) रोहिणी-मोहिनीकुंड, गायों का खूँटा, गायों का खिड़क, पावनसरोवर, श्रीसनातनगोस्वामीजी का भजनस्थान, श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक, मोतीकुण्ड, फुलवारी

उसास, श्यामपीपरो, (काला पीपल) टेरकदम्ब, श्रीरूपगोस्वामी-जी की भजनकुटीया, कृष्णकुंड, आशकुंड, आशेश्वरमहादेवजी, कृष्णकुंड, जलविहारकुंड, कुहककुंड, छाछकुंड, छछिहारीदेवी, जोगियाकुण्ड, वृक्ष को खोंतर में भण्डार, अक्रूरबैठक, वस्त्रकुण्ड, वस्त्रवन, ललिताकुंड, मोहनकुंड, विशाखाकुंड, उद्धवकुंड, उद्धवक्यारी, उद्धव की बैठक, नन्दपाखरा, यशोदाकुंड, मधुसूदन-कुंड, नृसिंह (नरसिंगा) नाद, नन्दराय-श्रीकृष्ण-बलदेव-यशोदा-जी, नन्दीश्वरमहादेवजी हैं ॥

पहले नन्दभवन के उत्तर दरवाजा के सिंहपोरी दर्शन कर नन्दी-श्वर की यात्रा करें। नन्दगाँव के ईशानकोण में साँवकुंड (नामा-न्तर घोयनीकुण्ड है । कुंड के पश्चिम में मनसादेवी है । इस कुंड के वायुकोण में तथा नन्दीश्वर के उत्तर में पावनसरोवर, सरोवर के दक्षिणतट में सनातनगोस्वामीजी का भजनकुटीर है । पावनसरोवर के ईशानकोण में नन्दीश्वरतडाग नामान्तर क्षुण्णा-हारकुंड है। उसके उत्तर में (किञ्चित् पश्चिम) मोतीकुंड, उसके उत्तर में फुलवारीकुंड, उसके पूर्व में विलासवट, उसके पूर्व में साहसीकुण्ड, (नामान्तर सारस की जोड़ी) उसके अग्नि-कोण म श्यामपिपडीकुण्ड, उस के अग्निकोण में वटकदम-कुण्ड, उसके अग्निकोण मे केवारीवटकुण्ड, उसके दक्षिण किञ्चित् पूर्व दिशा में टेरकदम्ब, (सप्तवृक्षमण्डल) कुंड के दक्षिण तट में श्रीरूपगोस्वामी की भजनकुटी, कुंड के पूर्वभाग में रास-मण्डलवेदी है जो नन्दगाँव यावट के बीच में है । उसके दक्षिण में आशेश्वरमहादेवजी तथा कुंड है । उसके पश्चिम में जलविहार-कुंड, उसके पश्चिम में चन्द्रकुंड, उसके वायुकोण में कुयाकिकुंड, उसके दक्षिण में कुकेश्वर, उसके दक्षिण मे कृष्णकुंड जो नन्दगाँव के पूर्वभाग में है। उसके पूर्व में सेहेन, उसके दक्षिण में वेहेककुंड,

उसके पूर्व में योगीयास्थान है । उसके पूर्व में झगड़ाकिकुण्ड, उसके अग्निकोण में भांडारवट, उसके पूर्व में लेओवट (सखाओं के साथ श्रीकृष्ण के मठापीने का स्थान) है । उसके दक्षिण में अक्रूर है । वहाँ शीलाखण्ड में श्रीकृष्ण का चरण-चिन्ह विराजमान है ॥

अक्रूर के नैऋतकोण में पल्लबनकुंड, उसके दक्षिण में डोमनवन तथा कुंड है, यह नन्दगाँव के अग्निकोण में है । डोमनवन के पश्चिम में झिमकि-रिमकि दो कुड हैं। उसके वायुकोण में पौर्णमासी का गोफा तथा कुंड है। उसके उत्तर में पारलखण्डो है । यहाँ कोई साधु कृष्णविरह में ज्वलन्तचिता में बैठ कर देहत्याग किया है, उसकी चिता विराजमान है। उसके पश्चिम में मोहनकुंड, (किसीकिसो के मत में विशाखाकुंड) है। उसके वायुकोण में ललिताकुंड है। इस कुंड के उत्तरांश में हिन्दुलवेदो तथा पश्चिम में नारदकुण्ड है । उसके पश्चिम में सूर्यकुण्ड है। सूर्यकुंड के अग्निकोण में तथा ललिताकुंड के दक्षिण-किंचित् पूर्व-दिशा में श्रीउद्धवक्यारो है । वहाँ उद्धवजी का बैठने का स्थान है । उसके पश्चिम में नन्दबैठक है । गाभीदोहन के समय नन्दबाबा यहाँ बैठते थे। उसके पश्चिम में यशोदाकुंड है । कुंड के उत्तर तट में "हाऊ" मूर्त्ति विराजमान है । यहाँ यशोदाजी "हाऊ आवेगा" ऐसा कह कर कृष्ण को डराती थीं । यह कुंड नन्दीश्वर के दक्षिण में है। उसके उत्तर में मधुसूदनकुंड है। कुंड के ईशानकोण में श्रीनृसिंहदेव का मन्दिर तथा उत्तर में यशोदा के दधी मन्थने का विशालमाट (मृत्तिकाबर्त्तन) है । उसके नैऋतकोण में दधिकुंड है। उसके नैऋत में कारेलो है। उसके अग्निकोण में तथा दधिकुण्ड दक्षिण में रावरिकुंड है। उसके दक्षिण (किंचित् पूर्वदिशा) में केम है। केम के नैऋतकोण में रेम है। उसके

वायुकोण में मान्धीरकुंड है । उसके पश्चिम में पुकरिया है । उसके वायुकोण में वेलकुंड तथा वेलकुंड के नैऋत में केवारि-कुंड है। उसके वायुकोण में पानिहारीकुंड है । उसके वायुकोण में चडखोर है। उसके वायुकोण में वृन्दादेवी का स्थान, कुंड, कुंड के वायुकोण में वृन्दा की मूर्त्ति है। यह नन्दगाँव के पश्चिम में हैं । उसके उत्तर में रज्झखोर, उसके उत्तर में रोहिणीकुंड, उसके पूर्व में किञ्चित् उत्तर दिशा में दोहनीकुंड, उसके उत्तर में पातराकिकुंड, उसके ईशान में पिपराकुंड जो पावनसरोवर के वायुकोण में है। पावन के वायुकोण में रामपुकारिया नामक एक कुंड है। इन ५६ कुंडों के दर्शन में तीन चार दिवस लग जाते हैं।

नन्दबाग—नन्दगाँव की पूर्व सीमा पर है। इस मार्ग में होकर श्री राधिकाजी यावट से नन्दालय को आती थी ॥

पावनसरोवर— इस सरोवर में स्नान कर पर्वत के ऊपर नन्द, यशोदा का दर्शन करने की विधि है । यह सरोवर श्रीकृष्ण का अत्यन्त प्रिय था तथा इसमें आप सखा-सखियों के साथ नित्य जल विहार करते थे । यह नन्दगाँव के उत्तर में पर्वत से उतर कर कामा की रास्ता के बगल में है । "नमः पावनरूपाय देवानां कल्मषापहम् । नन्दादिपावनायैव तीर्थराज नमोऽस्तु ते" इस मन्त्र का उच्चारण करके १६ वार मज्जन नमस्कार करें ॥

तडागतीर्थ—देवमीढ़ नामक एक मुनि रहे, उनकी क्षत्रिया तथा वैश्या दो पत्नी थीं । पहली क्षत्रिया पत्नी से शूर तथा दूसरी वैश्या पत्नी से पर्ज्जन्य उत्पन्न हुए। शूर जी से वसुदेवादि क्षत्रिय पुत्र हुए थे । पर्ज्जन्य जी वैश्य रहे तथा कृषि-गोरक्षादि उनका व्यवसाय रहा। पर्ज्जन्य जी अपनी पत्नी वरीयसा के साथ नन्दीश्वर में निवास करते रहे । श्रीनारद जी भ्रमण करते करते एक

समय वहाँ आये तथा आप ने पर्ज्जन्य जी को लक्ष्मी-नारायण मन्त्र की दीक्षा दी। पर्ज्जन्य जी उत्तम सन्तान कामना करते हुए तडागतीर्थ के ऊपर पवित्र स्थान बनाकर गुरुमन्त्र की साधनादि करने लगे। उस तडागतीर्थ में त्रिसन्ध्या स्नान कर तथा त्रिसन्ध्या देवार्च्चन करते हुए नारायण का ध्यान करते थे। एकदा आकाश-वाणी हुई कि "हे पर्ज्जन्य ! तुम परम भाग्यवान हो। तुमने अत्यन्त निविष्ट मन से तपस्या की है। तुम्हारे गुण के सागर पाँच पुत्र होंगे। उनमें से मध्यम पुत्र नन्द नामक होगा, उनके सर्व-विजयी, सुरासुरगण के मस्तक रत्नों से पूजित, ब्रजवासि मात्र के आनन्ददायक श्रीहरि पुत्र रूप से प्रकट होंगे"। इस प्रकार पर्ज्जन्य जी अभीष्ट साधन करते हुए नन्दीश्वर पर्वत में विराज करते थे। पश्चात् ब्रज में केशिदैत्य का उपद्रव से भीत होकर वहाँ से महावन में जाकर वास करने लगे। वहाँ आकाशवाणी के अनुसार उनके पाँच पुत्र हुए। वहाँ ही मध्यम पुत्र नन्द जी के श्रीकृष्ण पुत्र रूप से प्रकट हुए॥

चुणहारसरोवर—

धोयानिकुण्ड—नन्दगाँव के ईशानकोण में है। दधिवर्त्तन धोकर यहाँ उसके जल को रखते थे। अतः "धोकर" इस शब्द से कुण्ड का नाम धोयानिकुण्ड पड़ गया॥

कृष्णकुण्ड—यहाँ कदम्बखण्ड है। श्रीकृष्ण यहाँ जलक्रीड़ा करते थे॥

ललिताकुण्ड—यहाँ ललिता जी छल से राधिका को लाकर श्रीकृष्ण के साथ मिलाती थी तथा यह श्रीललिता का विलास-स्थान है और नन्दगाँव के पूर्व में है॥

सूर्यकुण्ड—ललिताकुण्ड के पास है। यहाँ सूर्यनारायण श्रीकृष्ण का दर्शन कर अधैर्य हो गये थे॥

विशाखाकुण्ड—ललिताकुंड के अग्निकोण में कुछ दूर पर यह कुंड मौजूद है। यहाँ विशाखा जी नानानुसन्धान के द्वारा दोनों का मिलन कराती थीं॥

पौर्णमासीकुण्ड—यह विशाखाकुंड के कुछ दूर पर नैर्ऋत-कोण में तथा नन्दगाँव के अग्निकोण में मौजूद है। यहाँ पौर्णमासीजा का कुटीर है। आप ब्रज में मान्यगण्या बृद्धा मानी जाती थीं। नन्दादिक ब्रजवासीगण इन्हीं की मन्त्रणा से सब कुछ करते थे। आप भगवती लीलाशक्ति योगमाया का अवतार हैं। अवन्तीपुरी निवासी सान्दीपनी मुनि की आप माता तथा नारजी की प्रियशिष्या हैं। आपका केश शुभ्रवर्ण था तथा आप रक्तवर्ण वस्त्र धारण करती हुई तपस्विनी वेश में रहती थीं। श्रीकृष्ण का जन्म होने के उपरान्त आप अवन्तीपुरी को छोड़कर ब्रज में वास करने लगीं। संग में सेवा के लिये मधुमङ्गल रहता था। आप नित्य प्रातःकाल नन्दालय में आकर श्रीकृष्ण का दर्शन कर ब्रजेश्वरी के लिये आशीर्वाद देती थी। राधाकृष्ण लीला की सहायकारिणी पौर्ण-मासी जी मानी जाती है॥

नान्दीमुखीआलय— नान्दीमुखी सखी का वास स्थान है। आप सान्दापनी मुनि की कन्या थीं। श्रीकृष्ण के गुणों का श्रवण कर उत्कण्ठित चित्त से अवन्तीपुरी को छोड़कर ब्रज में आकर पौर्ण-मासीजी के निकट रहने लगीं। आप कृष्ण-लीला की सहाय-कारिणी परम चतुरा हैं॥

यशोदाकुण्ड—यशोदाजी यहाँ विराजमान होकर रामकृष्ण दोनों की क्रीड़ा का दर्शन करती हुई परम आनन्द को प्राप्त करती थीं। इस कुंड के निकट नृसिंहजी की मूर्ति है। जिसके दर्शन से समस्त आपत्ति दूर हो जाती है। उसके पश्चिम में करेल कुंड है।

यहाँ श्रीकृष्ण विराजमान होकर करेलवन की शोभा देखते थे ॥

पदचिन्हस्थान व चरणपहाड़ी—यहाँ श्रीकृष्ण के चरणों का चिह्न तथा अन्य चिन्ह बड़े प्रभाव से दर्शन होते हैं ॥

मधुसूदनकुण्ड—पुष्पवनों के बीच में है। यहाँ भ्रमरगण सुन्दर गुञ्जार करते हैं ॥

पाणिहारिकुण्ड—भोजन के समय श्रीकृष्ण इस कुंड का जल पान करते थे। यशोदाजी प्रत्यह परम यत्न के साथ इस कुंड से कृष्ण के पानार्थ जल मगाती थीं। इस कुंड के पश्चिम में कुछ दूर पर बृन्दादेवी का स्थान है। वहाँ बृन्दाजी सर्वदा विराजमान हैं। आप विचित्र वस्त्रधारिणी नाना अलङ्कार से विभूषित, राधा-कृष्ण लीला की सहायकारिणी हैं। यहाँ बृन्दादेवी का मूर्त्ति दर्शन करने पर अवश्य राधाकृष्ण का प्रेमधन प्राप्त होता है ॥

रन्धनागार—यहाँ राधिकाजी नित्य आकर परम उल्लास से रोहिणी जी के साथ कृष्णार्थ रन्धन करती थीं ॥

भोजनस्थल—यहाँ श्रीकृष्ण भोजन करते थे ॥

शयनस्थल—भोजन के उपरान्त शतपद आकर यहाँ श्रीकृष्ण शयन करते थे ॥

राधिकाविश्रामस्थल—श्री राधिका रन्धन के उपरान्त श्रीकृष्ण का भुक्तावशेष पाकर इस बाग में विश्राम करती थीं। यहाँ ही सखियाँ अलक्षितरूप से श्रीकृष्ण को उनके साथ मिलाती थीं। इस स्थान का नाम राधाबाटी है ॥

वनगमनस्थान—यहाँ से यशोदा रामकृष्ण को वनवेश से सज्जित करा कर व्याकुलचित्त में बन के लिये बिदाय देती थीं ॥

गोचारणगमनमार्ग—रामकृष्ण सखाओं के साथ गोचारण के लिये इस मार्ग में होकर बनको जाते थे ॥

राधिकाविदायस्थल—यशोदाजी राधिका को गोद में बैठा कर रोती हुई अपने घर के लिये बिदाय देती थीं ॥

दधिमन्थनस्थान—यहाँ यशोदजी दधि मन्थन करती थीं ॥

पौर्णमासीजी का गमन पथ—इस मार्ग में होकर पौर्णमासी-जी नन्दालय के लिये आती थीं ॥

साहसिकुण्ड—यहाँ सखियाँ श्रीकृष्ण के साहस देती हुई राधिकाजी को मिलाती थीं। उसके पास एक वटवृक्ष मौजूद है । वहाँ राधाकृष्ण विचित्र दोला बँधवाय कर झूलते थे । किसी किसी दिवस श्रीकृष्ण संकेत करा कर वहाँ राधिका के साथ विलास करते थे ॥

गेंदुखोर—यह नन्दगाँव के वायुकोण में डेढ़ कोस दूर पर है । यहाँ रामकृष्ण सखाओं के साथ गेंद लेकर मत्तता के साथ खेलते थे । वर्त्तमान नाम गेंडो है । पश्चिम में गुप्तकुंड है, वहाँ श्रीकृष्ण सुबलादिसखाओं के साथ गुप्तरूप से नाना रङ्ग करते हुए विचरण करते थे । ग्राम के ईशान में गेंदुकुंड है ॥

कदम्बवन—बलरामजी का बिलास स्थान है । यहाँ बलदेवजी परिश्रान्त होकर शयन करते थे और श्रीकृष्ण उनके पदों का संवाहन करते थे ॥

मुक्ताकुण्ड—यहाँ हो श्रीकृष्ण ने कौतुक करते हुए मुक्ताओं का खेत लगाया था ॥

कृष्णपदचिन्हस्थान—नन्दगाँव को पूर्वदिशा में है । जिसका अक्रूरजो ने प्रणाम किया था । कंस के द्वारा प्रेरित होकर राम-

कृष्ण को मथुरा लेने के लिये अक्रूरजी यहाँ आये तथा नाना प्रकार चिन्ता करते हुए कृष्ण के चरणों का चिन्ह देखकर प्रेम में विह्वल हो गये और वहाँ से धूली उठा कर मस्तक तथा सर्वाङ्ग में लेपन करने लगे। यह अक्रूरस्थल करके प्रसिद्ध है॥

योगियास्थान—यहाँ उद्धवजी ने गोपियों को सान्त्वना देते हुए योगरहस्य सुनाया था। यह नन्दगाँव की पूर्वदिशा में है॥

ऊधोक्यारी—यहाँ उद्धवजी गोपियों का भावचेष्टा देख कर अपने को कृत्यकृत्य मानने लगे। आये तो थे गुरु बन कर उपदेश देने के लिये परन्तु शिष्य बनगये तथा प्रेमरत्नका अनुभव प्राप्त करने लगे। नन्दादिक ब्रजवासियों को प्रबोध देते हुए उनके अद्भुत भावों का दर्शन कर आप अधैर्य हो गये॥

गोचारणविचारस्थल—यहाँ श्रीकृष्ण सखाओं के साथ "किधर गोचारण करने को चलेंगे" इसका विचार करते थे॥

गौशाला—

गोवत्सबाँधने की खूँटी—

मेहेरान—यहाँ अभिनन्दन गोप की गौशाला थी। पर्वत के ऊपर नन्दभवन, नन्दभवन के उत्तर में यशोदानन्दन का मन्दिर तथा नैऋतकोण में राधारमणजी का मन्दिर है। गाँव के दक्षिण में नृसिंहदेवजी हैं। पाणिहारीकुण्ड के पूर्व तथा नन्दीश्वर पर्वत के नैऋतकोण मे श्रीकृष्णचिह्न है। उस स्थान को चरणपहाड़ी कहते हैं। चरणचिह्न के पूर्वभाग में शिलाखण्ड के ऊपर गौ का चरणचिह्न है। उसके ईशान पर्वत के ऊपर मयूरकुटी है। उसके पूर्व में श्रीकृष्ण के नाना प्रकार खेलनचिह्न मौजूद हैं। उनके पूर्व में दोनों के रमणीय उपवेशन स्थान हैं। उसके पूर्व पर्वत

के नीचे तथा नन्दीश्वर के नैऋतकोण में श्रीखिड़कीश्वर महादेवजी हैं। उसके ईशानकोण में नन्दमहल तथा नन्दीश्वर महादेवजी हैं। यहाँ जन्माष्टमी उपलक्ष में तथा होरी उपलक्ष में विशेष कौतुक से मेला होता है। दशमी तिथी में यहाँ होरी होती है, जो अवश्य दर्शनीय विषय है॥

यावगाँव—इसका नाम यावट भी है। इस वट की प्रदक्षिणा पौने कोस है तथा यावटवन की साढ़े दो कोस है। यावट वट के अधीश्वर गोपीश्वर तथा यावट वन के अधीश्वर ब्रजवर हैं। यावटवन के अधीश्वर का मन्त्र "ओं वः यावावटाधिवनाधिपतये ब्रजवराय नमः" और यावटवट के अधीश्वर का मन्त्र "ओं वः यावावटाधिपतये गोपीश्वराय नमः" है। ब्रजभक्तिविलास में वृहद्गौतमीय तन्त्र का वचन उठा कर वर्णन किया गया है कि—श्रीराधिकाजी के चरणों से यावक रस अर्थात् महावर गिरा था। इसलिये यह यावट नाम से विख्यात हुआ है। उस में यावटवट का चिह्न इस प्रकार है। जावट, राधाकुंड, रासमण्डल, पद्मावती-विवाहस्थल हैं यह अत्यन्त रहस्यमय स्थान है। उसमें श्रीराधिकाजी की शास जटिला रहती थी। पुत्र का नाम अभिमन्यु तथा कन्या का नाम कुटिला था। वृषभानुराजा ने पौर्णमासीजा की आज्ञा के अनुसार अपनी पुत्री राधिका को जटिला के पुत्र अभिमन्यु के साथ विवाह दिया था। अभिमन्यु अपने को "मैं राधा के पति हूँ" केवलमात्र ऐसा अभिमान रखता था परन्तु योगमाया के प्रभाव से अभिमन्यु ने राधिका की छाया तक भी स्पर्श नहीं किया। वह प्राय करके गो-गोप समाज में रहता था। जटिला-कुटिला दोनों सर्वदा गृहकार्य में नियुक्ता रहती थीं। सुचतुरा सखियाँ छलकर यहाँ श्रीकृष्ण को लाकर राधिका के साथ विलास कराती थी। वास्तविक विचार में यह परकीयाभाव केवल रसपोषण के

लिये है । क्यों कि श्रीराधा तो श्रीकृष्ण की आल्हादिनी शक्ति-विशिष्टा नित्यप्रेयसी हैं । रावणगृह में सीता की स्थिति की भाँति इसका समाधान किया जाता है ॥

अभिमन्यु का आलय—

मुखरामार्ग—यहाँ मुखरा अपनी नातिनी राधिका को उल्लास के साथ देखती थी ॥

कुटिलादूषणस्थान—यहाँ कुटिला महान् हर्ष से राधिका को दूषण देने में नाना परापर्श करती थी ॥

राधिकागमनपथ—इस मार्ग में होकर श्रीराधिकाजी सूर्यभवन को पूजार्थ जाती थीं। मार्ग में कदम्बकानन है । जहाँ ठहर कर श्रीकृष्ण राधिका को देखते थे एवं भागते हुए उनके वस्त्राञ्चल को खींचते थे ॥

कृष्णकुण्ड—वटों से वेष्टित यह स्थान श्रीकृष्णलीलाओं का पोषण करने वाला है। यह कुंड गाँव के दक्षिण में है ॥

मुक्ताकुण्ड—यहाँ ग्रीष्मकाल में मुक्ता के भूषणों से सखियाँ राधिका को सुसज्जिता करती थीं ॥

पीवनकुण्ड व नन्दी—यह गांव के वायुकोण में कदम्बकानन के बीच में है । यहाँ कौतुकी श्रीकृष्ण ने सखियों का इसारा से श्रीराधिका की अधरसुधा का पान किया था । इससे इस कुंड का नाम पीवनकुंड हो पड़ा है। यह दोनों का सुखमय परम विलास-स्थान है ॥

लाड़िलीकुण्ड—पीवनकुंड के पश्चिम में है । यहाँ ललिताजी गोपन रूप से दोनों का मिलन कराती थी ॥

नारदकुण्ड—लाड़िलीकुंड के पास में है ॥

वरप्राप्तस्थल—यहाँ दुर्वासा ऋषि ने राधिका को अमृतहस्ता होने का अर्थात् "तुम अपने हाथों से जो कुछ रसोई करोगी वे सब अमृतस्वरूप हो जायेंगे। उनका जो कोई भोजन करेगा वह चिर-जीवी होगा" ऐसा वर दिया था। पद्मपुराण में इसका वर्णन है॥

राधिकास्थितिस्थल—यहाँ राधिका ठहरती हुई श्रीकृष्ण का गोचारणगमन देखती थी॥

गोचारणगमनपथ—इस मार्ग में होकर श्रीकृष्ण गोचारण करने को जाते थे। यहाँ दोनों दोनों को अलक्षित रूप से दृष्टिपात करते थे।

गाँव के पश्चिम राधाकान्त तथा पूर्व में किशोरीजी का मन्दिर तथा किशोरीकुण्ड है। यह गाँव के ईशानकोण में है। उसके दक्षिण तथा गाँव के अग्निकोण में सिद्धकुण्ड, उसके नैऋत तथा गाँव के दक्षिण में कुण्डलकुण्ड, (नामान्तर नीपकुण्ड) उसके उत्तर में कृष्णकुण्ड, (नामान्तर वस्त्रकुण्ड) उसके पश्चिम में मुक्ताकुण्ड, (नामान्तर गहेना) उसके नैऋत में वत्सखोर, उसके उत्तर में डहरवन, उसके उत्तर में युगलकुण्ड, उसके उत्तर में विल्वलकुण्ड, उसके पश्चिम में बेरिया (बेर), उसके उत्तर में पानिहारीकुंड, पानिहारिकुंड के अग्निकोण में तथा विल्वलकुंड के ईशान में लाड़लिकुंड, उसके ईशान में नारदकुंड, उसके पूर्व में धर्मकुंड, उसके दक्षिण में पारलगङ्गा है। पारलगङ्गा यावट के वायुकोण में है। कुंड के पश्चिमतट में प्राचीन पारिजात नामक वृक्ष है। वैशाखमास में वह प्रस्फुटित होता है ऐसा कथित है—श्रीराधा ने स्वयं ही उसे लगाया था॥

वर्त्तमान दर्शनीयस्थान—किशोरीकुण्ड, चीरकुण्ड, हिंडोले का स्थान (अर्थात् हिंडोलाकार से बनी हुई वृक्षावली है)। ये सब

गाँव के पूर्वदिशा में हैं। पश्चिमदिशा में पाडरकुंड है, उसके सामने नरकुंड है। यहाँ पाँचों पाण्डव तथा नारायण के वृक्ष है। गाँव के पश्चिम भाग में उच्च मन्दिर है। जिसमें जटिला-कुटिला, अभिमन्यु की मूर्त्तियाँ हैं। किशोरीजी का दर्शन है। किशोरीकुंड के ऊपर सिद्ध जगन्नाथदास बाबाजी महाराज का भजन-स्थान है। यावट के पूर्व में राधामन्दिर है ऐसा वृन्दावनयात्रापरिक्रमा-ग्रंथकार का कथन है। उनका और भी कहना है कि यावट में एक सिद्ध सरोवर है जिसके तट पर जाबट मौजूद है॥

कोकिलावन—यह यावट की पश्चिमदिशा में एक मील दूर पर मौजूद है। यहाँ कोकिलगण निरन्तर गुञ्जार करते रहते हैं तथा यह परम रमणीय स्थान है। इस वन के अधीश्वर नटवर जी हैं तथा "ओं क्लीं कोकिलवनाधिपतये नटवराय स्वधा" यह उन का मन्त्र है। इस वन की प्रदक्षिणा पौने दो कोस है। ब्रजभक्ति-विलास में इसका चिन्ह इस प्रकार है—"कोकिलावन है उस में रत्नाकर सरोवर है, रासमण्डल है"।

प्रसंग—एकदिवस रात्रि में श्रीकृष्ण ने राधिका के प्रांगण के पास एक बेर के वृक्ष पर गुप्तरूप से रह कर कोकिल के समान शब्द किया। उस शब्द का श्रवण कर राधिकाजो उनसे मिलने के लिये त्वरा हुईं। आप द्वार का उद्घाटन करने लगीं, जिससे हाथों के कंकण शब्द करने लगे। उसे सुनकर जटिला जाग उठी तथा कौन है कौन है ऐसा वारवार बोलने लगीं। इस प्रकार भय से श्रीकृष्ण समस्त रात्रि उस वेर के वृक्ष में विताने लगे तथा दोनों का मिलन नहीं हुआ। उज्ज्वलनीलमणि तथा पद्यावली में श्रीरूप-गोस्वामीचरण ने प्राचीन एक श्लोक का उद्धरण देकर वर्णन किया है यथा—

पद्यावल्याम्—

"संकेतीकृतकोकिलादिनिनिदं कंसद्विषः कुर्वतो
द्वारोन्मोचनलोलशङ्खवलयक्काणं मुहुः शृण्वतः ।
केयं केयमिति प्रगल्भजरतीवाक्येन दूनात्मनो
राधाप्राङ्गणकोणकोलिविटपिक्रोडे गता शर्वरी ॥" इत्यादि

ब्रजभक्तिविलास में—

"देवर्षिकिन्नराकीर्ण कोकिलानिर्म्मिताय च ।
वनायाल्हादपूर्णाय नमस्ते सुस्वरप्रद !" ॥

इस मन्त्र का ६ वार पाठ कर वन का नमस्कार करें ।

"रासक्रीडाप्रदीप्ताय गोपीरमण सुन्दर ! ।
नमः सुखमनारम्यस्थलाय सिद्धिरूपिणे" ॥

इसका १३ वार पाठ कर नमस्कार करें ।

दिनान्तर में श्रीकृष्ण ललिता का संकेत के अनुसार इस वन में आकर वंशीध्वनि के द्वारा कोकिल को भाँति शब्द करने लगे । उधर राधिकाजी सखियों के साथ मिलनार्थ वहाँ आईं तथा दोनों का वहाँ मधुर मिलन हुआ । यहाँ रत्नाकर-सरोवर तथा रास-मण्डल है ॥

"सख्याः क्षीरसमुद्भूत रत्नाकरसरोवरे ! ।
नानाप्रकाररत्नानामुद्भवे वरदे नमः ॥"

इस मन्त्र का १७ वार पाठ कर स्नान करें ॥

आँजनौक— यह विशाखाजी का निवासस्थान है-"अञ्जपुरे समाख्याते सुभानुर्गोपः संस्थितः । देवदानीति विख्याता गोपिनी निमिषसुता ॥ तयोः सुता समुत्पन्ना विशाखा नाम विश्रुता ॥" सुभानु गोप तथा देवदानी नामक गोपी से विशाखाजी का जन्म यहाँ हुआ है । यह नन्दगाँव से अढ़ाई कोस पूर्व-दक्षिण कोण में

है। प्रसंग—एक दिवस श्रीराधिका निर्ज्जन में बैठ कर सखियों के द्वारा वेशभूषा पहनती थीं। केवल नेत्रों में अञ्जन लगाने का अवशेष रहा, उधर श्रीकृष्ण की बंशीध्वनि अचानक हुई। राधिका जो बंशीध्वनि के सभ्रम से उन्मत्ता होकर अञ्जन नहीं लगाती हुई वहाँ से चल पड़ी तथा प्राणबल्लभ से मिलने लगीं। श्रीकृष्ण उनको पुष्पासन पर बैठा कर उनके अंग प्रत्यंग की शोभा का निरीक्षण करने लगे। नेत्रों में अञ्जन न देख कर अपने सखियों को इसका कारण पूछा। सखियों ने समस्त वृत्तान्त सुनाया। अनन्तर श्रीकृष्ण रसावेश में आकर स्वयं उनके नेत्रों में अञ्जन पहनाय कर दर्पण के द्वारा उनकी रूप माधुरी का आस्वादन करने लगे। इसलिये इस स्थान का नाम आँजनौक है। यहाँ रासमण्डल है तथा दोनों की रासलीला हुई है। गाँव के दक्षिण में किशोरी-कुंड है। कुण्ड के पश्चिम तट में अञ्जनशीला है। यहाँ बैठकर श्रीकृष्ण ने राधा को अञ्जन लगवाया है॥

ब्रिजवारी—जब अक्रूर जी रामकृष्ण दोनों भैया को मथुरा ले जाने को आये तब यहाँ मथुरा गमन के लिये दोनों रथ पर बैठे। गोपियाँ अधैर्य होकर एक ही साथ "हा प्राणनाथ" ऐसा कह कर मूच्छित हो धरती में गिरने लगीं। उस समय "स्थिर विद्युतपुञ्ज आकाश से पृथ्वी पर गिरा" ऐसा सबको प्रतीत होने लगा। इस लिये इस स्थान का नाम ब्रिजबारी है। नन्दगाँव के डेढ़ मील अग्निकोण में तथा खायरो के एक मील पश्चिम किंचित् दक्षिण में यह है। ब्रिजबारी, पेसाई, साहार तथा जैत होकर अक्रूरजी अक्रूरघाट में पहुँचे थे तथा वहाँ से मथुरा गये। ब्रिजवारी एवं नन्दगाँव के बीच में अक्रूर स्थान है। जहाँ शीलाखण्ड के ऊपर चरणचिन्ह है॥

परसों—यहाँ रथपर बैठे श्रीकृष्ण गोपियों की दशा से व्याकुल हो कर कहे भेजे कि "मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि परसों यहाँ अवश्य आऊँगा"। अतः परसुं शब्द से इस गाँव का नाम परसों हुआ। गोवर्द्धन बरसाना के रास्ते में है। दोनों सी-परसों पास पास में हैं।

सी—गोपियों की दशा से अधैर्य होकर श्रीकृष्ण ने यहाँ "शीघ्र-ही आऊँगा" ऐसा बार बार कहा था। इस शीघ्र शब्द से यह स्थान सी हो पड़ा है॥

कमाई—विशाखाजी का जन्म स्थान है। यह वर्षाणा से अढ़ाई कोस दूर पर अवस्थित है तथा विशाखा सखी का जन्मस्थान है। कमाई के दक्षिण में सी तथा परसों गाँव है॥

करेहला—ललिताजी का जन्मस्थान है। करोला के पुत्र गोवर्द्धन-मल्ल निज पत्नी चन्द्रावली के साथ यहाँ कभी-कभी रहता था। कभी-कभी सखीथरा में भी रहता था। यहाँ कंकणकुण्ड, कदम्ब-खण्डी, हिण्डोलास्थान, श्रीवल्लभाचार्य, श्रीविट्ठलेश, तथा श्रीगोकुल-नाथजी की बैठक है। यह कमाई से एक मील उत्तर में है। भाद्र पूर्णिमातिथी में बूढ़ीलीला प्रसंग में यहाँ महारास होता है॥

लुधौली—पीसाई से आधा मील पश्चिम में है॥

पीसाई—यहाँ श्रीकृष्ण को प्यास लगी हुई थी बलदेवजी ने जल लाकर उनको दिया था। अतः इस गाँव का नाम प्यासाई है। यहाँ तृष्णाकुण्ड और विशाखाकुण्ड है। गाँव के वायुकोण में मनोहर कदम्बखण्डी है। करेहला से डेढ़ मील उत्तर में पीसाई है॥

सहार—नन्दराय जू के भ्राता तथा प्रियमन्त्री उपनन्दजी का वास स्थान है॥

साँखि—यहाँ शङ्खचूड़ को मार कर श्रीकृष्ण ने उसके मस्तक से

मणि लाकर बलदेवजी को दिया था। पास में रामकुण्ड है। जिस समय श्रीकृष्ण मणि लाये थे उस समय बलदेवजी यहाँ ही थे। इसका नाम रामतला भी है। नरी के एक मील पश्चिम तथा सहार से दो मील उत्तर में है॥

छत्रवन—यहाँ श्रीकृष्ण को राजा बना कर सखाओं ने सर्व्वत्र उनकी दोहाई फिरायी थी कि "नन्दनन्दन ही छत्रपति महाराजा है यहां दूसरे का अधिकार नहीं है। गोपियाँ नित्य आकर बाग-बगीचा का जो नष्ट करती हैं उससे वे सब दण्डनीया हैं"। वन की परिक्रमा सवा दो कोस है। इस वन के अधीश्वर हरि हैं। "ओं व्रीं छत्रवनाधिपतय हरये स्वधा" यह उनका मन्त्र है। इसका नामान्तर छाता है। गाँव के ईशानकोण में सूर्यकुण्ड तथा नैऋतकोण में चन्द्रकुण्ड है। कुण्ड के तट में दाऊजी का मन्दिर तथा गाँव के उत्तर भाग में नारायणदेव का दर्शन है॥

उमराओ—यहाँ गोपियाँ खोज कर श्रीराधिका को उमराओ योग्य नवीन सिंहासन पर बैठा कर उमराय लगी थीं। राधिका ने रत्न-सिंहासन पर बैठ कर सखियों को आदेश दिया कि "जाओ मेरे राज्य का जो अधिकार करना चाहता है उसे पराजित कर मेरे समक्ष बाँध लाओ। गोपियाँ वहाँ से जाकर मधुमङ्गल को बाँध कर राधिका के निकट लाईं। सबने दण्ड अर्थात् प्रहार लेने को मधुमङ्गल से कहा। मधुमङ्गलने कहा-दण्ड तो पीछे देओगी पहले तो मुझ लड्डू खवाइये। तब महारानी राधिका हँस कर "यह पेटार्थी ब्राह्मण है इसे छोड़ देओ" ऐसा कह कर छोड़वाय दीनी। पश्चात् मधुमङ्गल ने श्रीकृष्ण से मिलकर अपने बँध जाने का कारण कहा। श्रीकृष्ण ने मधुमङ्गल के साथ उन पर चढ़ाई कर दी। जब श्रीराधिका ने अपने प्राणबल्लभ श्रीकृष्ण को देखा तब

आप लज्जा करती हुई उस उमराओ वेश के घूँचाने के लिये चेष्टा-शील हुई। सखियों ने रोका। उस समय मधुमङ्गल श्रीकृष्ण को लेकर राधिका के दक्षिण में बैठाय दिये। इस उमराओ शब्द से इस स्थान का नाम उमराओ है। इसको राधास्थली करके भी महानुभावगण कहते हैं। पश्चात् पौर्णमासी जी आकर राधिका को महारानी रूप से अभिसिक्त कराने लगीं। यहाँ किशोरीकुंड है, तथा श्रीपादलोकनाथ-गोस्वामीजी का भजनस्थान है। राधा-विनोदजी यहाँ से ही प्रकट हुए थे तथा आप ने गोस्वामीजी को कृपा की। वर्त्तमान यह स्वरूप जयपुर में विराजमान है। यह गाँव खाँपुर से दो मील दक्षिण में है। यावट से दो मील पूर्व्व में धनशिगा है। वह धनिष्ठा सखी का गाँव है। धनशिगा के चार मील उत्तर में (किञ्चित् पश्चिम में) कोसी नामान्तर कुशस्थली है। गाँव के पश्चिम में गोमतीकुंड है। यहाँ श्रीकृष्ण-ने नन्द महाराज को द्वारकाधाम दिखाया था। साँखि से डेढ़ मील उत्तर में आरवाड़ी है। आरवाड़ी के एक मील उत्तर तथा छाता के तीन मील दक्षिण पश्चिम अंश में रणवाड़ी है। यहाँ रङ्गयुद्ध हुआ था। यहाँ पौष अमावस्या के दिवस सिद्ध कृष्णदास बाबाजी महाराज का उत्सव होता है। उन्होंने श्रीकृष्णविरह में अति आश्चर्य रूप में देह त्याग किया है॥

नरी सेमरी—इनका पूर्वनाम श्यामरी किन्नरी है। मानिनी श्रीराधिका के मान का भंग नहीं देखकर सखियों के परामर्शानुसार श्रीकृष्ण श्यामासखी बन कर वीणा बजाते हुए आये तथा आप "मैं स्वर्ग की किन्नरी हूँ" ऐसा परिचित देने लगे। श्रीराधिका वीणा-वाद्य सुनकर विह्वला हो गईं तथा अपनी रत्नमाला देने को सखी से कहने लगीं। श्रीकृष्ण ने मानरत्न को ही माँगा। तब श्री-

राधिका जी प्रसन्न होकर उनसे मिलीं । अतः इन स्थानों का नाम नरी-सेमरी हो गया । किन्नरी-श्यामरी का अपभ्रंश नरी-सेमरी हैं। सेमरी में देवी का प्रभाव अत्यधिक है । बृन्दावनलीलामृत में ऐसा कथन है कि—नरी गाँव का नाम हरी शब्द से हुआ है। जब श्रीकृष्ण-बलराम मथुरा के लिये चलने लगे तब ब्रजगोपियाँ मथुरा-भिमुख में निरीक्षण करती रहीं। उधर अक्रूरजी रथ चलाते रहे। वे जब तक रथ को देखती रहीं तब तक वहाँ खड़ी रहीं । जब रथ देखने में नहीं आया तब सब हरि-हरि कह कर धरती में गिरीं। वज्रनाभजी ने वहाँ जो गाँव बैठाया वह गाँव ब्रज में हरि करके प्रसिद्ध हुआ। अब उसका नाम नरी हो गया है । वहाँ बलरामजी का स्थान भी है । इसके उत्तर में छत्रवन है । नरी में नरोदेवी और किशोरीकुण्ड है, सेमरी में नारायणकुण्ड है। सेमरी में यूथेश्वरी श्यामला का घर था । छाता से चार मील अग्निकोण में सेमरी है । सेमरी में चैत्र शुक्ला अष्टमी तिथी में विशेष मेला होती है । नरी में बलदेवजी तथा संकर्षण कुण्ड है । सेमरी के पास ही रेलपटरी के दक्षिणदिशा में एक मील दूर पर नरी है ॥

खदिरवन—वर्त्तमान नाम खायरो है । यह यावट से डेढ़ कोस अग्निकोण में तथा छाता से डेढ़ कोस दक्षिण में है । यहाँ के अधीश्वर नारायणजी हैं तथा "ओं ह्रां खदिरवनाधिपतये नारायणाय स्वाहा" यह षोलहाक्षर उनका मन्त्र है । वनकी परिक्रमा सवा कोस है। भाद्र शुक्ला चतुर्थी में खदिरवन की परिक्रमा विधि है । वहाँ नाना प्रकार की गोचारण-लीला हुई थी । यहाँ संङ्गमकुंड है। जहाँ गोपियों के साथ श्रीकृष्ण का संगम हुआ था। भूगर्भगोस्वामीजी के साथ यहाँ बीच-बीच में लोकनाथगोस्वामीजी रहते थे। पास में कदम्बखण्डि है जो परम मनोहर स्थान तथा

श्रीकृष्ण-बलराम, सखाओं का विहारस्थान है । वृन्दावन से पश्चिम में नै कोस दूर पर यह वन है। खज्जूर पकने के समय श्रीकृष्ण सखाओं के साथ यहाँ गोचारण करने को आते थे । जिस समय वकासुर श्रीकृष्ण को ग्रास करने को आया था उस समय सब ने आर्त्तनाद से 'खायोरे-खायोरे" ऐसा चिल्लाया था । अतः गाँव का नाम खायरो हुआ है । गाँव के उत्तर में संगमकुण्ड है, कुंड के उत्तर तट में रासमण्डल तथा कदमखंडी हैं। कुंड के उत्तर तट में श्रीलोकनाथगोस्वामी तथा भूगर्भगोस्वामी की भजन-कुटी है ॥

वकथरा—यावट के पास खायरो तथा आँजनोक के बीच में है । यहाँ श्रीकृष्ण ने वकासुर को मारा था। गाँव का नामान्तर चिलचि है। वकासुर के चोंच पकड़ कर श्रीकृष्ण ने चीरा था अतः गाँव का नाम चिलचि है ॥

नेओछाक—यहाँ सखाओं के साथ श्रीकृष्ण भोजन करते थे। माता यशोदा उनके लिये क्षीर-सर भेज देती थीं । ब्रज में छाक शब्द का अर्थ भोजन-सामग्री है। इस प्रकार अन्य सब गोपबालकों की माताएँ अपने-अपने पुत्र के लिये भोजनसामग्री भेजती थीं । नेओछाक से इस स्थान का नाम नेओछाक पड़ा हुआ है ॥

भण्डागोर—अब इसका नाम भादावलि है । रणवाड़ी से दो मील वायुकोण में है। भादावली के १ मील दक्षिण में खाँपुर है ॥

बैठान—(बठैन) यहाँ गोपगण बैठ कर विविध परामर्श करते थे । अतः इसका नाम बैठान है । अब छोटे बैठान तथा बड़े बैठान करके प्रसिद्ध है। दोनों यावट के उत्तर में पास-पास मे हैं। सनातन गोस्वामीजी यहाँ रहे भी थे उनके प्रेम में मोहित होकर ब्रजवासियों ने यहाँ कुछ दिवस बास करने के लिये उनको रोका

था। बड़े बैठान के अग्निकोण में कृष्णकुण्ड है जो श्रीकृष्ण का परमप्रिय है। बड़े बैठान के उत्तर में छोटे बैठान है। उसमें मनोहर कुन्तलकुंड है। यहाँ श्रीकृष्ण ने अपने केशों को सुसज्जित किया था। वर्त्तमान बड़े बैठान के कुंड का नाम बलभद्रकुण्ड तथा छोटे बैठान क कुण्ड का नाम कृष्णकुंड है। बड़े में दाऊजी का मन्दिर और छोटे में साक्षीगोपाल का मन्दिर है॥

बड़ोंखोर—बैठान के पश्चिम में है। यहाँ राधा-कृष्ण दोनों ने कुञ्ज के द्वार रुद्ध कर विलास किया था। वर्त्तमान नाम बैन्दौखर है। यहाँ चरणगङ्गा, चरणपहाड़ी हैं। चरणपहाड़ी में सूर्य-चन्द्र-गौ-घोड़ा तथा ठाकुरजी के चरणों के चिह्न हैं। पोढ़ानाथजी का दर्शन, गायों का खिड़क है॥

चरणपहाड़ी—गौओं को बुलाने के लिये इस पर्वत में वृक्ष के नीचे श्रीकृष्ण त्रिभंग होकर बंशी बजाते थे। उस समय बंशी-ध्वनि से पर्वत पिघल जाता था। अतः पर्वत में जहाँ तहाँ सब का चिह्न पड़ गया है। स्वयं श्रीकृष्ण के भी चरणों का चिन्ह मौजूद है। इसलिये इस पर्वत को चरणपहाड़ी कहते हैं। बैठान के ईशान में यह पर्वत विराजमान है। पास में कृष्णकुण्ड है। चरणपहाड़ी में चरणगङ्गा है जहाँ श्रीकृष्ण ने चरण धोये हैं। चरणपहाड़ी तथा कोटवन के बीच में राँसोंली है जो श्रीकृष्ण के शारदीय रासस्थान है॥

हारोयालगाँव—यहाँ पाशकक्रीड़ा में राधिका ने श्रीकृष्ण को हराया था इसलिये इस स्थान का नाम हारोयाल है॥

सातोआ—यहाँ शान्तनु मुनि ने श्रीकृष्ण की आराधना की थी॥

सूर्यकुण्ड—

वाद्यशिला—

नन्दकूप—

पाईगाँव—यहाँ सखियों के साथ श्रीराधिका, कृष्ण को ढूँढ़ती हुई उनको प्राप्त हुई थीं । श्रीकृष्ण को प्राप्त किया इससे इसका नाम पाईगाँव है ॥

अजानकगढ़—

चलनशीला—यहाँ श्यामरायजी प्रेम में आकर चल नहीं सके तथा प्रेम के महान् आवेग में आकर यहाँ शीला के ऊपर बैठ गये। चल न पाये इस से इस शीला का नाम चलनशीला है ॥

कामर—यहाँ श्रीकृष्ण काम में व्यस्त होकर राधा के पथ की तरफ चाहें थे। काम में व्यस्त होकर इसी से इस स्थान का नाम कामर हो पड़ा है। इस में गोपीकुण्ड, गोपी-जलविहार, हरिकुंड, मोहनकुंड, मोहनजी का मन्दिर, दुर्वासाजी का मन्दिर है ॥

विछोर—यहाँ दोनों नाना प्रकार लीला-विलास करने के उपरान्त अपने अपने घर के लिये जाने लगे । यहाँ दोनों का विच्छेद हुआ अतः इस स्थान का नाम विछोर है। यह कोसी से पाँच कोस दूर पर पश्चिम-दक्षिण कोण में है।

तिलोयार—यहाँ क्रीड़ा रत दोनों का तिलमात्र भी विश्राम नहीं था, अतः तिलमात्र इस शब्द से तिलोयार हो पड़ा ॥

शृङ्गारवट—श्रीकृष्ण ने यहाँ विविध प्रकार राधिका का शृङ्गार किया था। पास में दहकामल गाँव है ॥

ललापुर—वर्त्तमान इसका नाम लालपुर है। कोसी से तीन कोस दूर पर पश्चिम-दक्षिण कोण में है ॥

वासोली--यहाँ भ्रमरगण श्रीकृष्ण के अङ्ग का सुवास प्राप्त होकर उन्मत्त हो गये थे ऐसा कि जगत का धैर्य नाश हो गया । अतः वास शब्द से इस स्थान का नाम वासोली चल पड़ा । यहाँ सर्वदा दोनों होरी खेल में मत्त होकर प्रेमानन्द में मग्न हो जाते थे । नाना गन्धवासों को लेकर होरी खेलते थे उन गन्धवासों से वहाँ सर्वत्र सुगन्धिवासों का उद्गार होने लगा था अतः वह स्थान वासोली करके प्रसिद्ध हुआ । यह शेषषायी के दोमील उत्तर में है ॥

पयगाँव--सखाओं के साथ श्रीकृष्ण ने यहाँ पयः पान किया था इसलिये यह स्थान पयगाँव करके प्रसिद्ध हुआ । यह कोसी से छं मील पूर्व में हैं । गाँव के उत्तर में पयो-सरोवर तथा कदम्ब-तमालों से शोभित मनोहर कदमखण्डी है ॥

कोटरवन--अब इसका नाम कोटवन है । कोसी तथा होड़ल के बीच में सड़क के ऊपर लगभग अढ़ाई कोस दूर पर है तथा चरण-पहाड़ी से चारि मील उत्तर किञ्चित् पूर्व में है । यहाँ शीतलकुंड तथा सूर्यकुंड है ॥

दधीगाँव--अब इसका नाम दहिगाँव है । यहाँ श्रीकृष्ण ने गोपियों से दही को लूटा था । इसमें दधिकुण्ड, दधिहारी देवी, ब्रज-भूषणमन्दिर, वृक्ष में मुकुट का चिह्न, सात सखियों का क्रीड़ा-स्थान है ॥

शेषशाई--यहाँ क्षीरसागर है । श्रीकृष्ण ने उसमें अनन्तशय्या बनाकर नारायण के आवेश में शयन किया था तथा श्रीराधिका ने लक्ष्मीआवेश में उनके चरणों की सेवा की । एक दिवस श्रीराधिका की विष्णु की क्षीरसागर मे शयनलीला देखने की प्रबल इच्छा हुई । अतः श्रीकृष्ण ने स्वयं इस लीला का दर्शन उन्हें कराया । पास में कदम्बवन है । यहाँ पीढ़ानाथ के दर्शन, हिण्डोले का स्थान,

बल्लभाचार्यजी की बैठक है ॥

खामीगाँव—इसका अन्य नाम खम्बहर है । यह ब्रज की सीमा में मौजूद है । वज्रनाभ ने यहाँ सीमा निर्णयार्थ खम्ब गाढ़ा था । पास में बनचारी गाँव भी है । दोनों गाँव ब्रज की उत्तर-पश्चिम सीमा पर तथा होड़ल से चार मील ईशान कोण में है । वहाँ लक्ष्मी-नारायण तथा महादेवजी का दर्शन है ॥

खयेरो—इसका अन्य नाम खरेरो भी है । यहाँ बलदेवजी ने सखाओं को मङ्गल पूछा था । यह गोचारण स्थान है । शेषशायी से चार मील दक्षिण (किंचित् पूर्व) में है । खरेर के अढ़ाई मील पूर्व में वाछौली है जो पयगाँव से चार मील वायुकोण में है ॥

उजानि—यहाँ बंशीध्वनि सुन कर यमुनाजी उजान बही थी । वाछौलो से ६ मील पूर्व तथा पयगाँव से ४ मील ईशानकोण में है ॥

खेलनवन—यहाँ खेलनवट मौजूद है । इस स्थान को खेलावनतीर्थ भी कहते हैं । यहाँ दोनों भैया ने भोजन-पान भूल कर सखाओं के साथ क्रीड़ा की थी । नामान्तर शेरगढ़ है यहाँ बलरामकुण्ड है ॥

रामघाट—खेलातीर्थ की पूर्वदिशा में शेरगढ़ के पास में है । यहाँ बलदेवजी ने रासलीला की थी । द्वारका से श्रीकृष्ण ने ब्रज-वासियों को सान्त्वना देने के लिये बलराम को भेजा । आप ब्रज में आये तथा नाना प्रकार प्रबोध देकर चैत्र-वैसाख दो मास ब्रज में निवास करने लगे । शङ्खचूड़वध के पहले जो कुछ गोपियाँ बलराम-जी का सन्दर्शन से उनमें अनुरक्ता थीं उन गोपियों को लेकर आपने रासविलास किया । वरुणदेव से प्रेरित होकर वृक्षों से वारुणी सर्वत्र बहने लगी जिसके गन्ध से त्रिभुवन आप्लावित हो गया था । आप प्रियागण के साथ उस मधु का पान कर मदमत्त के साथ रासविलास करने लगे । आप ने उस समय हल से यमुना

का आकर्षण किया । यमुनाजी वहाँ एक धार से आकर बहने लगी। आप ने उस में जल-विहारादि नाना क्रीड़ा की । जब से उस स्थान का नाम रामघाट पड़ा तथा वह स्थान परम मनोहर रूप से ब्रज में प्रसिद्ध हुआ। यहाँ नित्यानन्दप्रभु का आगमन भी हुआ था। आप अपनी विहारभूमि का दर्शन कर विविध भावावेश में नृत्यादि किये थे । पास में कच्छवन है । वहाँ शिशुगण कच्छप की भाँति खेला करते थे । आगे भूषणवन है, जहाँ सखाओं ने मिल कर श्रीकृष्ण को पुष्पों से भूषित किया था । उस से आगे निवारणवन है, जहाँ शृङ्गार का निवारण किया गया है । आगे गुञ्जावन है, यहाँ गुञ्जा की माला बना कर गोपियों ने श्रीकृष्ण का शृङ्गार किया है। आगे विहारवन है वहाँ विहारीजी का दर्शन और विहारकुंड है । रामघाट के पास मनोहर ब्रह्मघाट भी है। जहाँ ब्रह्माजी ने तपस्या के द्वारा बछड़े चुराने का दोष क्षमा कराया था । शेरगढ़ से दो मील दूर पर जमुनातट में रामघाट है । गाँव का नाम ऊवे है : रामघाट के डेढ़ मील पूर्व में बहिदपुर, उसके वायुकोण में भूषणवन, बहिदपुर के अग्निकोण में मिवार-वन, रामघाट के डेढ़ मील नैऋत में विहारवन है । रामघाट में बलरामजी के मन्दिर के पास एक प्राचीन अश्वस्थ वृक्ष है । जो कि बलरामजी के सखा करके प्रसिद्ध है ॥

भाण्डीरवट—इसे अक्षयवट भी कहते हैं। इस वट की छाया में श्रीकृष्ण-बलराम, सखाओं के साथ विविध मल्लयुद्ध करते थे। यहाँ बलदेवजी ने प्रलम्बासुर को मारा था। श्रीराधिका के साथ श्री-कृष्ण का भी यहाँ मल्लयुद्ध हुआ था । एक दिवस श्रीराधिका की मल्लयुद्ध देखने की इच्छा हुई । आपने श्रीकृष्ण से कहा कि प्राण-वल्लभ ! आप ने किस प्रकार अपने सखाओं के साथ मल्लयुद्ध

किया तथा श्रीदाम से हार भी गये उसे हम जानने के लिये इच्छुका हैं। श्रीकृष्ण कहने लगे नहीं वह सब मिथ्या प्रवाद है, त्रिजगत् में मुझे कोई नहीं जीत सकता है। मल्लयुद्ध में मैंने श्रीदाम से कभी नहीं हारा। तब राधिकाजी कहने लगीं आज हम आपके साथ मल्लयुद्ध करने को चाहती हैं। ऐसा ही हुआ, सबने मल्ल-वेश का धारण किया और दोनों में मल्लयुद्ध हुआ। यह स्थान परम मनोहर है तथा यह रामघाट से दो मील दक्षिण में है। अक्षय-वट के पश्चिम में काश्रट गाँव है। काश्रट (मल्लयुद्ध) खेला के कारण इसका नाम काश्रट है। काश्रट गाँव के दो मील नैऋत-कोण में आगिरारो गाँव (मुञ्जाटवी) है। मतान्तर में आरागाँव ही मुञ्जाटवी है॥

आरा व आगियारागाँव— यह गोचारण स्थान है॥

मुञ्जाटवी—यहाँ श्रीकृष्ण ने दावाग्नि का भक्षण किया था॥

ईषिकाटवी—जहाँ श्रीकृष्णने दावाग्नि का पान किया था वह यह स्थान है। यमुना के उस पार में भाण्डार गाँव है वह मुञ्जाटवी करके लोगों में प्रसिद्ध है॥

तपोवन—अक्षयवट की पूर्वदिशा में है। यहाँ गोप-कन्याओं ने "श्रीकृष्ण पति हों" इस कामना से तपस्या की है॥

गोपीघाट—यहाँ गोपियाँ आकर यमुना में स्नान करती थीं॥

चीरघाट—गोपियों ने कात्यायनिदेवी को पूजा की थी। यहाँ श्री-कृष्ण ने गोपियों का वस्त्र-हरण किया था। अक्षयवट से दो मील दूर पर यह स्थान है। यहाँ कात्यायनिदेवी का मन्दिर है। गाँव के नाम शियारो है॥

नन्दघाट— यहाँ वरुण ने नन्दराय का हरण किया था। श्रीजीव-

गोस्वामीजी, श्रीरूपगोस्वामि के द्वारा शासनार्थ वर्जित होकर यहाँ एक मगर का गर्त्त में कुछ दिवस रहे थे। वहाँ ही आपने षट्सन्दर्भ ग्रंथ की रचना की तथा आपके नाम से ही वह गुफा प्रसिद्ध हुई। शेरगढ़ से यह स्थान ७ कोस दूर पर तथा चीरघाट से तीन मील दूर पर है। नन्दघाट से चार मील दक्षिण हाजरागाँव है। वहाँ ब्रह्मा ने अपने द्वारा अपहृत गोप-बालकों को श्रीकृष्ण के निकट हाजिर किया है। हाजारागाँव से एक मील दूर वारारा है। जहाँ ब्रह्मा ने गोवत्सों का हरण किया है। इसके दो मील दूर में जेओलाइ व जनाइ गाँव है॥

भै—यहाँ नन्दरायजी वरुण से भय प्राप्त हुए थे इसलिये वज्रनाभ-ने इस स्थान का नाम भै रखा। चीरघाट से दो मील दक्षिण किञ्चित् पूर्वदिशा में गांग्रली गाँव है। भयगाँव नन्दघाट से संलग्न है॥

वत्सवन—यहाँ ब्रह्मा ने वत्सों का हरण किया था अतः इस स्थान का नाम वत्सवन है। नन्दघाट से दो कोस दूर पर नैऋतकोण में यह है। यहाँ वत्सविहारीजी का मन्दिर, ग्वालमण्डली का स्थान, ग्वालकुण्ड, हरिबोलतीर्थ, बल्लभाचार्य्यजी की बैठक है॥

उनाइगाँव—यहाँ श्रीकृष्ण सखाओं के साथ बैठ कर भोजनलीला कर रहे थे, जिस से ब्रह्मा का मोह उत्पन्न हुआ। इसका नामान्तर जनाइ है। यह बाजना से डेढ़ मील दक्षिण में है॥

बालहारा—यहाँ ब्रह्मा ने बड़े हर्ष के साथ बालकों का हरण किया अतः स्थान का नाम बालहारा है॥

परिखम्—ब्रह्मा ने श्रीकृष्ण की परीक्षा की थी अतः इस स्थान का नाम परिखम् है। यह जनाइगाँव से एक मील पश्चिम में है तथा देवीघाटस से दो मील वायुकोण में है। जनाइगाँव में सखायों

के साथ बैठ कर कृष्ण के द्वारा उच्छिष्ट भोजन देख कर उनकी भगवत्ता की परीक्षा के लिये ही ब्रह्मा की इच्छा हुई ॥

सेई—मायामोहित होकर ब्रह्माजी ने शिशु, गोवत्सादि हरण करके गोपन में रखा था । पश्चात् आय कर के कृष्ण के निकट उन शिशुवत्सादिकों को ठीक उसी प्रकार विराजमान देखा तब आपने सेइ (वह) शिशु सेइ (वह) वत्स, इस प्रकार वार-वार कहा । इसलिये उस स्थान का नाम सेई हो पड़ा । पसौली से चार मील दूर पर यह गाँव है । "वह यह वह यह" इस प्रकार वार वार कहा था अतः "वह से सेइ यह से एइ" गाँव हुए । यह परिखम् से डेढ़ मील अग्निकोण में है ॥

चौमुहा—यहाँ ब्रह्मा ने भयभीत होकर सानुताप चारमुख से श्रीकृष्ण की स्तुति की थी । अतः यह स्थान चौमुहा करके प्रसिद्ध हुआ । परिखम् से एक मील पश्चिम में तथा मथुरा से लगभग ४ कोस पश्चिम में मथुरा-कोसी के रास्ते पर है । चौमुहा से एक मील दूर आझई है । यहाँ प्राचीन ब्रह्माजी का दर्शन है ॥

सर्पस्थली—अब इसका नाम सपौली व अघवन है । सर्परूपधारी अघासुर को यहाँ श्रीकृष्ण ने मारा था । सिहाना से चार मील ईशानकोण में व परखम् से दो मील दूर पर वायुकोण में यह है । अब इसका नाम पसौली है ॥

जेंत—जयेति शब्द से जयेंत व जेंत हो पड़ा है । अघासुर की मृत्यु देख कर देवतागण ने तुम्हारी जय हो, तुम्हारी जय हो, इस प्रकार श्रीकृष्ण की वार-वार स्तुति की ॥

सोयानो—अब इसका नाम सिहोना है । सब ने वार-वार "श्रीकृष्ण सियानो है, श्रीकृष्ण सियानो है, क्यों कि सर्परूपधारी महान् अघासुर का आप ने वध किया है" ऐसा कहा था । इस

सियानो शब्द से वज्रनाभ ने इस स्थान का नाम सियानो रखा। आझई से दो मील दूर पर यह स्थान है। यहाँ सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार इन चतुःसनः के विग्रह हैं॥

तरोली—

वरोली—पसोली के दो मील वायुकोण में है तथा श्यामरी गाँव से एक मील पूर्व किञ्चित् उत्तर दिशा में है। यहाँ से तरौली एक मील पूर्व में है। जाने के समय रास्ता में पीठरागाँव आता है॥

कृष्णकुण्डटीला—

तमालवन—

आटस—यहाँ अष्टावक्रमुनि ने तपस्या की थी। यह जनाइ गाँव से चार मील दूर पर है। बृन्दावन से आटस गाँव ६ मील दूर में है। यहाँ से एक मील देवीआटस है जो श्रीकृष्णभगिनी एकानंशा का गाँव है॥

शक्ररोया—यहाँ इन्द्र ने वज्र वृष्टि करने के कारण भय पाया था यहजेओलाई से अढ़ाई मील पूर्व में है तथा इन्द्र का स्थान है॥

वराहर—श्रीकृष्ण ने वराहरूप आवेश से सखाओं के साथ खेला था। गाँव का वर्त्तमान नाम वारारा है। यह हाजरा से एक मील नैऋतकोण में है॥

हारासली—यहाँ रासस्थली है। श्रीकृष्ण ने रास किया था। पास में सुरखुरु गाँव है। सेई के डेढ़ मील ईशानकोण में माई-बसाई दो गांव हैं। माई के ईशानकोण में वसाई है। वसाई के दो मील ईशानकोण में नन्दघाट है॥

भद्रवन—नन्दघाट के अग्निकोण में यमुना के उस पार दो मील दूर पर यह स्थान है। निदाघ के समय यहाँ श्रीकृष्ण ने गोचारण

किया है । इस वन के अधीश्वर हयग्रीव है । "ओं ह्रीं भद्रवनाधिपतये हयग्रीवाय नमः" यह उनका मन्त्र है । भद्रवन की परिक्रमा पौने दो कोस है ॥

भाण्डीरवन—यहाँ श्रीकृष्ण ने विविध लीलाएं की, श्रीराधा ने सुबलवेश में श्रीकृष्ण के साथ मल्लयुद्ध किया था । भद्रवन से दो मील दक्षिण में यह स्थान है। यहाँ भाण्डीरकुंड, श्रीरामचन्द्र का मन्दिर तथा वेणुकूप है। भाण्डीरवन के अधीश्वर श्रीधर हैं तथा "ओं ब्रां भाण्डीरवनाधिपतये श्रीधराय नमः" यह उनका मन्त्र है । भाण्डीरवन में ही भाण्डीरवट मौजूद है। भांडीरवट के अधीश्वरदेव गरुड़वाहनजी हैं । भांडारवन की प्रदक्षिणा दो कोस है जिसमें वट की प्रदक्षिणा आधा कोस है । भाद्रशुक्ला वामन द्वादशी में परिक्रमा की विशेष विधि है। वृन्दावन से जमुना पार ४ कोस दूर पर वायव्यकोण में यह वन है । यहाँ भांडीरकुंड, नामान्तर अभिरामकुंड, कुंड के तट पर श्रीरामचन्द्र मन्दिर है। भांडीरवट में वेणुकूप है। श्रीकृष्ण ने वंशीध्वनि से पाताल में से जल उठा कर सखाओं को जलपान कराया था ॥

छाहेरी—श्रीकृष्ण सखाओं के साथ भांडीर में खेलाकर यहाँ छाया में बैठ नाना भोजन सामग्री भुञ्जते थे । अतः इस छाया शब्द से इसका नाम छाहेरी हुआ है । इसका नामान्तर विजौली है । भांडीरवट के पूर्व में यह गाँव संलग्न है ॥

माटगाँव—माट शब्द का अर्थ दधीमन्थन के लिये निर्मित मृत्तिका के वृहत्पात्र है। उस समय यहाँ माट बनते थे जिन्हें ब्रजवासीगण ले जाकर अपने काम में लगाते थे इस से इस गाँव का नाम माट है । भांडीरवन से दो मील दक्षिण में तथा वृन्दावन से अढ़ाई कोस दूर पर यह गाँव है ॥

पानिगाँव—मानसरोवर के दो मील दक्षिण में है । वृन्दावन से १। मील अग्निकोण में यमुना के पूर्वतीर में यह है जो दुर्व्वासाजो का जन्मस्थान है । श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ यमुना पार होकर उनको भोजन कराया था। गोपियाँ जहाँ यमुना पार हुईं थीं वह घाट पानीघाट है ॥

बेलवन—माटवन के दो मील दक्षिण में तथा वृन्दावन के उत्तर-पश्चिम कोण में जमुना के उस पार में यह गाँव है । यहाँ विल्व-वृक्ष से फल तोड़ने के लिये श्रीकृष्ण सखाओं के साथ आते थे तथा यहाँ गोचारण करते हुये पके पके फलों का भोजन करते थे। यहाँ लक्ष्मीजी ने तपस्या की है। लक्ष्मी की गोपी-सौभाग्य प्राप्ति के लिये प्रबल उत्कण्ठा हुई जिस से यहाँ तपस्या कर रही हैं। भागवत दशमस्कन्ध में इसका वर्णन है। इस वन के अधीश्वर जनार्द्दन हैं। "ओं क्लीं विल्वबनाधिपतये जनार्दनाय नमः" यह उनका मन्त्र है। वेलवन की परिकमा आधा कोस है ॥

कृष्णकुण्ड—वेलवन तथा माटवन के मध्य में डांगोली गाँव है ॥

मानसरोवर—वेलवन से पूर्व्व तीन मील दूर पर है। गाँव का नाम पिप्रोली है । यहाँ से आरागाँव (मुञ्जाटवी) अढ़ाई मील है । दो मील दक्षिण में पानि गाँव है । यहाँ से लोहवन पाँच मील दक्षिण मे है। श्रीमती ने मान किया था तथा उनके नयनों से अश्रु-धारा इस प्रकार बहने लगी कि उस से यह सरोवर बन गया । जो पाणिगाँव के पाँच मील दक्षिण में है। जाने के समय पाणिगाँव के दो मील अग्निकोण में कल्याणपुर पड़ता है। लोहवन के दो मील ईशान में राया है ॥

लोहवन—यहाँ लोहजंघासुर को श्रीकृष्ण ने मारा था । अतः

इसका नाम लोहजंघावन व लोहवन है । यहाँ यमुना के घाट पर श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ नौकाविहार किया था। इस वन के अधीश्वर हृषीकेशजी हैं । "ओं क्लीं लोहजंघानवनाधिपतये हृषीकेशाय स्वधा" यह उनका मन्त्र है । वन की प्रदक्षिणा दो कोस है । यहाँ कृष्णकुंड, लोहासुर की गुफा और गोपीनाथजी का दर्शन है । लोहवन से आगे दक्षिण की ओर बन्दी, आनन्दी देवी हैं । ये दोनों देवियाँ श्रीनन्दराय के यहाँ गोबर थापा करती थीं तथा इसी बहाने से श्रीकृष्ण का दर्शन किया करती थीं । यहाँ बन्दी-आनन्दी कुंड हैं । जो वृन्दावन से चार कोस अग्निकोण में लोहवन मथुरा से यमुना पार होकर पुल की रास्ता में होकर एक कोस उत्तर पूर्व कोण में है ॥

बलदेवस्थल--- अब इस स्थान को सब कोई दाऊजी कहते हैं । यहाँ दाऊजी अर्थात् बलदेवजी विराजमान हैं । ब्रजभक्ति-विलास में इस स्थान का निर्देश इस प्रकार है—"भविष्योत्तर में कहा है—दुग्धकुण्ड, बलदेवभोजनस्थल, युगलभिन्नसम्मुखस्थ मूर्त्ति, त्रिकोण-मंदिर हैं।" इस गाँव का नाम रीड़ा है। अब सब कोई बलदेवस्थल कहा करते हैं । दाऊजी की मूर्त्ति श्याम तथा परम मनोहर है । इनके सामने कोण में रेवती जी हैं । यहाँ क्षीरसागर, नामान्तर संकर्षणकुण्ड है जो कि मन्दिर के पश्चिम में है । बलदेवजी ब्रजनाभ के पधराये हुये हैं। आपने औरंगजेब को चमत्कार दिखाया था तथा आप ब्रजसे बाहर नहीं गये हैं। गाँवके दक्षिणमें मतिकुंड, उत्तर में रेणुककुण्ड तथा रीढ़ागाँव है, दाऊजी का नामान्तर विद्रुमवन है ॥

"रेवतीरमणायैव गोपानां वरदायिने । अन्योऽन्यसम्मुखालोकप्रीतये च नमोऽस्तु ते" इस मन्त्र का पाठ कर बामभाग में रह कर १० वार नमस्कार करें ।

"सुधामयपयस्तुभ्यं हलायुधवरोद्भव !। चिरायुर्वरदायैव दुग्धकुंड नमोऽस्तु ते"। इस मन्त्र का पाठ कर दुग्धकुंड में १० बार मज्जन करें॥

महावन—यह ब्रजराज नन्दराय के पूर्व आलय है। मथुरा से लगभग तीन कोस दूर पर तथा वृन्दावन से ६ कोस अग्निकोण में यमुना के तट पर मौजूद है। ब्रजभक्तिविलास में महावन का चिह्न इस प्रकार निर्देश किया गया है-"विष्णुपुराण में प्रमाण है—नन्दमन्दिर, यशोदाशयनस्थल, ऊखलस्थान, शकटस्थान, भिण्डीरकुटी हैं, यमलार्जुन नामक दो तीर्थ अर्थात् कुंड हैं। वहाँ दामोदर मूर्त्ति है। सप्त-सामुद्रिक कूप है। उसके पास गोपीश्वर नामक महारुद्रमूर्त्ति है। गोकुलचन्द्रमा मन्दिर है। बालस्वरूप गोकुलेश्वर का दर्शन है। उसके पास रोहिणीमन्दिर है। भीतर मे बलदेवजी का जन्म स्थान, नन्दगोष्ठी स्थान, पूतनास्तन्यप्राणचोषण स्थल है। महावन की प्रदक्षिणा चार कोस है। भाद्रमास शुक्लादशमी में यहाँ की परिक्रमा विधि है। महावन के अधीश्वर हलायुधजी हैं तथा "ओं क्ष्रीं महावनाधिपतये हलायुधाय नमः" यह उनका मन्त्र है। इस मन्त्र से जपादि अनुष्ठान की विधि बतलाई गई है।

गोकुल प्रवेश प्रार्थन मन्त्रः—"गोलोकरूपिणे तुभ्यं गोकुलाय नमो नमः। अतिदीर्घाय रम्याय द्वाविंशद्योजनायते" इस मन्त्र का पाठ कर २२ बार नमस्कार करें।

दामोदर-प्रार्थनमन्त्र—"दामबद्धाय कृष्णाय मातृस्नेहसुताय च। नमो दामोदरायैव बालकृष्ण नमोऽस्तु ते॥ षडब्दरूपिणे तुभ्यं दामोदरस्वरूपिणे" इस मन्त्र का पाठ कर ५ वार नमस्कार करें।

महावन के दर्शनीय स्थानों का क्रम भक्तिरत्नाकर ग्रन्थ में इस प्रकार है—जन्मस्थान, जन्म-संस्कारस्थान, गोशाला, नाम-

करणस्थान, पूतनावधस्थान, अग्निसंस्कारस्थल, शकटभञ्जनस्थल, स्तन्यपानस्थल, घूटणी-गमनस्थल, तृणावर्त्तवधस्थल, ब्रह्माण्ड-घाट, आँगन, नवनीतचार्य्यस्थल, देवता-सम्बोधनस्थल, उलूखलबन्धन-स्थल, यमलार्जुनवधस्थल, गोपीश्वर-महादेव, सप्तसामुद्रिककूप, सनातन गोस्वामी के रहने का स्थान, मदनमोहनजी का स्थान, रमणवालू व रमणरेती, गोपकूप, उपनन्दादिकों के वासस्थान, पुरातनवृक्ष, श्रीकृष्ण जन्म की लौकिकविधि का स्थान, गोपीगीत-स्थान, गोपपरामर्शस्थल, बृन्दावन-गमनपथ, सकरौली हैं ॥

वर्त्तमानदर्शनीयस्थान—(१) नन्दमहाराज की दन्तधावन-टीला, (२) उसके नीचे गोपियों की हवेली, (३) पूतनामोक्षण-स्थान, (४) शकटभञ्जनस्थान, (५) तृणावर्त्तवधस्थान, इसके पास नन्दमहाराज की सिंहपौरी, (६) नन्दभवन-दधिमन्थनस्थल, छटीपूजास्थल, अस्सीखम्बा, उसके सामने श्यामलाल का मन्दिर, वहाँ श्रीकृष्ण का नाड़ीछेदनस्थान, उसके निकट नन्दकूप, उसके पास यमलार्जुनभञ्जनस्थान तथा उदूखल, उसके पश्चात् ब्रजराज की गौशाला, यहाँ गर्गाचार्य ने श्रीकृष्ण का नामकरण किया था। उसके आगे रमणरेती है । यहाँ बसुदेव ने श्रीकृष्ण को लाने का समय कुछ समय विश्राम किया। उसके आगे कोलाघाट है ; कोला-घाट के तट पर उथलेश्वर तथा पाडेश्वर महादेवजी हैं। कोलाघाट होकर यमुना पार होने पर आनुमानिक दो मील नैऋतकोण में बादाइ (नामान्तर बाद गाँव) है। यहाँ हरिवंश गोस्वामीजी का जन्म हुआ था। कोलाघाट के डेढ़ मील वायुकोण में नौरङ्गाबाद है। वहाँ से मथुरा पाँच मील उत्तर में है ॥

दाऊजी से पाँच कोस उत्तर की तरफ देवस्पति गोप के रहने का देवनगर स्थान है। वहाँ रामसागरकुण्ड, प्राचीन

वृहत् कदम्बवृक्ष और देवस्पति गोप के पूजने का गोवर्द्धन शिला मौजूद हैं। बलदेवगाँव के पास हतोडागाँव है वहाँ नन्दराय की अथाई (बैठक) है। महावन से एक मील जमुना के तट पर ब्रह्माण्डघाट है। वहाँ श्रीकृष्ण की मृद्भक्षणलीला हुई है। यह स्थान परमरमणीय है। ब्रह्माण्डघाट से यमुना पार मथुरा की ओर कोलेघाट है। जब बसुदेवजी श्रीकृष्ण को लेकर महावन जाने लगे तब वहाँ ही यमुना पार हुए। जिस समय बसुदेवजी गले तक जल में पहुँच गये तथा वहजाने की सम्भावना आ गई तब बालक की चिन्ता से घबड़ाकर कहने लगे "इसे कौन लेवे" इसी से वहाँ वज्रनाभ ने कोलेघाट का नाम धरा। पास में कोलेगाँव है। श्रीकृष्ण जहाँ यमुना को कोल दिये थे वहाँ अब टापू पड़ गया तथा कोलागाँव बैठ गया। यहाँ से कुछ आगे श्रीकृष्ण के कर्णछेदन-स्थान कर्णावल है। वहाँ कर्णवेधकूप, रतनचौक, मदनमोहनजी तथा माधवरायजी के मन्दिर हैं। विद्रुमवन व दाऊजी के एक मील पश्चिम में हातौरा है जो नन्दबाबा का स्थान है। हातौरा के तीन मील पश्चिम तथा यमुना के उत्तरतट में ब्रह्माण्डघाट है। ब्रह्माण्ड-घाट के पूर्व कुछ दूर पर चिन्ताहरणघाट है। वहाँ चिन्तेश्वरमहा-देव का दर्शन है। ब्रह्माण्डघाट से एक मील वायुकोण में महावन है॥

गोकुल—यहाँ नन्दराय की गायों का खिडक है। श्रीवल्लभाचार्य-जी, श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीगोकुलनाथजी की बैठकें हैं। बैठक शब्द का तात्पर्य यहाँ ऐसा है कि जहाँ आचार्य-चरण ने बैठकर श्रीमद्भागवत का पारायण किया है। गोकुलनाथजी प्रायः करके गोकुल में विराजमान करते थे। इनके ठाकुरजी का नाम श्री-गोकुलनाथजी है। यवनों का उत्पीडन के समय अन्य विग्रह सब अन्यत्र चले गये थे, परन्तु गोकुलनाथजी गोकुल में ही रहें।

आपने औरङ्गजेब को अनेक चमत्कार दिखाया था । मथुरेशजी कोटा के लिये, विट्ठलनाथजी नाथद्वारा को, द्वारकाधीशजी कांकरोली को, गोकुलचन्द्रमाजी कामवन को, बालकृष्णजी सूरत को, मदनमोहनजी कामवन को चले गये हैं । वल्लभकुल के गोस्वामी प्रायः करके गोकुल में रहते थे । अतः वल्लभकुल को गोकुलिया गोसाईं भी सब कोई कहा करते हैं । गोकुल में ठाकुरानीघाट है।

वर्त्तमानदर्शनीयस्थान—गोपालघाट, श्रीवल्लभघाट, श्रीगोकुलनाथजी का बाग, बाजनटीला, सिंहपौरे, श्रीयशोदाघाट, पास में विट्ठलनाथजी का मन्दिर, श्रीमदनमोहनजी का मन्दिर, माधवरायजी का मन्दिर, गोकुलनाथ का मन्दिर, नवनीतप्रियाजी का मन्दिर, द्वारकानाथजी का मन्दिर, पास में श्रीब्रह्मछोकरावृक्ष, गोविन्दघाट, टाकुरानीघाट, गोकुलचन्द्रमाजी का मन्दिर, मथुरानाथजी का मन्दिर, नन्दमहाराज की गाड़ी रहने का स्थान हैं । गोकुल के सामने यमुना के उस पार नौरङ्गाबाद है। उसमें गङ्गाजी का मन्दिर तथा यमुना के तट पर गाँव के पूर्व श्रीकृष्णदास बाबा महाराज का स्थान है ॥

सकरौली—यहाँ यमुना पार होने का पश्चात् गोवत्सों का संकलन अर्थात् सम्भाल कर इकट्ठा किये थे । इसलिये इसका नाम सकरौली है ॥

रावल—वृषभानु-महाराज का पूर्ववासस्थान है । यहाँ श्रीराधिकाजी प्रगट हुई थीं । कीर्त्तिदागर्भ से आपका प्रगट यहाँ हुआ था । यहाँ से महाप्रभु गौराङ्गचन्द्र यमुना पार होकर महावन गये तथा सनोड़िया विप्र के साथ यमुनापार कर मथुरा आये थे । यहाँ राधाघाट और लाड़िलीजी का दर्शन है । यह गोकुल से लगभग एक कोस दूर पर उत्तर की तरफ तथा लोहवन से दो मील दक्षिण

दिशा में है। भाद्रशुक्ला अष्टमी तिथी में राधिका-जन्मोपलक्ष में यहाँ मेला होती है।

अम्बिकाबन—यहाँ नन्दादिक गोप सुसज्जित होकर देवयात्रा दर्शन के लिये आये थे। सब ने अम्बिकादेवी तथा गोकर्णमहादेव की पूजा की थी। यहाँ सर्परूपधारी सुदर्शन ने नन्दराय को ग्रास कर लिया था पश्चात् श्रीकृष्ण ने आकर उनको उससे मुक्त किया। वह सुदर्शन श्रीकृष्ण के चरणों का स्पर्श पाकर सर्पशरीर से मुक्त हो निजलोक को चल दिया॥

अक्रूरघाट—यहाँ श्रीकृष्ण ने ब्रजवासियों को बैकुण्ट दिखलाया था। रथ में बैठाकर मथुरा ले जाने का समय अक्रूर ने यहाँ विश्राम किया तथा श्रीकृष्ण के वैभव को देखा। यह तीर्थ सर्वोपरि है, यहाँ अनन्तकोटि तीर्थ मौजूद रहते हैं। सूर्यग्रहण में यहाँ स्नान करने की विधि है।

"विष्णुलोकप्रद तीर्थ मुक्ताक्रूरप्रदायिने।
कृष्णेक्षणप्रसादाय नमस्ते विष्णुरूपिणे॥"

इस मन्त्र का १२ बार पाठकर मज्जनादि करें।

महाप्रभुगौराङ्गदेवजीने लोगोंकी भीड़ से व्यग्र होकर मथुरा से यहाँ आय निवास किया था। यहाँ वृहत्सेन राजा के लिये शान्त ऋषि-ने यज्ञ कराया था। दर्शनीयस्थान-गोपीनाथजी का मन्दिर है। अक्रूरघाट का अन्य नाम ब्रह्महृद है। मथुरा से चारि मील उत्तर में अक्रूर है। गाँव के पूर्व में अक्रूरघाट है। कार्त्तिक पूर्णिमा के दिवस महाप्रभु का आगमन उपलक्ष में यहाँ बड़ा भारी उत्सव होता है। जगविख्यात बाबाजी महाराज (श्रीरामदासजी महाराज) प्रतिवर्ष नवद्वीप से यहाँ आकर मधुर संकीर्त्तन के द्वारा वृन्दावन वासियों को आनन्दित कर जाते थे॥

यज्ञस्थल—अङ्गिरादि मुनियों का यज्ञ करने का स्थान है। श्रीकृष्ण ने गोचारण के समय क्षुधित होकर उनसे भोजन के लिये सखाओं को भेजा था परंतु यज्ञकर्म्म में कर्म्मठ मदान्ध ऋषियों ने अन्नादि देने का निषेध कर दिया॥

भोजनस्थल—वर्त्तमान नाम भतरोल (भतरोड़) है। यहाँ याज्ञिकविप्रों की पत्नियाँ श्रीकृष्ण के लिये सजाकर नाना भोजन सामग्री लाई थीं, श्रीकृष्ण ने बड़े आदर के साथ उनका सौभाग्य वर्णन करते हुए भोजन किया। यह अक्रूरघाट के आगे कुछ उत्तर में हैं। यज्ञपत्नियों के साथ जो लीला है जोकि भागवत में वर्णित है वह कार्तिक पूर्णिमा के दिवस हुई थी॥

यज्ञपत्नीस्थलप्रार्थनामन्त्र—

"ब्रह्मयज्ञाय तीर्थाय यज्ञपत्नीकृताय च।
यज्ञपत्नीमनोरम्य सुस्थलाय नमोऽस्तु ते॥"

इसका पाठ कर १८ वार नमस्कार करें॥

श्रीवृन्दावन—वृन्दादेवी के द्वारा निसेवित होने के कारण इसका नाम वृन्दावन है। यहाँ वृन्दा का अधिष्ठान है। वृन्दाजी का नाम से यह वृन्दाबन करके प्रसिद्ध है। वृन्दावन के अधीश्वर वैकुण्ठ भगवान हैं। "ओं वृन्दावनाधिपतये वैकुण्ठाय नमः" यह उनका मन्त्र है। वृन्दावन की प्रदक्षिणा पाँच कोस की है। वृन्दावन का चिह्न ब्रजभक्तिविलास में इस प्रकार है—"पद्मपुराण का वचन है कि—कालीयह्रद, केशीघाट हैं। अनन्तर चोरघाट है। अथ बंशीवट है। दशाब्द अवस्था प्राप्त श्रीकृष्ण पदचिह्न है। मदनगोपालदर्शन, वृन्दादेवी के साथ श्रीगोविन्ददर्शन है।" भाद्रशुक्लाष्टमी तिथौ में वृन्दावन की परिक्रमा विधि है।

"बृन्दाविपिनरम्याय भगवद्वासहेतवे ।
परमाल्हादरूपाय वैष्णवाय नमो नमः ॥"

इस मन्त्र का एकादशवार पाठ कर प्रणाम तथा उसमें प्रवेश करने की विधि कही गई है। स्कन्दपुराणादि के मत में गोवर्द्धन की स्थिति बृन्दावन में है। इस बृन्दावन में गोविन्दजी का आलय अर्थात् योगपीठ मौजूद है। आदिवाराह-स्कान्द-पाद्म-सम्मोहन-तंत्र तथा अथर्व्ववेदादिक में उल्लेख है कि—श्रीगोविन्ददेव ही श्रीराधिका के साथ बृन्दावन के अधीश्वर हैं॥

आदिवाराह में कहा है—

वृन्दावने तु गोबिन्दं ये पश्यन्ति वसुन्धरे ! ।
न ते यमपुरं यान्ति यान्ति पुण्यकृतां गतिम् ॥

स्कंदपुराण के मथुराखंड में—

तस्मिन् वृन्दावने पुण्यं गोविन्दस्य निकेतनम् ।
तत्सेवकसमाकीर्णं तत्रैव स्थीयते मया ॥
भुवि गोविंदवैकुण्ठं तस्मिन् वृंदावने नृप ! ।
यत्र वृंदादयो भृत्याः संति गोविंदलालसाः ॥
वृंदावने महाबाहु ये दृष्टं पुरुषोत्तमैः ।
गोविंदस्य महीपाल ते कृतार्था महीतले ॥

सनोरख—सौरभिमुनि का तपस्यास्थान है॥

कालियहृद—वर्त्तमान नाम कालीदह है। यहाँ कालीनाग को भगवान् ने दमन किया था। पास में केलिकदम्ब है। इस कदम्ब के ऊपर चढ़ कर श्रीकृष्ण कालिदह में कूदे थे।

"कालीस्तुतिप्रमोदाय ताण्डवनृत्यरूपिणे ।
नागपत्नीस्तुतिप्रीत गोपालाय नमो नमः" ॥

इस मंत्र का ३ वार पाठ कर मज्जनाचमन करें॥

द्वादशादित्यटीला—श्रीकृष्ण कालीनाग का दमन कर इस टीले में आने लगे तथा आप शीतार्त्त हुए। आप को शीतार्त्त जान कर सूर्य ने उग्रताप प्रकाश के द्वारा उन का शीत निवारण किया। एक सूर्य में बारह सूर्य का प्रवेशन हुआ था इसलिये इस स्थान को द्वादशादित्यटीला कहते हैं। श्रीसनातन गोस्वामीजी ब्रज में आकर यहाँ रहते थे। महाप्रभु ने आपको स्वप्न में यहाँ दर्शन दिया था॥

प्रस्कन्दनक्षेत्र—जब सूर्य के ताप से श्रीकृष्ण उत्तप्त हुए तब उन के अंगों से प्रस्कन्दन अर्थात् पसीना निकल कर जमुना में बहने लगा। अतः इस स्थान का नाम प्रस्कंदनतीर्थ हुआ॥

अद्वैतवट—प्रस्कंदनतीर्थ में यह वट मौजूद है। श्रीअद्वैतप्रभु भ्रमण करते-करते यहाँ आये तथा वट के नीचे आपने निवास किया। आप मदनगोपालजी की सेवा करते थे। म्लेच्छों के भय से और कुछ अपनी इच्छा से मदनगोपालजी को मथुरा में किसी एक चौबे के यहाँ गुप्तरूप से रख कर शान्तिपुर के लिये चल दिये। अपनी इच्छा यह थी कि—"नदीया नगर में प्रभु का अवतार होने वाला है अतः शांतिपुर जाना मेरा कर्त्तव्य है।" कालांतर में मदनगोपालजी सनातनगोस्वामीजी के पास सेव्यरूप में विराजमान हुए तथा उनका नाम मदनमोहनजी करके प्रसिद्ध हुआ। इसी स्थान में अद्वैतप्रभु विशाखासखी के द्वारा अङ्कित मदनगोपालजी का चित्र सेवार्थ प्राप्त हुए थे॥

इमलीतला—यहाँ ब्रजलीला समय के प्राचीन इमलीवृक्ष मौजूद है। महाप्रभुजी ब्रज में आकर अक्रूरघाट में रहने के समय बीच-बीच में आकर यहाँ रहते थे। आप ने कृष्णदास राजपूत को यहाँ ही कृपा की। इसी स्थान से हो आप प्रयाग होकर नीलाचल पधारे। यहाँ ही बैठकर आप मधुर हरिनाम लेते थे॥

शृङ्गारवट—यहाँ सुबलादि सखाओं ने उल्लास के साथ श्रीकृष्ण का विविध शृङ्गार किया है। अतः यह शृङ्गारवट से प्रसिद्ध है। श्रीनित्यानदप्रभुजी ब्रज के वनों का भ्रमण कर यहाँ आये तथा कुछ दिन आपने यहाँ निवास किया। बलदेव आवेश मे आपने विविध विलास किया अतः इसको नित्यानदबट भी कहते हैं। नित्यानंद-प्रभुवशीय गोस्वामीगण इस देवालय के मालिक हैं। देवालय में निताइ चैतन्य विग्रह तथा राधाकृष्ण विग्रह मौजूद हैं। इस देवालय के स्थापयिता नित्यानंदप्रभु के वंशज परमानंदगोस्वामी नामक एक सन्यासी हैं। उनके पुत्र रसिकानंदजी जहाँगीरबादशाह के राजत्वकाल में सपरिवार वाँकुड़ा जिला से आकर यहाँ वास करने लगे। उनके वंशज ही देवालय के सेवक हैं॥

सेवाकुञ्ज—इसको निकुञ्जवन भी कहते हैं। यह राधादामोदर मंदिरक पास पूर्व दक्षिणकोण में है। यहाँ एक श्वेतप्रस्तर निर्म्मित क्षुद्रमदिर में राधा के चित्रपट की पूजा होती है। चित्र में राधिका क चरणों को श्रीकृष्ण दाव रहे हैं। यहाँ एक शैय्या मौजूद है। ब्रजवासियों का कहना है कि आज भी प्रति रात्रि में राधाकृष्ण साक्षात् रूप में यहाँ विहार करते हैं, अतः रात्रिकाल में इस कुञ्ज में से सब को हटा दिया जाता है। यहाँ ललितकुण्ड तथा केलि-कदम्ब नामक वृक्ष है। वृक्ष में अनेक स्थान पर कृष्णवर्ण दाग है। यह स्थान वर्त्तमान राधावल्लभगोस्वामियों के हस्तगत है॥

चीरघाट—कोई-कोई इसे चयनघाट भी कहते हैं। यहाँ वस्त्रहरण लीला हुई थी।

"अनेकवर्णवस्त्रैस्तु भूषिताय ब्रजौकसे।
नानाचीरप्रवेष्टाय नमस्ते गोपिवल्लभ!" ॥

इस मंत्र का ६ बार पाठ कर मज्जन-आचमन करें॥

रासमण्डल—

"गोपिकाशतकोटिभिः कृष्णरासोत्सवाय च।
नमस्ते रासगोष्ठाय वैमल्यवरदायिने ॥"

इस मन्त्र का १०० बार पाठ कर प्रदक्षिणा करें॥

निधुवन—निधु शब्द का अर्थ सूरतक्रीड़ा है। यहाँ नित्य दोनों की सूरत क्रीड़ा होती थी। गोविन्दलीलामृतादिक ग्रंथ में निधुवन में सूरतक्रीड़ा का सरस वर्णन है। उन ग्रथों में ऐसा वर्णन है कि—सूरत क्रीड़ा के उपरान्त निधुवन में दोनों का रात्रिशयन होता है। पद्मपुराणादिक में भी ऐसा कथन है। प्रभात होने पर यहाँ ही से दोनों अपने-अपने घर के लिये गमन करते थे। इस प्रकार राधा-गोविन्द यहाँ नित्य आकर विविध लीला विहार करते हैं। जो कि लीलास्मरणकारी, रागानुगीय रसिक महानुभावों का हृदयपट में अंकित रहता है। यहाँ ही से दोनों का गौरांग-स्वरूप में अवतीर्ण होने की सूचना मिलती है।—

श्रीपाद श्रीविश्वनाथ-चक्रवर्ती महोदय ने निज विरचित 'स्वप्नविलास" नामक ग्रन्थ में तथा अन्यान्य पदकर्त्ता रसिक महानुभावों ने इस विषय में अत्यन्त मधुर-सरस वर्णन किया है। प्रसंग-एक दिवस निधुवन में दोनों शयन कर रहे थे। शेषरात्र में श्रीवृषभानुनन्दिनी ने अचानक एक हृदय मनोहर स्वप्न देखा। आप प्राणवल्लभ को जगाय कर कहने लगीं, हे प्रियतम! मैंने आज एक अद्भुत स्वप्न देखा। स्वप्न में मैंने सूर्यतनया यमुना की भाँति एक अनुपम नदी देखी। उस नदी में यमुना की भाँति एक पुलिन, उस पुलिन में वृन्दावन की भाँति अद्भुत नृत्यविनोद तथा उस नृत्य-विनोद में मृदङ्गादि वाद्य देखें। और एक अद्भुत से अद्भुत यह देखा कि उस नृत्यविनोद में एक विद्युत्वर्णवाला गौराङ्ग युवक

जगत् को प्रेमसागर में डुबाता हुआ कभी "कृष्ण कृष्ण" ऐसा कह कर प्रलाप कर रहा है, कभी वा "हा राधे तुम कहाँ हो" ऐसा कह कर रोदन करता हुआ मूर्च्छा प्राप्त हो रहा और कभी वा उल्लास के साथ रोदन करता हुआ ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त जगत् को रोदित कराता था। उस स्वरूप को देखकर मेरी बुद्धि भ्रान्त होने लगी । मैं विचार करने लगी यह गौरवर्ण युवक कौन है ? क्या निरंतर कृष्ण कृष्ण कह कर रोदन करने वाली मैं हूँ अथवा सर्वदा हा राधे ! हा प्राणेश्वरि ! इस प्रकार कह कर रोदन करने वाले मेरे प्राणवल्लभ श्रीकृष्ण आप हैं ? इस प्रकार विचार करती करती मैं सो गई। अनन्तर श्रीकृष्ण कहने लगे—हे प्राणेश्वरि ! मैंने तुम्हारे आश्चर्य के लिये नारायणादि विविध स्वरूप का अवलोकन कराया परन्तु तुम्हारा किसी में विस्मय नहीं हुआ । नहीं कह सकता हूँ वह गौरवर्ण युवक कौन था, जो कि तुम्हारी बुद्धि में भ्रम का उत्पादन कर तुम्हें मोहित कर रहा है । ऐसा कह कर प्राणवल्लभ निरुत्तर हो गये । आपने कुछ मुसकाया । उस समय राधिकाजी कहने लगीं प्राणवल्लभ ! मैंने अब जान लिया है । वह स्वरूप आप ही हैं । नहीं तो मुझे इस प्रकार मोहित नहीं कर सकता । अनन्तर श्रीकृष्ण अपने कौस्तुभमणि को दीप्तिमान कर उसमें स्वप्न-दृष्ट समस्त विषय देखाने लगे । श्रीराधिका उन सबको देखकर कहने लगीं कि आपके बाल्यकाल में ब्रजराज के समक्ष सर्वज्ञ गर्ग ने कहा था कि आप का एक पीतवर्ण गौरांग अवतार होगा, मुनि गर्ग का वह वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता है। अतः मेरा स्वप्न सत्य है। वह स्वप्न-दृष्ट आप ही हैं । अनन्तर श्रीकृष्ण ने कहा-हृदयेश्वरि ! सुनिये । मैं तुम्हारा भाव आस्वादन के लिये तुम्हारी ही गौरवर्ण कान्ति से ढक कर नदीया नगर में गौरांग स्वरूप में अवतीर्ण हूँगा । तुम्हारा इस सरस भाव का

आस्वादन करूँगा तथा जगत् को आस्वादित कराऊँगा साथ ही साथ मधुर हरिनाम का प्रचार कर जगत् को प्रेम पात्र बनाऊँगा। प्रेमप्रदानार्थ मेरा इस गौरांग अवतार होगा। तुम सब भी परिकर रूप में अवतीर्ण होगे इत्यादि॥

स्वामी हरिदासजो निधुवन में विशाखाकुण्ड से बाँकेबिहारी ठाकुरजी को प्राप्त हुए थे। उनकी समाधि यहाँ मौजूद है। यहाँ स्वामी जी का चित्र का पूजन होता है। निधुवन में श्रीराधा राजवेश से सज्जिता होकर राजसिंहासन में बैठीं तथा श्रीकृष्ण कोतवाल वेश बन कर उनकी द्वारदेश की रक्षा करने लगे। इसको राइराजा लीला कहते हैं। गौड़ीय पदकर्त्ताओं ने इस लीला का मनोहर चित्रण किया है। यह राधारमणजी मन्दिर के सामने में है। चार ओर लम्बा दीवाल खींचा हुआ है॥

केशीघाट—इसको केशीतीर्थ भी कहते हैं। यहाँ श्रीकृष्ण ने परम कौतुक के साथ केशीदैत्य को मार कर यमुनाजी में दोनों हाथ धोये।

"केशीमुक्तिप्रदायैव केशवाय नमोऽस्तु ते।
चतुर्भुजाय कृष्णाय केशितीर्थ! नमोऽस्तु ते॥"

इस मन्त्र का १० बार पाठ कर नमस्कार करें॥

धीरसमीर—यहाँ श्रीकृष्ण की निकुञ्जलीला होती थी। उन लीलाओं का दर्शन कर समीर धीर हो जाता था अर्थात् पवन नहीं चलता था। धीरसमीर का कुञ्ज व देवालय नित्यानन्दप्रभु के श्वसुर सूर्यदास सारखेल के छोटे भ्राता श्रीगौरीदास पण्डित के द्वारा स्थापित है। उन्होंने शेष जीवन में श्रीवृन्दावन आकर श्यामराय नामक ठाकुर तथा धीरसमीर कुञ्ज की स्थापना की है। यहाँ उनकी समाधि मौजूद है। "धीरसमीरे यमुनातीरे, बसति वने बन-

माली" कह कर जिस कुञ्ज का उल्लेख किया गया वह यह ही है।

मानभञ्जनस्थल—ब्रजपरिक्रमानामक ग्रन्थ में कथित है कि श्री-जयदेव गोस्वामीजी ने "स्मरगरलखण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहि पदपल्लवमुदारम्" ऐसा कह कर श्रीकृष्ण के द्वारा राधिका के मानभंग का जो चित्रण किया है वह यहाँ ही हुआ था ॥

मणिकर्णिका—

बंशीवट—यहाँ श्रीकृष्ण त्रिभंग ठाम में बंशी बजाते थे । यह गोपीनाथजी के विलासमय स्थान है । यह स्थान यमुनाजी में प्लावित हो गया था तथा इसमें विराजमान बंशीवट भी अन्त-र्द्धान हो गया। पश्चात् श्रीमधुपंडितगोस्वामी ने उसकी एक शाखा लेकर पहले की भाँति गाढ़ दिया । जिससे यह प्रकांड वटरूप में खड़ा हो गया । यहाँ ही मधुपंडितजी ने श्रीगोपीनाथजी को प्राप्त किया था। श्रीकृष्ण ने रासलीला करने के लिये उत्सुक होकर यहाँ ही बंशीध्वनि के द्वारा गोपियों को आकर्षित किया था। यहाँ बंशीवटविहारीजी विराजमान हैं । प्रांगण की चतुर्दिशा में दीवाल के ऊपर रासलीला के अनुकरण में एक-एक श्रीकृष्ण एक-एक गोपि का मूर्त्ति अङ्कित है। दोनों परस्पर के हाथों का धारण किये हुए हैं। चारकोण में चार मन्दिर छोटे २ हैं। उनमें क्रम से रामानु जाचार्य, मध्वाचार्य, विष्णुस्वामी तथा निम्बाकाचार्यजी की चार मूर्त्ति प्रतिष्ठित हैं । पहले यह देवालय गौड़ीयगण की सम्पत्ति रूप में था। पीछे गवालियर राजा के गुरु ब्रह्मचारीजी ने इसका क्रय कर लिया अतः वर्त्तमान यह निम्बार्कसम्प्रदाय के हस्तगत है । यहाँ चित्रवादी-श्री तथा टाली-श्री रामजीदास वाजोरिया द्वारा लगवाई गई ॥

"दशाब्दकृष्णपादाङ्कलाञ्छिताय नमो नमः ।
वंशीरवसमाकीर्ण वंशीवट नमोऽस्तु ते" ॥

इस मन्त्र का १० बार पाठ कर प्रणाम के साथ वट का पूजन करें।

भक्तिरत्नाकर में और भी इन स्थानों का उल्लेख किया है—गोपियों का प्रेमपरीक्षा स्थान, राधिका के साथ श्रीकृष्ण का अन्तर्द्धान स्थान, गोपियों के द्वारा लीलानुकरणस्थान, कृष्णदर्शन-स्थान, परस्परकथोपकथनस्थान, यमुनापुलिन, जलविहारस्थान ये सब हैं ॥

गोपीश्वरमहादेव—गोपियाँ श्रीकृष्णसंग प्राप्ति कामना करती हुई नित्य पूजा करती थीं अतः आपका नाम गोपीश्वर करके प्रसिद्ध हुआ है । वृन्दावन के पूर्व में गवालियर मन्दिर के पास गोपीश्वर महादेवजी का स्थान है ॥

ब्रह्मकुण्ड—यहाँ उत्तरदिशा में एक अशोकवृक्ष मौजूद है । वैशाख मास शुक्ला द्वादशी के दिवस मध्याह्न के समय अलक्षित रूप से उसमें फूल फूटता है । भाग्यवन्त जन उसका दर्शन करते हैं । जैसा कि वाराहपुराण में कहा है—

तस्य तत्रोत्तरे पार्श्वेऽशोकवृक्षः सितप्रभः ।
वैशाखस्य तु मासस्य शुक्लपक्षस्य द्वादश्याम् ॥
स पुष्पति च मध्याह्ने मम भक्तसुखावहः ।
न कश्चिदपि जानाति विना भागवतं शुचिम् ॥

वृन्दादेवीस्थल—यहाँ वृन्दादेवी ने नारदजी का मनोरथ पूर्ण किया था ॥

वेणुकूप—यहाँ प्रियागण को प्यासी जान कर श्रीकृष्ण ने वेणु को पृथ्वी पर लगाकर फूँक दिया । जिससे कि यह शब्द पृथिवी

भेद कर पाताल में पहुँचा, उस समय जल से परिपूर्ण एक अद्भुत कूँआ पाताल से निकल आया। गोपियाँ श्रीकृष्ण की प्रशंसा करती हुई उसमें से जल पीने लगीं॥

दावानलकुण्ड--कालीदमन के दिवस श्रीकृष्ण ने यहाँ दावग्नि का पान किया था।

इस समय वृन्दावन में हजारों मन्दिर मौजूद हैं। उनमें से प्राचीन प्रधान मन्दिर ये हैं—गोविन्दजी का मन्दिर, साक्षीगोपाल, गोपीनाथजी, मदनमोहनजी, राधारमणजी, राधाविनोदजी, श्रीराधामाधव, राधादोमोदर, श्यामसुन्दरजी, शृङ्गारवट में श्रीगौरनिताई जू, सीतानाथ मन्दिर, राधावल्लभजी का मन्दिर, बाँकेविहारीजी का मन्दिर हैं। वर्त्तमान समय के मन्दिरों में साहाजी का मन्दिर, लालाबाबू का मन्दिर, रङ्गजी का मन्दिर, ताडाशमन्दिर, जेपुर मन्दिर, हाडावाडो, श्रीजी का मन्दिर, वर्द्धमानराजमंदिर, ब्रह्मचारीजी का मन्दिर, गिरिधारोजी का मन्दिर, टीकारीरानी का मन्दिर, साहाजापुर मंदिर, महारानीस्वर्णमयीमन्दिर, कालाबाबूकुञ्ज, गिरिधारीजी का मन्दिर इत्यादि॥

गोविन्दस्वामितीर्थ--यहाँ स्वामी गोविन्ददेवजी अर्च्चारूप में सर्वदा विराजमान हैं। श्रीगोविन्दजी श्रीरूपगोस्वामी के लिये प्रसन्न होकर गोमाटोला नामक स्थान से (जहाँ प्राचीन मन्दिर बना हुआ है) वहाँ से प्रकट हुए हैं। आप बज्रनाभजी के द्वारा प्रतिष्ठित हुए थे तथा समय पाकर गोमाटोला में धरती के नीचे दबे पड़े थे। तीर्थोद्धार के समय श्रीरूपगोस्वामीजी गोविन्दविग्रह की खोज में थे परन्तु कोई अनुसन्धान उन्हें नहीं मिलता था। आप महाप्रभु की आज्ञा के पालनार्थ वृन्दावन के घर घर में वन-वन में ढूँढ़ते फिरते हुए कुछ अनुसन्धान न पाकर दुःखित चित्त से

यमुना के तट पर एक वृक्ष के नीचे बैठकर रोदन करने लगे। उस समय एक परम सुन्दर ब्रजवासीबालक आकर उन से रोदन का कारण पूछने लगा। श्रीरूप ने उन्हें समस्त कुछ कहा। उपरान्त वह ब्रजवासीबालक उनको गोमाटीला के निकट लेकर कहने लगा देखिए "यहाँ इसी स्थान पर एक गौ नित्य आकर पूर्वाह्न के समय दुग्ध बहाती हुई चली जाती है। अब तुम जैसा उचित समझो ऐसा करो।" ऐसा कह कर वह अन्तर्द्धान हो गया। श्रीरूप उसका वचनामृत तथा मधुरस्वरूप का अनुभव करते हुए मूर्च्छित हो गये। आपकी चेतना हुई। पश्चात् आप ने बालक-वृद्ध सबको बुला कर उस स्थान को खुदवाया जो कि आप ने वहाँ कोटिमन्मथमोहन श्रीगोविन्ददेव को प्राप्त किया। वह स्थान शास्त्र में योगपीठ करके प्रसिद्ध है। महा समारोह के साथ श्रीगोविन्दजी को राजराजेश्वर गद्दी पर बैठा कर अभिषिक्त किया गया। श्रीगोविन्ददेव वृन्दावन के राजा हैं। स्कन्ध-पद्म-वाराहादिपुराणों में उनकी वृन्दावन के राजराजेश्वर पदवी के विषय में विस्तृतरूप वर्णन किया गया है। वृन्दावन में श्रीगोविन्द हीं मुख्य देवता करके माने जाते हैं तथा वृन्दावन में आकर गोविन्ददर्शन करना ही मुख्य विधि है ऐसा शास्त्र में कथन है--

तथाहि श्रीचैतन्यचरितामृते—

"वृन्दावने कल्पवृक्ष सुवर्ण-सदन।
महायोगपीठ ताँहा रत्नसिंहासन॥
ताते बसि आछेन साक्षात् ब्रजेन्द्रनन्दन।
श्रीगोविन्द नाम-साक्षात्मन्मथमदन" ॥ इत्यादि।

"श्रीमद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः, श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा-श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठालिभिः सेव्यमानौ स्मरामि" ॥

श्री भा० (६ । ८ । २०)—"मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणु:" इति । टीका च "तौ हि मथुरा-वृन्दावनयो: सुप्रसिद्ध-महायोगपीठयोस्तत्तन्नाम्नैव सहितौ प्रसिद्धौ" "आत्तवेणुरिति विशेषणेन गोविन्द: श्रीवृन्दावनदेव एव ; तत्सह-पाठात् केशवोऽपि मथुरानाथ एव ।" गोपालपूर्वतापन्याम्—"तमेकं गोविन्दं सच्चिदानन्दविग्रहम्" इत्यादि ।

उर्द्ध्वाम्नाये—"गोपाल एव गोविन्द: प्रकटाप्रकट: सदा ।
वृन्दावने योगपीठे स एव सततं स्थित: ॥
असौ युगचतुष्केऽपि श्रीमद्वृन्दावनाधिप: ।
पूजितो नन्दगोपाद्यै: कृष्णेनापि सुपूजित:" ॥

अथर्ववेदे—"गोकुलारण्ये मथुरामण्डले वृन्दावनमध्ये सहस्र-दलमध्येऽष्टदलकेशरे गोविंदोऽपि श्याम: द्विभुजो" इत्यादि ।

स्कांदे—"गोविंदस्वामि नामात्र वसत्यर्च्चात्मकोऽच्युत: ।
गंधर्वैरप्सरोभिश्च क्रीडमान: स मोदते ॥

इत्यादि बहुग्रंथेषु प्रसिद्धानि वचनानि सन्ति

ब्र०भ०वि०—"वृंदादेवीसमेताय गोविंदाय नमो नम: ।
लोककल्मषनाशाय परमात्मस्वरूपिणे ॥"

इस मंत्र का पाठ कर ९ वार प्रणाम करें ॥

वृंदावन में पहले राधामूर्ति—आविष्कार की बात सुनने में नहीं आती थी । राधामूर्त्ति-आविष्कार का प्रथम सुयोग यह है कि-पुरीधाम में जगन्नाथजी का मंदिर में चक्रवेड नामक स्थान पर राधिका की एक मूर्त्ति मौजूद थी उस मूर्त्ति को सब कोई लक्ष्मी करके पुकारते थे । प्रतापरुद्र महाराज के पुत्र पुरुषोत्तमजाना ने उस मूर्त्ति को राधानाम से प्रसिद्ध कराकर परमयत्न के साथ वृंदा-

वन के लिये भेजा तथा उस मूर्त्ति को गोविंददेव के वामभाग में विराजमान कराया गया । अनंतर गोविंदजी राधिका को प्राप्त होकर वृंदावन में राधागोविंद नाम से विख्यात हुए । स्वयं महाप्रभुचैतन्यदेव ने काशीश्वर ब्रह्मचारी नामक अपने पार्षद के द्वारा गौरगोविन्दनामक एक निज स्वरूप विग्रह (अपनी प्रतिमूर्त्ति) को बृन्दावन के लिये भेजा था वह मूर्त्ति गोविंदमंदिर में गोविंदजी के दक्षिण पार्श्व में बिराजमान हुई। १५९० साल में श्रीरघुनाथभट्टगोस्वामी के शिष्य जयपुर के राजा मानसिंह ने गुरुजी की प्रेरणा से लाल पत्थर के द्वारा बृहत् मंदिर बनाय दिया था । १६७० साल में मोगल सम्राट् औरंगजेब द्वारा यह मन्दिर ध्वंस हुआ। उससे पहले श्रीगोविन्दजी जयपुर चले गये थे। १७४८ साल में प्रतिभू विग्रह की स्थापना हुई तथा १८१९ साल में श्रीनंदकुमार-वसु के द्वारा वर्त्तमान मंदिर प्रतिष्ठित हुआ। इस मंदिर में गोविंदजी, अष्टधातु प्रतिष्ठित राधिकाजी, सुन्दरानंद गोस्वामी के विग्रह राधाकृष्ण जिन का नाम चिकनिया है ये सब विराजमान हैं ॥

मदनमोहनजी—श्रीपाद सनातन गोस्वामीजी नित्य वृन्दावन से भिक्षार्थ मथुरामें आते थे। मथुरा के परशुराम चौबे के घरसे आपने मदनमोहनजी को प्राप्त किया तथा आप वृन्दावन में द्वादश आदित्यटीला के पास निर्जन में एक झोंपड़ी बनाकर लवण रहित वन्य-शाक के अर्पण के द्वारा सेवा करने लगे। भिक्षा लब्ध आटे के द्वारा अंगा अर्थात् बाटी सेक कर उन्हें भोग लगाते थे। एक दिवस मदनमोहनजी ने गोस्वामीजी से नमक माँगा परन्तु आप लवण देने में असमर्थ हुये। उस समय मुलतानदेशीय कृष्णदासकर्पूरनामक धनी नौकाओं में असंख्य धन रख कर व्यवसायार्थ जा रहा था। उसकी नौकाएँ जल में अटक गईं । उस समय मदनमोहन जी एक

बालकरूप में आकर उस धनी को कहने लगे कि—"तुम्हारी नौकाऐं हजारों चेष्टा करने पर भी नहीं चलेंगीं, परन्तु यहां सनातनगोस्वामीजी भजन करते हैं उनके कहने पर चल सकती हैं। पश्चात् धनी ने आकर गोस्वामीजी के संकेत के अनुसार मदनमोहनजी के पास प्रार्थना तथा उपार्जित धनों से सेवा का प्रबन्ध करने की प्रतिज्ञा की। अनन्तर नौकाऐं चलने लगीं। उस वाणिज्य में उसको प्रचुर धन मिला। उसने उस धन को लगाकर मदनमोहनजी का विशाल मन्दिर तथा सेवा का प्रबंध कर दिया। १६७० साल में यह मन्दिर औरङ्गजेब के द्वारा विध्वसित हुआ था। उस से पहले मदनमोहनजी जयपुर चले गये थे। अब वे करौली में मौजूद हैं। १७४८ साल में वृंदावन में प्रतिभूविग्रह की स्थापना हुई तथा १८१६ साल में नन्दलालवसु के द्वारा वर्त्तमान मन्दिर का निर्माण हुआ।

सेवाप्राकट्य व इष्टलाभ नामक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ में सूचित किया गया है कि सनातन गोस्वामीजीने १५९० सम्बत् में महावन के परशुराम चौवे के निकट से मदनगोपालजी को लाकर उसी संवत्सर में माघ शुक्ला द्वितीया में वृन्दावन में स्थापित कर कृष्णदासब्रह्मचारीजी को सेवा का भार दिया। उस समय मदनमोहनजी के पास राधिका विग्रह नहीं था। मदनमोहनजी का प्राकट्य सुन कर राजा प्रतापरुद्र के पुत्र पुरुषोत्तमजाना ने यत्न के साथ पुनः दो ठाकुरानी विग्रह को पुरी से भेज दिया। मदनमोहन ने स्वप्न में सेवक को आदेश दिया कि—पुरी से जो दोनों ठाकुरानी आई हैं उनको सब कोई राधिका कहा करते हैं। परन्तु वास्तविक दोनों में से बड़ी तो ललिता तथा छोटी राधिकाजी हैं। तुम शीघ्र जाकर उन को लिवाय लाओ तथा छोटी (राधिका) को मेरे वामपार्श्व में तथा बड़ी (ललिता) को दक्षिण में विराजमान कराओ

ऐसा भक्तिरत्नाकर ग्रन्थ में वर्णन है। तब से मदनगोपालजी का नाम मदनमोहन हो गया है। मन्दिर के दक्षिण भाग में निताइ-चतन्यविग्रह है। आदित्यटीला के सब से ऊँचास्थान पर महाप्रभु की बैठक है। वहाँ एक छोटा मन्दिर के भीतर उनके चरणों का चिह्न मौजूद है। नूतन मन्दिर के भीतर मदनमोहनजी, दक्षिण में ललिताजी, वामभाग में राधिका जी, शालिग्राम शिला, स्वतन्त्र आसन में जगन्नाथविग्रह मौजूद हैं। नूतन मन्दिर के पास पश्चिम में श्रीसनातनगोस्वामीजी का समाधि तथा ग्रंथसमाधि है।

"यशोदानन्दनायैव श्रीमत् गोपालमूर्त्तये ।
कृष्णाय गोपीनाथाय नमस्ते कमलेक्षण ॥"

इस मंत्र का ७ वार पाठ कर नमस्कार करें॥

गोपीनाथजी—बंशीवट के पास यमुना के तट से मधुपंडित-गोस्वामी के गुरु परमानंदभट्टाचार्य के द्वारा प्रकट हुए थे। परमानंदभट्टाचार्य ने शिष्य मधुपण्डितजी को निज प्रिय गोपीनाथजी की सेवा का भार अर्पण किया। पहले बंशीवट के पास गोपीनाथजी विराजमान रहे। पश्चात् रायसिंह के द्वारा मंदिर बन जाने पर वहाँ उनकी सेवा हुई। अब बंशीवट विहारी नाम से स्वतंत्र ठाकुर विराजमान हैं। नित्यानंदप्रभु की दूसरी पत्नी जाह्नवा ठाकुरानी-जी जब वृंदावन में आई थीं तब उन्होंने एक दिवस राधा गोपी-नाथ का दर्शन करती करती मन में विचार किया कि श्रीराधिका-जी कुछ ऊँची होती तो अच्छा होता। आप शयन-आरती देख कर अपने वासस्थान में आईं। श्रीगोपीनाथजी स्वप्न-छल से जाह्नवाजी को कहने लगे कि मैं जैसा ऊँचा हूँ ठीक उसी प्रकार ऊँची मेरी प्रिया नहीं है। अतः तुम गौडदेश में जाकर शीघ्र प्रिया का प्रकाश कर भेजो। राधिकाजी का भी ऐसा करने का

आदेश हुआ। जाह्नवी माता ने स्वप्न में दोनों का ऐसा आदेश पाकर नयन नामक भास्कर के द्वारा राधिकास्वरूप का निर्माण कराया। भक्तमालग्रंथ में कहा गया है—जाह्नबी ठाकुरानी ने अप्रकट के समय अपनी एक प्रतिमा आप ही प्रकाशित करके उस में आप आविर्भूत होकर आदेश दिया कि इस मेरे विग्रह को लेकर गोपीनाथ के आसन में विराजमान कराओ। जब उस विग्रह को वृन्दावन में पहुँचा दिया गया तब पुजारीगण कुछ संकुचित हुए। गोपीनाथ ने सब को आदेश दिया कि—यह मेरी प्रिया, अनङ्गमञ्जरी है! इनको मेरे बाँय में तथा प्यारीजू को दक्षिण में निसंकोच बैठाओ। ऐसा ही हुआ। गोपीनाथजी के वामभाग में जाह्नवीजी और दक्षिण में राधिकाजी विराजमान हुईं॥

औरङ्गजेब के उपद्रव से गोपीनाथजी तथा राधिका-जाह्नवीजी को जयपुर में स्थानांतरित किया गया। अब नंदकुमार वसु के द्वारा प्रतिष्ठित नूतन मंदिर में प्रतिभू स्वरूप विराजमान हैं। गोपीनाथजी के वामपार्श्व में जाह्नवी ठाकुरानी हैं। उनके पास सहचरी विश्वेश्वरी है। ठाकुरजी के दक्षिण भाग में छोटीमूर्त्ति राधिका तथा ललितासखी जी विराजमान हैं। स्वतंत्र आसन में महाप्रभु गौरांगदेव का विग्रह मौजूद है। राठौर वंशोद्भूत बीकानेर के अधिपति कल्याणमल के पुत्र रायसिंह के द्वारा प्राचीन मंदिर का निर्माण १६३२ साल में हुआ था। इस मंदिर का औरङ्गजेब के द्वारा ध्वंस हुआ है। प्रतिभूविग्रह का स्थापनाकाल १७४८ साल तथा १८१९ साल में नूतन मंदिर का निर्माण है। मधुपंडित जी की समाधि मंदिर के पास मौजूद है॥

राधादामोदरजी—श्रीरूपगोस्वामीजी ने राधादामोदरविग्रह को अपने हाथों से प्रतिष्ठित करा कर श्रीजीवगोस्वामी को सेवा के

लिये अर्पण किया । सेवाप्राकट्य ग्रंथ के अनुसार १५९९ संवत में माघ शुक्ला दशमी तिथि में राधादामोदर की स्थापना हुई । वर्त्तमान यह ठाकुरजी जयपुर में विराजमान हैं । उनके प्रतिभू स्वरूप वृन्दावन में मौजूद हैं । इनके साथ एकासन में वृन्दावन-चन्द्रनामक अन्य एक युगल विग्रह विराजमान है । यह मंदिर यमुना के निकट शृङ्गारवट के पास है । मंदिर के उत्तरभाग में बृहत् उसी समय का इमलीवृक्ष (ध्वंस) तथा उसके नीचे श्रीपाद-श्रीरूपगोस्वामी जी की समाधि मंदिर, सामने उन का भजनकुटीर मौजूद हैं । मंदिर से संलग्न दक्षिण में जीवगोस्वामीजी की समाधि, उसके पास उनके शिष्य कृष्णदासगोस्वामीजी की समाधि मौजूद है । सनातन गोस्वामीजी नित्य गोवर्द्धन परिक्रमा करते थे । वृद्धावस्था में जब परिक्रमा करने में असमर्थ हो पड़े तब श्रीकृष्ण ने बालकरूप से आकर डेढ़हस्त परिमाण लम्बा वटपत्राकार कृष्णवर्ण गोवर्द्धन शिला को उन्हें देकर उसी की परिक्रमा करने को आदेश किया । उस शिला में श्रीकृष्ण का चरणचिन्ह, गौ के खुर का चिन्ह तथा पताका बैठाने के लिये एक छिद्र मौजूद है । सनातनजी नित्य उस शिला को प्रदक्षिणा करते थे । उनके अन्तर्द्धान के पश्चात् श्रीजीवगोस्वामी इस मंदिर में उस शिला को बिराजमान करा कर पूजा करने लगे । अभी भी वह शिला वहाँ मौजूद है । जन्माष्टमी के दिवस दर्शन होता है ॥

राधारमणजी—श्रीगोपालभट्टगोस्वामीजी का सेवित विग्रह है । भट्टगोस्वामीजी पहले एक शालग्राम शिला की सेवा करते थे । एक समय उनकी प्रबल इच्छा उठी कि–"यदि शालिग्राम ठाकुरजी के हस्त-पद होते तब में इच्छानुसार अलङ्कृत करा कर सेवा कर सकता" । भक्तवत्सल प्रभु उनकी मनः कामना का पूर्ण करने के लिये पर दिवस त्रिभंग मुरलीधर मूर्त्ति में परिवर्त्तित हुए । श्रीभट्ट-

ो इच्छा के अनुसार अलङ्कारों से भूषित करा कर कृत कृत्य हुए। ी भी राधारमणजी के श्रीअंग में पूर्णशालिग्रामचिन्ह मौजूद है। ग्रह आकार में लघु (द्वादशांगुल) होनेपर भी दर्शनके द्वारा सबके त्त का हरण कर लेता है। राधारमणजी विग्रह में तीनों विग्रह । समानता है। मुख में गोविन्द मुखारविन्द की, हृदय में गोपी-ाथजी के हृदय का, चरणों में मदनमोहनजी के चरणों को समा-ा है। सेवाप्राकट्य ग्रन्थ में कहा गया है—सम्बत् १५९९ में श्री-धारमणजी शालीग्राम शीला से प्रकट हुए। उस संवत्सर वैशाखी णिमा तिथि में उनका अभिषेक हुआ था। राधारमणजी के पार्श्व राधिका विग्रह मौजूद नहीं है। परन्तु वामभाग में सिंहासन के पर गोमतीचक्र का पूजन होता है। हरिभक्तिविलास में ामतीचक्र के साथ ही शालिग्राम-शिला की पूजन विधि बतलाई ई है। अतः राधारमणजी के पास गोमतीचक्र का पूजन यथायुक्त । श्रीमन्महाप्रभुजी के विराजमान का पीठ (पट्टा) और डोर-ापीन यहाँ मौजूद भी हैं।

धारमणजी के वर्त्तमान मन्दिर का निर्माण लखनऊ वासी साह-कुन्दन तथा उनके भ्राता के द्वारा हुआ है। मन्दिर पास दक्षिण में भट्टगोस्वामीजी का समाधि-मन्दिर तथा राधा-णजी के प्राकट्य होने का स्थान मौजूद है। अन्य विग्रह की ीति राधारमणजी वृन्दावन छोड़कर बाहिर नहीं गये हैं॥

धाविनोदजी तथा गोकुलानन्दजी—श्रीलोकनाथ गोस्वामीजी ना के पास उमराओ ग्राम में किशोरीकुण्ड से राधाबिनोदजी ो प्राप्त हुए तथा वहाँ ही वन्यशाकादि समर्पण के द्वारा उनकी ा करते थे। पीछे रूप-सनातन-रघुनाथभट्ट आदि के अनुरोध राधाविनोदजी को वृंदावन लाकर राधारमण मंदिर के पास मंदिर बनाकर सेवा करने लगे। वर्त्तमानसमय वह विग्रह जय-

पुर में मौजूद है। बृंदावन में प्रतिमूर्त्ति विराजमान है। श्रीवि नाथचक्रवर्त्ती के द्वारा राधाकुंड में प्रकटित गोकुलानन्दजी भी मन्दिर के पास में संप्रति विराजित हैं। महाप्रभु के द्वारा रघुना दास गोस्वामीजी को प्रदत्त गोवर्द्धनशिला भी यहाँ मौजूद थ प्राचीनस्वरूप गोकुलानन्दजी जयपुर में विराजमान हैं। मंदिर प्रांगण में श्रीलोकनाथगोस्वामी तथा नरोत्तम-ठाकुरमहाशय समाधि है। विश्वनाथचक्रवर्त्तीजी की समाधि भी पास मेंमौजूद है

साक्षीगोपालजी—गोविन्दमंदिर के पश्चिम में यह शून्यमंदि विराजमान है। गोपालजी, छोटे विप्र बड़े विप्र के प्रसंग में सा देने के लिये जगन्नाथपुरी गये थे। आप वर्त्तमान जगन्नाथ बारह मील दूर पर सत्यवादीपुर में विराजमान हैं। तब से बृंद वन का मंदिर शून्य अवस्था में पड़ा है॥

मदनमोहनजी—वाणीकार गदाधरभट्ट जी के सेवितविग्रह हैं राधाबल्लभजी मंदिर के सामने भट्टजी-मुहल्ला में यह मंदिर है यहाँ सर्वदा समारोह के साथ समाज (लीलागान) होता रह है। दर्शनीय विग्रह है॥

श्यामसुन्दरजी—बृंदावन में राधादामोदर मंदिर के पास श्या सुंदरजी का मंदिर है। श्यामानदप्रभु के द्वारा यह विग्रह प्र हुआ था। मंदिर के सम्मुखवर्त्ती मार्ग के उस पार एक गृह श्यामानंदप्रभु की समाजवाड़ी अर्थात् समाधि स्थान है॥

राधामाधवजी—गोकुलानन्दमंदिर के उत्तर भ्रमरघाट के ऊ प्राचीन यमुनातट में प्राचीनमंदिर में जयदेवगोस्वामीजी के द्वा सेवित राधामाधव विराजमान रहे संप्रति जयपुर में घाटीना पार्वतीय स्थान में वह विग्रह मौजूद है। जिसके सेवाधिक गोविन्दजी के गोस्वामी हैं। राधामाधव मंदिर के ईशान

युगलकिशोर के उच्च मंदिर चूड़ाहीन अवस्था में है ॥

बाँकेविहारीजी—स्वामी हरिदासजी के द्वारा निधुवनमें विशाखा-कुण्ड से मृत्तिका के नीचे से बाँकेविहारीजी प्रकट हुए थे। गौड़ीय-संप्रदाय की भाँति बाँकेविहारीजी के मंदिर में राधिकाविग्रह की स्थापना नहीं है। वैशाखमास अक्षय-तृतीया के दिवस बाँकेविहारी जी का चरण दर्शन होता है। पहले ठाकुरजी निधुवन में विराज-मान रहे। पीछे मदनमोहनजी जाने के रास्ते में पुराने शहर में उनका प्राचीन मंदिर बना। उस मंदिर को भग्न होने का उपक्रम देखकर दूरदेशीय भक्तगण ने चंदा उठा कर प्रायः ७००००० सत्तर हजार रुपैया से नूतन मंदिर का निर्माण किया। बाँकेविहारीजी का झाँकी दर्शन होता है। बाँकेविहारीजी मुसलमानों के उपद्रव के समय गुप्तभाव में वृन्दावन में रहे तथा स्थानान्तरित नहीं हुए ॥

राधावल्लभजी—हरिवंशगोस्वामी जी के सेवित विग्रह है। आप विवाह के समय यौतुक रूप से राधावल्लभजी को प्राप्त हुए थे। यह मंदिर पुराना शहर में मौजूद है। राधावल्लभजी के साथ राधिकामूर्त्ति नहीं है। सिंहासन के ऊपर मुकुट स्थापन कर श्री-राधिका उद्देश्य में सेवा होती है ॥

युगलकिशोरजी—(प्रथम) माधवेन्द्रपुरीपाद के शिष्य माधव-दासजी हैं। जिनका चरित्र नाभाजी ने विस्ताररूप से मनोहर चित्रण किया है। नाभाजी ने माधवदासजी को संस्कृत क्षेत्र में व्यास की भाँति भाषाक्षेत्र के आचार्य रूप से कहा है। उनके शिष्य ओरछानिवासी हरिरामव्यासजी के द्वारा यह युगलकिशोर विग्रह प्रकटित हुआ है। किशोरीवन अथवा व्यासजी का घेरा में एक बगीचा में व्यासजी तथा उनकी पत्नी की समाधि मौजूद है। द्वितीय युगलकिशोरजी का मंदिर केशीघाट के पास एक

टीला के ऊपर मौजूद है जो कि झान्ना-पन्ना राजा के द्वारा प्रतिष्ठित है । तृतीय युगलविहारीजी मन्दिर जयपुरान्तर्गत नीम का थाना गाँव निवासी तोमरवंशीय हरिदासठाकुर तथा गोविंददासठाकुर नामक दो राजपूत भ्राता के द्वारा अकबर-राजत्व के समय निर्मित है ॥

लालाबाबू का मन्दिर—साल १८१० में श्रीकृष्णचन्द्रसेन लालाबाबू ने श्रीकृष्णचन्द्र नामक विग्रह की प्रतिष्ठा की थी । मन्दिर बहुत सुन्दर तथा दर्शन योग्य है ॥

साहजी मन्दिर—लखनऊ निवासी सेठ कुन्दनलाल साह ने साल १८३५ में मार्बेल पत्थर के द्वारा बहुत धन लगा कर इस मन्दिर को बनवाया था । आप महाप्रभु गौराङ्गदेव के अनन्यभक्त थे । ब्रजवासनिष्ठा भी आपने काफी दिखाई । यह मन्दिर वर्त्तमान समय वृन्दावन के अतुल वैभव रूपता की साक्षी दे रहा है, मानो वृन्दावन का समस्त वैभव यहाँ ही इस समय मौजूद है ॥

रङ्गजी मन्दिर—साल १८५१ में श्रीलक्ष्मीचन्द सेठ ने ४५ लाख रुपया लगा कर इस मन्दिर को बनवाया है । यह भी विशेष वैभवशाली मन्दिर है । इस में एक विशाल खम्भ है जो कि सर्वाङ्ग में सुवर्ण जटित है ॥

हाड़ावाड़ीकुञ्ज—आनुमानिक १८२० से १८२५ खृष्टाब्द के भीतर चव्वीस प्रगना के अन्तर्गत वहडुग्र गाँव निवासी स्वर्गीय नन्दकुमार वसु महाशय ने इस मन्दिर को बनाया था । इसमें श्रीगोविन्दजी का विग्रह मौजूद है । यह मन्दिर दर्शनीय है ॥

श्रीजी का मन्दिर—१८२६ खृष्टाब्द में जयपुर महाराज जगतसिंह की रानी आनन्दकुमारी देवी ने इस मन्दिर का निर्माण किया है । इसमें "आनन्दमनोहर" तथा "वृन्दावनचन्द्र" नाम से दो

युगल विग्रह प्रतिष्ठित हैं। यह मन्दिर दर्शन योग्य है॥

बर्द्धमानमहाराज कुञ्ज—श्रीजी मन्दिर के सामने रास्ता के अपर पार्श्व में यह कुञ्ज है। बर्द्धमान महाराज कीर्त्तिचाँद बहादुर की रानी राजराजेश्वरी देवी ने बनाया था। आपने नन्दगाँव में पावनसरोवर को भी प्रस्तरों से बाँधा था॥

ब्रह्मचारीठाकुरवाड़ी—गवालियर के महाराज जियाजि सिन्धिया ने १८६० खिष्टाब्द में चारिलक्ष रुपैया लगा कर इस मन्दिर को बनाया तथा गुरु गिरिधारीदास ब्रह्मचारीजी को सेवा भार दिया था। इसमें राधागोपाल, हंसगोपाल, तथा नृत्यगोपाल नाम से तीनों विग्रह पृथक् गृह में विराजमान हैं। यह मन्दिर दर्शन योग्य है, तथा लालाबाबू मन्दिर के पास में है॥

टीकारीरानी का ठाकुरवाड़ी—यह मन्दिर वृन्दावन के उत्तर पार्श्व में यमुनातट पर है। गया जिला के अन्तर्गत टीकारि नामक राज्य के अधिपति हितकामठाकुर की रानी इन्द्रजीतकुमारी ने अँग्रेजी साल १८७१ में तेरहलक्ष रुपैया लगाकर इस मन्दिर को बनाया है। इसमें राधाकृष्ण, राधागोपाल तथा लड्डू गोपाल नाम से तीनों विग्रह विराजमान हैं। यहाँ पहले पचास-साठ अतिथि की सेवा होती थी। सेवा के लिये मासिक पन्द्रहसौ रुपैया की व्यवस्था थी॥

साहाजापुर का मन्दिर—यह रेतिया बाजार में है। लाला ब्रज-किशोर नामक साहाजापुर के दिवान ने १८७३ खिष्टाब्द में पाँच लक्ष रुपैया लगा कर बनाया था। इसमें राधागोपाल ठाकुर विराजमान है। दर्शनीय मन्दिर है॥

महारानी स्वर्णमयी का मन्दिर—यह यमुनापुलिन के पास में

है । काशीमबाजारके सुप्रसिद्ध कान्तबाबूके प्रपौत्र कुमार कृष्णनाथ की पत्नी महारानी स्वर्णमयी ने इस मन्दिर को बनाया है । इस में पहले श्यामसुंदरजीका विग्रह मौजूद रहा । इसमें महारानीके द्वारा प्रतिष्ठित "गोपीनाथ"जी विराजमान हैं । महाराज मणीन्द्रचंद्र-नंदीबहादुर वृन्दावन में आकर यहाँ निवास करते थे ॥

नवलगोविन्दकुञ्ज——राजा राजवल्लभवंशीय कुमार गौरवल्लभ ने इसका निर्म्माण किया है । राजा राधाकान्त देव बाहादुर ने अपने शेषजीवन में यहाँ ही वृन्दाबन वास किया है ॥

जयपुर वाला मन्दिर——जयपुर के महाराज माधोसिंहजी ने बहुत द्रव्य लगाकर लगभग तीस वर्ष में निर्म्माण किया था । मूल-मन्दिर में तीन द्वार है । उत्तर में आनन्दबिहारीजी, बीच में राधामाधवजी, दक्षिणगृह में नृत्यगोपालजी, गिरिधारीजी, सनक, सनातन, सनन्दन, सनत्कुमार तथा श्रीनारदजी की मूर्त्ति विराजमान है । १६१६ खिष्टाब्द में इस मन्दिर में विग्रहों की स्थापना हुई थी ॥

पाण्डावाड़ीकुञ्ज——यमुना के तट पर है । भरतपुर की लक्ष्मी-रानी के मन्दिर के पास में है । काशी के रामप्रसाद चौधरी नामक अग्रवाल वैश्य ने इसका निर्माण किया था । इसमें ललितकिशोरी-जी विराजमान हैं ॥

सवामन शालिग्राम——लुइबाजार के मोड़ में श्यामसुन्दर मन्दिर के समक्ष दो मजला मन्दिर में यह स्वरूप विराजमान है । श्रीराम-सीता के विग्रह भी है । गोविन्दजी के पुरातन मन्दिर में भी सवामन शालिग्राम है ॥

अष्टसखीकुञ्ज——मदनमोहनजी मन्दिर के पास में है । हेतमपुर महाराज ने इसे बनवाया है । बीच में राधाकृष्ण युगलस्वरूप तथा

दोनों पार्श्व में श्वेतप्रस्थरों से निर्मित अष्टसखियों की मूर्त्ति है। इस मन्दिरके अपर प्राङ्गण में श्वेतप्रस्थर से निर्मित राजा-रानी दोनों की मूर्त्ती मौजूद है। साल १२९६ में हेतमपुर के महाराज रामरञ्जनचक्रवर्त्ती तथा उनकी पत्नी रानी पद्मासुन्दरीदेवी ने इस मन्दिर का निर्माण कर "राधारासविहारी" नामक ठाकुर को विराजमान कराया॥

राजर्षि रायवनमालीदास बाहादुर की ठाकुरवाड़ी--वृन्दावन से मथुरा जाने वाले कच्चे रास्ते में यह मन्दिर विराजमान है। ठाकुरजी का नाम राधाविनोदजी है। राजर्षि वनमाली राय ने इसका निर्माण किया है। राधाकुण्ड में भी इनके द्वारा निर्मित एक मन्दिर है। आप गौड़ेश्वर सम्प्रदाय के एक महान् धर्मात्मा महापुरुष रहे। आपके व्यय से ही अष्टटीका भागवत देवाक्षर में प्रकाशित हुए थे। इनके वंश में कोई एक कन्या राधाविनोदजी को पति ज्ञान से सेवा करती थी। इसलिये राधाविनोदजी को बहुत लोग "जमाइ ठाकुर" भी कहते हैं॥

कालाबाबूकुञ्ज--कलिकत्ता श्यामबजार निवासी कृष्णराम वसु के पुत्र गुरुप्रसादवसु ने निर्माण किया था॥

इस समय वृन्दावन में बारहवन मौजूद हैं। उनका उल्लेख करते हैं—

(१) अटलवन व अटला—यहाँ अटलविहारीजी विराजमान हैं। (२) केओयारिवन—इसमें दावानलकुण्ड है। (३) विहारवन—केओयारिवन के दक्षिण-पश्चिम में है। इसमें राधाकूप मौजूद है। (४) गोचारणवन—पश्चिम दिशा में प्राचीन यमुना तट पर है। यहाँ श्रीवराहदेव तथा गौतममुनि का आश्रम भी है। (५) कालीयदमनवन—गोचारणवन के उत्तर में है। वहाँ

प्राचीन कदम्बवृक्ष है जिसमें चढ़ कर श्रीकृष्ण ने कालीदह में कूद लगाई थी (६) गोपालवन— कालीयदमनवन के पास है। कालीदमन के पश्चात् नन्दबाबा ने यहाँ अनेक गौओं का दान किया था। (७) निकुञ्जवन—इसका नाम सेवाकुञ्ज भी है। यह दोनों का नित्य विहार स्थान है। इसमें ललिताकुण्ड है। (८) निधुवन—इसमें विशाखाकुण्ड है। (९) राधाबाग—यमुना के तट में है। श्रीहरिदास गोस्वामी का भजनस्थान, मनिरटाटि है। (१०) झुलनवन—राधाबाग के दक्षिण में है। (११) गहवरवन—झुलनवन के दक्षिण में है। इस का नाम पाणिघाट है। (१२) पपड़वन—पाणिघाट के दक्षिण में है॥

वृन्दावन के प्रसिद्ध घाट—वृन्दावन के पश्चिम में वराहघाट, उस के उत्तर में कालीयदमनघाट, उसके उत्तर गोपालघाट, उस के उत्तर सूर्यघाट (द्वादशादित्यटोला, प्रस्कन्दनतीर्थ), युगलघाट—युगलबिहारीजी का प्राचीनमन्दिर है। प्रतापादित्य के खुल्लतात बसन्तराय राजा ने बनाया था, जिस को औरङ्गजेब ने साल १६७० में विध्वंसित किया है। युगलघाट के उत्तर में बिहारघाट, उस के उत्तर में आन्धेरघाट। यहाँ श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ नेत्र बाँध कर मीचनी लीला की थी। इमलीतला घाट—घाट के ऊपर श्रीकृष्णलीला समय के एक इमली वृक्ष मौजूद है। महाप्रभुचैतन्यदेव ने यहाँ बैठ कर हरिनाम किया था। इसलिये इसको गौरांगघाट भी कहा करते हैं॥

शिङ्गारघाट—यहाँ श्रीकृष्ण ने बैठ कर राधिका की वेशरचना की। नित्यानन्दप्रभुजी वृन्दावन में आकर इस घाट के ऊपर बैठे थे। गोविन्दघाट—यहाँ रासलीला करने के समय श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान के पश्चात् गोपियों के समक्ष आबिर्भूत हुए थे॥

चीरघाट व चयनघाट—गोपियों के वस्त्रों का हरण करके श्रीकृष्ण कदम्ब के ऊपर बैठे थे तथा आपने केशी को मार कर यहाँ विश्राम किया था। भ्रमरघाट—दोनों के अंगसौरभ से उन्मत्त होकर भ्रमरगण घूमते फिरते थे। केशीघाट—यहाँ केशीदैत्य को श्रीकृष्ण ने मारा था। धीरसमीरघाट—यहाँ दोनों की सेवा के लिये मलयपवन धीरे से बहता था। राधाबागघाट—वृन्दावन के पूर्व में है। उसके दक्षिण में पाणिघाट है। वहाँ गोपियाँ श्रीकृष्ण के अनुरोध से दुर्वासा मुनि को भोजन कराने के लिये यमुना पार हुई थीं। इस घाट के दक्षिण में आदिबद्रीघाट है। यहाँ श्रीकृष्णने गोपियों को आदिबद्रीनारायण स्वरूप का दर्शन कराया है। इस घाट के दक्षिण में राजघाट है। यहाँ श्रीकृष्ण नाविक बन कर राजा की दुहाई देकर राधिका को यमुना पार कराते थे। वृन्दावनकथा नामक पुस्तक में इकत्तीस घाटों का नाम उल्लेख है—

(१) महान्तजी का घाट, निर्माता पंडित मोतीलाल है (२) रामपोल घाट, निर्माता बिहारीजी के गोस्वामीगण (३) कालीदहघाट—निर्माता होलाकार राय। (४) गोपालघाट, निर्माता करौली के राजा मदनपाल। (५) नाभाओयालाघाट, निर्माता नाभापति हीरासिंहजी। (६) प्रस्कन्दनघाट—निर्माता मदनमोहनजी के गोस्वामीगण (७) सूर्यघाट—निर्माता अज्ञात। (८) कडियाघाट—निर्माता कोलदेशीयगोस्वामीगण। (९) युगलघाट—निर्माता हरिदास तथा गोविन्ददासठाकुर। (१०) धूसरघाट—निर्माता अज्ञात। (११) नयाघाट—निर्माता भजनलालगोस्वामी। (१२) श्रीजीघाट—निर्माता जयपुर के राजागण। (१३) बिहारीघाट—निर्माता दक्षिणदेशीय रूप्पाराम। (१४) धरोयारघाट—निर्माता धुराराज रणधीरसिंह। (१५) नागरीदास

घाट--निर्माता नागरोदास । (१६) भीमघाट--निर्माता कोटा के राजा भीमसिंह । (१७) आन्धेराघाट—निर्माता जयपुर के राजा मानसिंह । (१८) टेहरि ओयाराघाट—निर्माता टेहरि के राजा । (१९) इमलीतलाघाट—निर्माता गोड़ीय गोस्वामीगण । (२०) बर्द्धमानघाट—निर्माता बर्द्धमान के राजा कीर्त्तिचन्द्र । (२१) वाशेयाघाट—निर्माता उदयपुर के राणा । (२२) शृङ्गार-घाट—निर्माता शृङ्गारवट के गोस्वामीगण । (२३) गङ्गामोहन-घाट—निर्माता भरतपुर राजा सुरजमल की पत्नी गङ्गामोहिनी । (२४) गोविन्दघाट—निर्माता जयपुर के राजा मानसिंह । (२५) हिम्मतबहादुरघाट—निर्माता अनुपगिरि हिम्मत बहादुर । (२६) चीर व चैनघाट—निर्माता अहिल्याबाई । (२७) हनुमानघाट—निर्माता जयपुर के राजा जयसिंह । (२८) भ्रमरघाट—निर्माता जयसिंह । (२९) किशोरीघाट—निर्माता भरतपुर की किशोरी-रानी । (३०) पाण्डाओयालाघाट—निर्माता काशी के राम-प्रसाद चौधरी । (३१) केशीघाट—निर्माता भरतपुर की लक्ष्मी-रानी ॥

वृन्दावन की पल्ली अर्थात् मुहल्लाओं के नाम--(१) ज्ञानगुदरी, (२) गोपेश्वरमहादेवजी, (३) बंशीवट (४) गोपीनाथबाम (५) गोपीनाथबाजार (६) ब्रह्मकुण्ड (७) राधानिवास (८) कशी-घाट (९) राधारमणघेरा (१०) निधुवन (११) पाथरपुरा (१२) नागरगोपीनाथ (१३) गोपीनाथघेरा (१४) नागरगोपाल (१५) चीरघाट (१६) मण्डिदरवाजा (१८) नागरगोविन्दजी (१९) टकशालगली (२०) रामजीद्वार (२१) कण्ठीवालाबाजार (२२) सेवाकुञ्ज (२३) कुञ्जगली (२४) व्यासजी का घेरा (२५) शृङ्गार-वट (२६) रासमण्डल (२७) किशोरपुरा (२८) धोबीवारी-

गली (२९) रङ्गीलाल की गली [३०] सुखनखातागली [३१] पुरानाशहर [३२] लारिवाला गली [३३] गावधूप की गली [३४] गोवर्द्धनदरवाजा [३५] अहीरपाड़ा [३६] दुमाईतपाड़ा [३७] वरओयार मुहल्ला [३८] मदनमोहनजी का घेरा [३९] बिहारीपुरा [४०] पुरोहितवालीगली [४१] मनोपाड़ा [४२] गौतमपाड़ा [४३] अटखम्बा [४४] गोविन्दबाग ४५] लोईबाजार [४६] रेतियाबाजार [४७] वनखण्डिमहादेव [४८] छीपी की गली [४९] रायावालीगली [५०] बुन्देलबाम [५१] मथुरादरवाजा [५२] सवाईजयसिंघघेरा [५३] घीरसमीर [५४] मौनीदास की टाटी [५५] गहवरवन [५६] गोविन्दकुण्ड [५७] राधाबाग ॥

वृन्दावन के साधुओं का अखाड़ा—(१) रामजी निर्व्वाणी, रामानन्दी सम्प्रदायभुक्त, प्रतिष्ठाता मलूकदास ।

(२) श्यामजी निर्व्वाणी—निम्बार्क-संप्रदायभुक्त, प्रतिष्ठाता हरिव्यासजी । यह यमुना के तट में है । ठाकुरजी राधाविहारीजी ।

(३) मालाधारीनिर्मोही—यह निम्बार्कसम्प्रदाय का अखाड़ा है । यमुना किनारे में है । ठाकुर युगलकिशोरजी । इनके प्रतिष्ठाता निरन्तर माला धारण कर जप करते थे इसलिये अखाड़ा का नाम मालाधारी है । बहुतों के मत में-चैतन्यदेव के प्रियपात्र कृष्णदास गुज्जामालीजी इसके प्रतिष्ठाता है ।

(४) झड़िया निर्मोही—रामानन्दी संप्रदाय भुक्त है । गोविन्दमंदिर के उत्तरपार्श्व में साक्षीगोपाल के शून्यमन्दिर का प्रांगण में यह अखाड़ा है । ठाकुरजी हनुमानजी हैं । जो रास्ता के उस पार में एक छोटा मन्दिर में मौजूद हैं ।

(५) राधावल्लभी निर्मोही—सम्प्रदाय राधावल्लभी । प्रतिष्ठाता

हरिवंशगोस्वामी के सन्तान। ठाकुरजी "हितवल्लभ" कृष्णस्वरूप हैं। यह अखाड़ा गोविन्दघाट के ऊपर मौजूद है।

(६) विष्णुस्वामी निर्मोही—प्रतिष्ठाता वल्लभाचार्यजी, ठाकुर विजयविहारीजी (बालगोपालमूर्त्ति) यमुनापुलिन के निकट यह अखाड़ा मौजूद है।

७. महानिर्वाणी निर्मोही—यमुना के किनारे में है। प्रतिष्ठाता मथुरामल। ठाकुर-हुलासविहारी नामक राधाकृष्णमूर्त्ति तथा गोपालमूर्त्ति।

८. रामानन्दी निर्मोही—सम्प्रदाय रामानन्दी, प्रतिष्ठाता हृदयरामबाबाजी, ठाकुर रामसीताजी, यमुनापुलिन ज्ञानगुदरी के पास। यहाँ तुलसीदासजी की पित्तलमूर्त्ति की पूजा होती है। कीलहजी, अगरदासजी, तथा नाभाजी इस में रहते थे।

९. रामजी दिगम्बरी—सम्प्रदाय रामानन्दी, ठाकुर रामसीताजी, यमुनातट पर है।

१०. श्यामजी दिगम्बरी—निम्बार्कसम्प्रदाय भुक्त। ठाकुर-पुलिन विहारीजी, साथ में विष्णुमूर्त्ति भी है। यमुनापुलिन के पास यह अखाड़ा है।

११. बलभद्री—माध्वाचार्य्य सम्प्रदाय भुक्त। प्रतिष्ठाता नित्यानन्दवंशीय शृङ्गारवट के गोस्वामीगण। ठाकुर-बलदेवजी, धीरसमीर के पास है।

१२. निरालम्बी—रामानन्दी सम्प्रदायभुक्त, ठाकुर रामसीताजी, अवस्थान-जमुनातट।

वृन्दावन के प्रसिद्ध पर्व—फूलदोल, फूलबँगला, स्नानयात्रा, रथयात्रा, अन्नकूट, झूलन, जन्माष्टमी, शरत्रास, होरी आदिक है। उन में से झूलन पर्व पर बड़े समारोह के साथ बहु दिवस व्यापी

उत्सव हुआ करता है । चैत्र कृष्णा द्वितीया से लेकर त्रयोदशी पर्य्यन्त दशदिवस व्यापी ब्रह्मोत्सव मेला रंगजी मन्दिर से होती है । वैशाखशुक्ला तृतीया (अक्षयतृतीया) के दिवस विहारीजी का चरण दर्शन होता है । वैशाखी पूर्णिमा के दिवस श्रीराधारमणजी का महाअभिषेक दर्शनीय योग्य है । जेष्ठ कृष्णा द्वितीया में वनविहारलीला के लिये रात्रि में पञ्चकोसी परिक्रमा होती है । कार्त्तिक शुक्ला नवमी में युगल-परिक्रमा मेला है । माघशुक्ला पञ्चमी में साहजी मन्दिर में बसन्तोत्सवलीला, कार्त्तिक पूर्णिमा में महाप्रभु के वृन्दावन आगमन उपलक्ष में नगरपरिक्रमा, कीर्त्तनादि होते हैं ॥

वृन्दावन में महाप्रभु के विग्रह समूह—१. ब्रह्मकुण्ड में—"निताईगौरसीतानाथ" २. कांगालीमहाप्रभु में—"पञ्चतत्वमहाप्रभु" । यह मन्दिर पथरपुरा में है । ३. गोविन्दजी पुरातन मन्दिर में "निताईगौर" । ४. गोविन्दजी नूतनमन्दिर में—"निताईगौर" ५. मदनमोहनपुरातनमन्दिर में—"निताईगौर" ६. मदनमोहन नूतनमन्दिर में—"निताईगौर" ७. इमलीतला में "महाप्रभु" । ८. सिंगारवट में—महाप्रभु । ९. भ्रमरघाट में-वडगौर व अमियनिमाई (वर्त्तमान गोपीनाथ बाजार में) १०. राधारमणजी के रास्ते में श्रीमदनमोहन गोस्वामीजी के स्थान पर—"पञ्चतत्व महाप्रभु" । ११. राधारमणजी के रास्ते में—अद्वैतचरण गोस्वामी जी के स्थान पर "षडभुजमहाप्रभु" । १२. निधुवन के पास गोपालजी के मन्दिर में—"षडभुज महाप्रभु" । १३. निधुवन के सामने में—रासविहारीगोस्वामीजी के पास में—"बालकगौरांग" । आप शचीमाता के गोद में विराजमान हैं । १४. गोपीनाथ पुरातनमन्दिर में—"बंशीधारीमहाप्रभु" । १५. फलाहारी मा गोस्वामिनीकुञ्ज, गोपाल-

बाग में निताईगौर । १६. गोपालबाग में—सौनार गौरांग । १७. पथरपुरा प्राणकृष्णभक्तिमन्दिर में—निताईगौर । १८. लालाबाबू मन्दिर के पास—बंशीधारी महाप्रभु । १९. लालाबाबू मन्दिर के पास महाप्रभु । २०. केशीघाट कुञ्जदास बाबाजीमहाराज के ठौर में प्राणगौरनित्यानन्द । २१. गोपीनाथबजार में–नवगौरांग । २२. गोकुलानन्दजी में—नरोत्तमदासठाकुर महाशय के सेवित—महाप्रभु । २३. दन्तसमाज केशीघाट में–निताई गौर । २४. केशीघाट कुंजकुण्ड के पास गांगोलीकुंज में–निताईगौर । २५. पाथरपुरा गदाधरचैतन्य में "गौरगदाधर" । २६. वनखंडोमहादेव के पास गोपेश्वरगोस्वामी के स्थान पर महाप्रभु के पार्षद मुरारी गुप्त के द्वारा सेवित–निताइगौर । २७. केशीघाट राधिकानाथ प्रभु जी के स्थान पर गिरिधारीमन्दिर मे–नृत्यगौरगोपाल । २८. फौजदारकुंज रेतियाबाजार में–महाप्रभु । २९. दामोदर जी मन्दिर के पास लोटनकुंज में महाप्रभुजी । ३०. पुरानासहर गौड़ीयमठ में–महाप्रभु । ३१. मथुरा रास्ता में आनन्दमयी माता के स्थान पर निताईगौर । ३२. उडियाबाबा का आश्रम में महाप्रभु ॥

वृन्दावन में प्रसिद्ध समाज व समाधि—

(१) आदित्यटीला के निकट मदनमोहनजी प्राचीन मन्दिर के दक्षिणभाग में श्रीसनातनगोस्वामीजी का समाधि स्थान है। यहाँ गोस्वामिग्रन्थ समाधि है। (२) राधादामोदर मन्दिर के पास बगल में श्रीरूपगोस्वामी तथा अन्य बगल में श्रीजीवगोस्वामी एव श्रीकृष्णदास (श्रीजीवशिष्य) गोस्वामिजी का समाधि मन्दिर है। (३) राधारमणमन्दिर के पास श्रीगोपालभट्टगोस्वामी का समाधिमन्दिर है। (४) श्रीगोकुलानन्द में श्रीलोकनाथप्रभु की समाधि है। (५) राधागोपीनाथमन्दिर के पास श्रीमधुपण्डितगोस्वामी की समाधि

है। (६) गोविन्दमन्दिर के ईशानकोणे में सामने चौषठिमहन्त की समाजवाड़ी है। उस में प्रधानतया श्रीरघुनाथभट्टगोस्वामीजी की समाधि है। वहां छे चक्रवर्त्ती तथा अष्ट कविराज की समाधि है। (७) धीरसमीर में श्रीनिवास आचार्य तथा श्रीरामचन्द्रकविराज की समाजवाड़ी है। (८) श्यामसुन्दर मन्दिर के पास श्रीश्यामानन्द प्रभु की समाजवाड़ी है। (९) केशीघाट में श्रीगदाधरपण्डित गोस्वामी के दन्तसमाज है। १० कालिदह में श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीजी की समाधि है। १२ निधुवन में स्वामीहरिदासजी की समाधि है। १२ श्रीराधावल्लभ मन्दिर के पास श्रीहरिवंशगोस्वामीजी का स्थान है। १३ श्रीमदनमोहनमन्दिर के पास सूरदासमदनमोहनजी का स्थान है॥

वृन्दावन में देवियाँ—१ पातालदेवी, (नामान्तर योगमाया) प्राचीनगोविन्द मन्दिर के नैऋतकोणे में है। २ सेवाकुञ्ज के पास अन्नपूर्णादेवी जी। ३ सेवाकुञ्ज के पूर्व्व में पौर्णमासीदेवी हैं।

महादेवजी—गोपीश्वरजी, तथा वनखण्डी महादेवजी प्रसिद्ध हैं॥

कूप—वेणुकूप, सप्तसामुद्रिककूप, गोपकूप, राधाकूप हैं। चौषटिमहन्त समाज के उत्तर में वेणुकूप, गोपीश्वरमहादेव के पास सप्तसामुद्रिककूप, ज्ञानगुदड़ी के पास गोपकूप, विहारवन में राधाकूप हैं॥

वट—अक्षयवट, सिंगारवट, बंशीवट हैं॥

कदम्ब—केलीकदम्ब, चीरकदम्ब, दोलाकदम्ब हैं॥

बलदेव—राजघाट के उत्तर में श्रीकृष्णबलदेव, अटलवन के पूर्व में बलदेवजी, गोपीश्वर मन्दिर के नैऋतकोणे में बलदेवजी, गोविन्दप्राचीनमन्दिर के सम्मुख श्रीकृष्णबलदेवजी, गोविन्दमंदिर

के पूर्व में बलदेवजी, गोपीनाथमन्दिर के वायुकोणे में बलदेवजो एवं पुरानाशहर में बलरामजो हैं ॥

वृन्दावनयात्रापरिक्रमा ग्रन्थ में ब्रजमण्डल की लीलास्थलियों का दर्शन-परिक्रमा करने का यह क्रम कहा गया है—श्रीमदन-मोहनजी, गोपीनाथजो, गोविन्दजो, हरिदेव, केशवविनोद, श्रीराधा-रमण, रसिकबिहारीजो, श्रीबाँकेविहारी, श्रीराधादामोदर, किशोरीजी, कृष्णदेवजो, राधामाधवजो, श्यामसुन्दरजी, माधवीमाधवजी, बलदेवजी, राधाबल्लभजी, सिंगारवट, निताईगौरांग, इमलीतला, चैतन्यनिताई, अद्वैतवट, श्रीसीताद्वैतप्रभु, वृन्दादेवीजो, ब्रह्मकुण्ड, गोपीश्वर, केशीतीर्थ, बंशीवट, चीरघाट, निधुवन, निकुञ्जबन, रासस्थली, धीरसमीर, मुञ्जाटवी, दावानलकुण्ड, प्रस्कन्दन, कालीयह्रद, कदम्बवृक्ष, द्वादशआदित्यटीला, महाप्रभु की बैठक, सूर्य्य-घाट, सूर्यमन्दिर, युगलविहारीजो, गोविन्दघाट, वेणुकूप, वेणु-घाट, श्रीरूपसनातन के अप्रकटस्थान, गोपालभट्टजी के अप्रकट-स्थान, रघुनाथभट्टजी के अप्रकटस्थान, लोकनाथगोस्वामि के अप्र-कटस्थान, श्रीजोवगोस्वामि के अप्रकटस्थान, गोविन्दकुण्ड, भोजन-स्थान (भदरोल), अक्रूरघाट, गोकर्णमहादेव, दशाश्वमेधघाट, सरस्वतिपतनस्थान, मधुपुरी, मथुरादेवीजो, मथुरादेवी की गुफा, आदिविद्या, विष्णु, भूतेश्वर, बलभद्रजो (शेष), जन्मस्थान, केशवजो, विश्रान्तितीर्थ, ध्रुवघाट, महाविद्या, बलदेव, पोतराकुंड, ध्रुवटीला, ऋषिटीला, मधुवन, तालवन, कुमुदवन, शान्तनुकुण्ड, बहुलावन, राधाकुण्ड, श्यामकुण्ड, ललिताकुण्ड, मानसपावनघाट, पंचपाण्डवदर्शन, श्रीरघुनाथगोस्वामी जी का स्थान, कविराज-गोस्वामीजी का स्थान, कुण्डेश्वर, कुसुमसरोवर, नारदकुण्ड, गोवर्द्धन, ग्वालपोखरा, मानसीगंगा, चकलेश्वर, मानसीदेवीजी, ब्रह्मकुण्ड, दानघाटी, चन्द्रसरोवर, संकर्षणकुण्ड, गोविन्दकुण्ड,

अप्सराकुण्ड, श्रीराघवगोस्वामिजी का गुफा, कदम्बखण्डी, श्रीहरजीकुण्ड, गोपालजी का भवन, परमादरा, कृष्णकुण्ड, आदिबद्री, काम्यवन, विमलकुण्ड, यज्ञकुण्ड, सप्तर्षिकुण्ड, धर्म्मकुण्ड, विष्णुसिंहासन, चन्द्रकुण्ड, देवकीकुण्ड, यशोदाकुण्ड, मनकामनाकुण्ड, वलभद्रकुंड, विशाखाकुण्ड, सुरभिकुण्ड, लुकलुकिस्थान, नृसिंहकुण्ड, देवकुण्ड, मधुसूदनकुण्ड, प्रमोदककुण्ड, अर्घकुंड, दामोदरकुण्ड, रोहिणीकुण्ड, मानसागर, गोपालकुंड, गोविन्दकुण्ड, चैतन्यकुण्ड, नैमिश्यकुण्ड, मथुराकुण्ड, हरिद्वारकुण्ड, अवन्तिकुण्ड, त्रिवेणीकुण्ड, कान्तिकुण्ड, दशरथकुंड, सावित्रीकुंड, भोगकुंड, बलदेवकुंड, प्रेमकुंड, परसुरामकुंड, अप्साराकुंड, ब्रह्मकुंड, दावरिकुंड, माधुरिकुंड, केवलकुंड, कृष्णकुंड, सूर्यकुंड, वामनकुंड, चरणचिन्ह, नन्दवट, घर्षणशिला, व्योमासुरगुफा, भोजनस्थली, घर्षणशीला, बलभद्र का भवन, त्रिवेणी, वृषभानुपुर, भानुकुंड, (भानुखोर) गहवरवन, दोहिनिकुंड, दानगढ़, मयूरकुटी, मानगढ़, श्रीराधिकामन्दिर, श्रीदाम-कीर्त्तिदा, वृषभानु के दर्शन, प्रेमसरोवर, विरादेवी, विह्वलकुंड, संकेतवट, संकेत, नन्दीश्वर, यशोदाकुंड, पौर्णमासीकुंड, ललिताकुंड, नृसिंह-नारायणजी, यशोदानन्दनजी, श्रीनन्द-यशोदा-कृष्ण-बलरामजी के दर्शन, खदीरवन, कृष्णकुंड, छत्रवन, कदम्बखण्डि, यावट, जटिलागृह, किशोरीकुंड, चिरकुंड, पाडरगंगा, कोकिलावन, चरणपहाड़ी, चरणचिन्ह, सूर्य्यकुंड, कोटवन, शेषशायी, लक्ष्मीनारायणजी, रामघाट, बलदेवजी, खेलनवन, अक्षयवट, चीरघाट, कदम्बवृक्ष, कात्यायनीदेवी, नन्दघाट, भद्रवन, भाण्डीरवट, बेलवन, मानसरोवर, लोहवन, बलदेवजी, ब्रह्मांडघाट, महावन, जन्मस्थान, नन्दकूप, मथुरानाथ, द्वारकानाथजी, रमणरेती, यमलार्जुनस्थान, गोकुल (गोलोक) बालगोपालजी, यशो-

घाघाट, रावल, पुनः मथुरा-वृन्दावन इस प्रकार परिक्रमा का क्रम है ॥

* इति ब्रजमण्डलदर्शन (परिक्रमा) समाप्त *

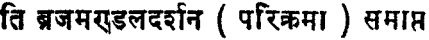

ब्रज में प्रमुख श्रीआचार्य बैठक, रासमण्डल, पर्वत, कदमखण्डि

पृष्ठ सं०—

१५—मथुरा-मणिकर्णिकाघाट पर-श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक।

१७—कीलमठ की गली में स्वामी कीलजो महाराज की गुफा, तुलसी चौतरा में तुलसीथामला, श्रीनाथजी की बैठक। वैरागपुरा में—नारायणदासजी का स्थान।

१८—मधुवन में—श्रीवल्लभाचार्यजो की बैठक।

१९—कुमुदवन में-श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक, गुसाईंजीकी बैठक।

२३—सान्तनुकुंड में—गोसाईजो की बैठक।
बहुलावन में—श्रीगौरांगमहाप्रभु का आगमनस्थान।

२४—श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक।

२९—श्रीराधाकुंड में—श्रीजाह्नवामाता का स्थान, श्रीरघुनाथ-दासगोस्वामीजी का वासस्थान तथा फुन समाधि, श्रीगिरि-राजजी की जिह्वारूपी शिला, श्रीसरकार ठाकुर का कुञ्ज, श्रीजीवगोस्वामीजो की बैठक, श्रीमाधवेन्द्रपुरोजी की बैठक, तमालतला में श्रीमहाप्रभूजो की बैठक, श्रीमहाप्रभुजो का मन्दिर, श्रीवल्लभाचार्य जो की बैठक, श्रीकृष्णदास ब्रह्म-चारी जी का समाधि, श्रीगोपालभट्ट गोस्वामीजी का भजन-कुटीर, श्रीभूगर्भ-गोस्वामो, रघुनाथदास-गोस्वामो तथा

कृष्णदासकविराज गोस्वामी की चिता-समाधि, श्रीदास-गोस्वामीजी की भजनकुटी, कविराज-गोस्वामीजी की भजनकुटी।

२०—आचार्यप्रभु का कुञ्ज, राजेन्द्र-गोस्वामीजी की समाधि, हरिवंश गोस्वामीजी का बैठने का स्थान, श्रीजीवगोस्वामी का भजनकुटीर, श्रीहरिराम व्यासजी का घेरा, कदम-खण्डी।

३२—रासमंडल, श्रीगोविन्द-मन्दिर के पीछे रासमंडल, भानु-खर के दक्षिण में रासमंडल, राधाबल्लभघाट उत्तर में रासमंडल, नन्दिनीघेरा में रासमंडल, कदमखडी।

३५—श्यामकुटी के पास में ग्वालपोखरा में रासस्थली, श्रीमहा-प्रभुजी की बैठक, कुसुमसरोवर में उद्धवजी की बैठक, पास में श्रीनारायणस्वामीजी की समाधि।

३७—जमनावत में—कुम्भनदासजी का निवासस्थान।
श्रीमाधुरीकुंड में—माधुरोजी का भजनस्थान।

३८—परासोलि में—श्रीबल्लभाचार्यजी, गोसाईंजी तथा गोकुल-नाथजी की बैठक।
चन्द्रसरोवर में—रासमंडल।

३०—अन्नकूटस्थान में—श्रीनाथजी का प्रगटस्थान, माधवेन्द्र-पुरीजी का बैठने का स्थान।

४३—पुछरी में—श्रीराघवपंडितगोस्वामीजी की गुफा।

४८—चकलेश्वर में—श्रीबल्लभाचार्यजी की बैठक।

४९-५०—चकलेश्वर में—श्रीसनातनगोस्वामीजी का भजनकुटीर, सिद्ध कृष्णदास बाबा का भजनकुटीर, सिद्धकृष्णदास कर्त्ता बाबा का भजनकुटीर।

५१—नीमगांव में—श्रीनिम्बार्काचार्य का भजनस्थान।

५१—कुञ्जेरा में-श्रीसिद्धबाबा का स्थान, कोनई में कदमखंडी।
५३—गाँठोली में—श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक।
५३—गुलालकुंड में—श्रीमन्महाप्रभु तथा श्रीवल्लभाचार्यजी के बैठने का स्थान।
५५—सेतुकन्दरा-पर्वत (आदिबद्रिनारायण का स्थान)
५६—सांगराशिखर-पर्वत (झुलनस्थान) नीलपर्वत, आनन्दाद्रिपर्वत (घाटी), बल्लभाचार्यजी की बैठक।
५७—धवल-उद्यान-पर्वत, गंधमार्दन पर्वत, केशरपर्वत, निशेधपर्वत, शंखकुटपर्वत, केदारनाथ (पर्वत), चरणपहाड़ी।
५९—कामवन में—खिसलनीशिला, (इन्द्रसेनपर्वत) व्योमासुरगुफा, भोजनथाल, विष्णुचिन्हपाद (पर्वत)
५९—कामवन में—विमलाकुंड तट पर सिद्धबाबा की कुटी।
६२—लुकलुक कन्दरा, चरणपहाड़ी।
६३—कामवन में—बाजनशिला।
६८—सुनेहरा में—सुवर्णाचल (पर्वत), नागाजी का स्थान, कदमखंडी।
६८-६९—ऊँचागाँव में—श्रीनारायणभट्टजी की समाधि, रासमंडल, सखीगिरिपर्वत।
७०—ऊँचागाँव में—अटोरा (पर्वत)
७३—बरसाना में—विष्णुपर्वत, ब्रह्मपर्वत, (ब्रह्माचल)।
७४—ब्रह्माचल-पर्वत में—रासमंडल, हिंडोला, विष्णुपर्वत के नीचे रासमंडल, ब्रह्मपर्वत के ऊपर हिंडोला, रासमंडल।
७५—बिलासगढ़ में—रासमंडल।
७७—मानगढ़ में—हिंडोला, रासमंडल, मयूरकुटी में रासमंडल।
७८—गहबरवन में—श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक, रासमंडल।
८१—प्रेमसरोवर में—रासमंडल, हिंडोला, रासचौंतरा, श्रीवल्ल-

भाचार्यजी और विट्ठलनाथजी की बैठक।

८२—संकेत में—रासचबूतरा, श्रीबिट्ठल जी एवं श्रीगोपालभट्ट-गोस्वामीजी की बैठक, श्रीमान्गौराङ्गमहाप्रभु के बैठने का स्थान, बल्लभाचार्यजी की बैठक, कदमखंडी, पास में पिसाई में कदमखंडी, करेहला में कदमखंडी।

८३—नन्दगाँव में—रुद्र (पर्वत)

८४—पावनसरोवर के तट पर—श्रीसनातन गोस्वामीजी का भजनस्थान, श्रीबल्लभाचार्यजी की बैटक। टेर कदम्ब में—श्रीरूपगोस्वामीजी की भजन-कुटी, रासमंडल-वेदी, कदम-खण्डी।

९०—नन्दगाँव में—रुद्रपर्वत के ऊपर चरणचिन्ह।

९३—यावट में—रासमंडल।

९६—यावट में—सिद्धश्रीजगन्नाथदास बाबा का भजनस्थान, कोकिलावन में रासमंडल।

९८—आँजनोक में—रासमंडल।

९९—करहला में—हिंडोला, श्रीबल्लभाचार्यजी तथा श्रीगोकुल-नाथजी की बैठक, महारासमंडल, पिसाई में रासमंडल।

१०१—ऊमराय में—श्रीलोकनाथ गोस्वामीजी का भजनस्थान।

१०१—रनवाड़ी में—सिद्ध श्रीकृष्णदास बाबाजी महाराज का समाधिस्थान।

१०२—खायरे में—श्रीलोकनाथ-गोस्वामीजी के तथा भूगर्भ गोस्वामी जी के रहने का स्थान।

१०४—बठेन के पास चरणपहाड़ी (पर्वत)

१०६—पैगाँव में—कदमखंडी।

१०७—शेषसाई में—हिंडोला, श्रीबल्लभाचार्यजी की बैठक।

१०७—श्रीरामघाट में—श्रीनित्यानन्द प्रभु का आगमन-स्थान,

बलरामजी के सखा एक अशोक वृक्ष, विहारवन में रास-मंडल।

११०—नन्दघाट में—श्रीजीवगोस्वामीजी का भजनस्थान, वत्स-वन में—श्रीवल्लभाचार्यजी की बैठक।

११२—हरासली में—रासस्थली।

११७—बादगाँव में—श्रीहरिवंश-गोस्वामीजी का जन्मस्थान, गोकुल में श्रीसनातन-गोस्वामीजी का रहने का स्थान।

११८—गोकुल में—श्रीवल्लभाचार्यजी, श्रीविट्ठलनाथजी की बैठक तथा रहने का स्थान है।

११९—नीरङ्गावाद में—कृष्णदास बाबा का रहने का स्थान।

वृन्दावन में आचार्यों का स्थान (वृन्दावन) में द्रष्टव्य।

परिशिष्ट में—

मेरे दो शब्द यह हैं कि मैंने लगभग तीस व पैंतीस प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थ देख कर इसका संग्रह किया था। उन में से श्रीमद्रूपगोस्वामि विरचित श्रीमथुरामाहात्म्य, श्रीनरहरिचक्रवर्त्ती विरचित "भक्तिरत्नाकर", श्रीनारायणभट्टजी विरचित "ब्रज भक्तिविलास" श्रीनन्दकिशोरदासजी विरचित "वृन्दावनलीलामृत" आदिक ग्रन्थ प्रामाणिक तथा सुविख्यात हैं। वर्त्तमान में "श्रीब्रज-मण्डलपरिक्रमा", "वृन्दावनकथा", "वनयात्रा", "ब्रज की झाँकी", "श्रीब्रजदर्पण", "श्रीराधाकुंडेर इतिहास", "ब्रजदर्शन" आदिक ग्रन्थों का आधार भी लिया गया है।

अतः इस ग्रन्थ की रचना में मेरी कोई स्वतन्त्र उपलब्धि नहीं है। आशा है ब्रजप्रेमी महानुभावगण मेरी इस निर्मिति को फलवती बनावें।

सम्वत् २०१२ में जब कि मथुरा में रहता था तब मैंने इसका प्रकाशन करवाया था। परन्तु उस संस्करण की समस्त प्रतियाँ निःशेषित हो गयीं जब कि पुनः प्रकाशन के लिये बाध्य हुआ।

परिशेष में मैं मथुरा भरतपुरदरवाजा निवासी महामना श्रीमान् विद्याधरगोपालजी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने इस का पुनः प्रकाशन में सम्पूर्ण अर्थ सहायता देकर उत्साहित किया। प्रभु से प्रार्थना है कि आप उनको कृपा-भाजन बनावें।

कृष्णदासबाबा

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ —

[१] षट्सन्दर्भ (सानुवाद)

यन्त्रस्थ—

[२] स्वप्नविलासामृत

(सटीक-सानुवाद)

[३] लघुभागवतामृत (सानुवाद)

[४] श्रीश्रीहरिभक्तिविलासः

(सटीक-सानुवाद)

(कृष्णदास बाबा)

हमारे यहाँ गीताप्रेस गोरखपुर, दिल्ली, बनारस, बम्बई, एवं मथुरा की छपी वैद्यक, वेदान्त, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, नाटक, उपन्यास, परीक्षापयोगी, स्त्रीपयोगी, बालोपयोगी पुस्तकें, १०८ उपनिषदें, चारों वेद, अठारहों पुराण, षट् दर्शन, तीनों शतक, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, जादुई-तिलस्मी, विविध व्यापार सम्बन्धी एवं हर प्रकार की पाठ्य पुस्तकें थोक व खेरीज में मिलती हैं।

वी. पी. द्वारा मँगाने का पता—